हिंदी

बालभारती

पाँचवीं कक्षा

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं / २०१४-१५/ह/भाषा/मंजूरी/ड-५०५/७२७ दिनांक :- २३/२/२०१५

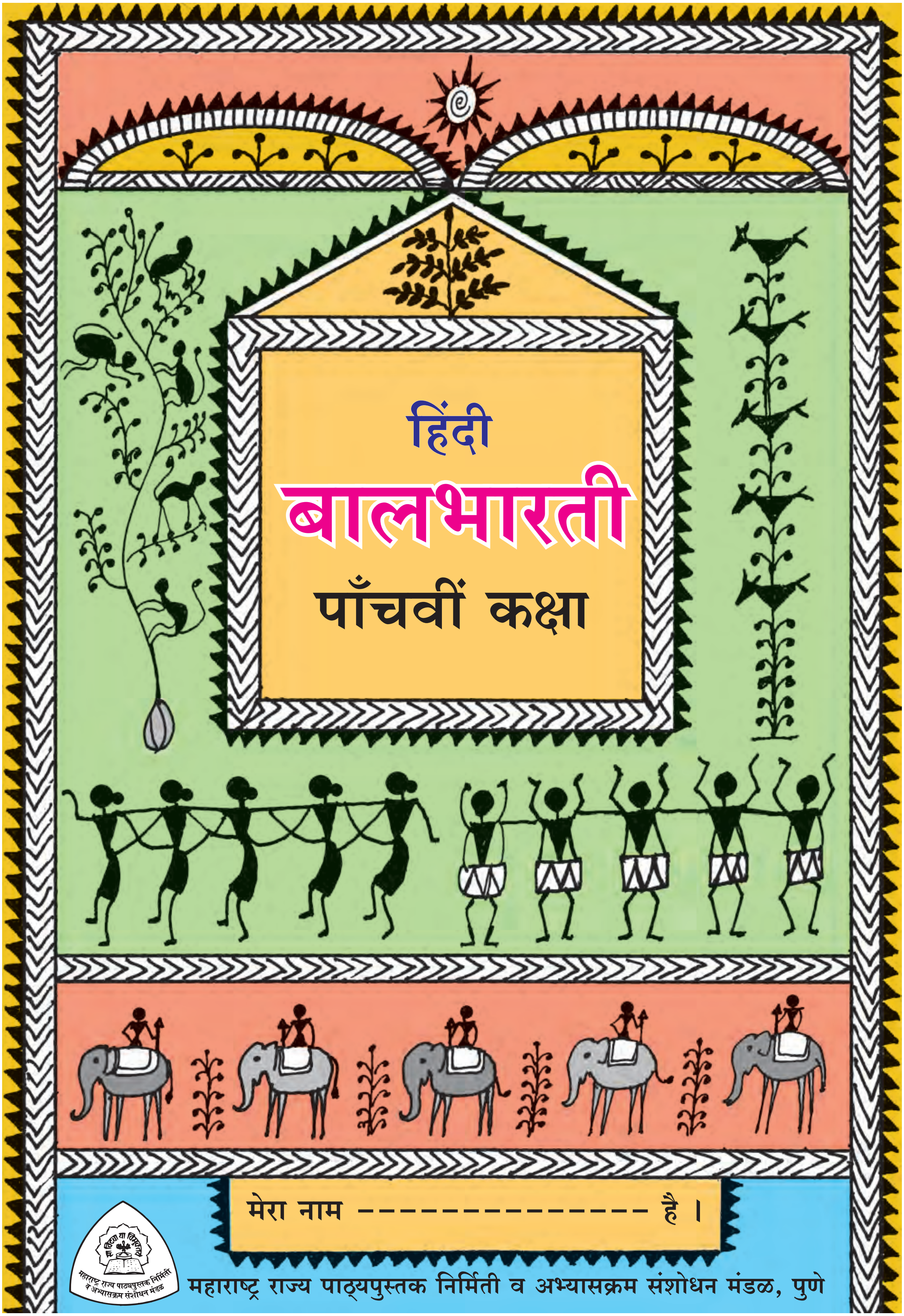

हिंदी

बालभारती

पाँचवीं कक्षा

मेरा नाम -------------- है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

प्रथमावृत्ति : २०१५
दूसरा पुनर्मुद्रण : २०१७

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. चंद्रदेव कवडे, अध्यक्ष
डॉ. हेमचंद्र वैद्‌य, सदस्य
डॉ. साधना शाह, सदस्य
प्रा. मुल्ला मैनोद्‌दीन, सदस्य
श्री रामहित यादव, सदस्य
श्री कौशल पांडेय, सदस्य
श्री रामनयन दुबे, सदस्य
डॉ. अलका पोतदार, सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा कार्यगट

डॉ. रामजी तिवारी
डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
श्री संजय भारद्‌वाज
प्रा. अनुया दळवी
डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र
डॉ. दयानंद तिवारी
श्री अनुराग त्रिपाठी
श्री राजेंद्रप्रसाद तिवारी
श्री उमाकांत त्रिपाठी
प्रा. निशा बाहेकर
डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
डॉ. आशा मिश्रा
श्रीमती मंगला पवार
श्री नरसिंह तिवारी

प्रकाशक

विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक, पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई - ४०००२५

संयोजन
डॉ. सौ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : रेश्मा बर्वे
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, लीना माणकीकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, निर्मिति सहायक

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2015-16
मुद्रक : M/s. Sap Printers, Mumbai.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है। सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।

मुझे अपने देश से प्यार है। अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी। उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

प्रस्तावना

'बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९' और 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप-२००५' दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२' तैयार की गई है । पाठ्यचर्या पर आधारित 'हिंदी बालभारती' कक्षा पाँचवीं की यह पुस्तक 'मंडळ' प्रकाशित कर रहा है । इस पुस्तक को आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव आनंद हो रहा है ।

पाठ्यपुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, संवाद, हास्य-व्यंग्य आदि विविध विधाओं का समावेश करते समय विद्‌यार्थियों की आयु, अभिरुचि, पूर्वानुभव एवं भावविश्व पर विशेष ध्यान दिया गया है । भाषाई कौशल एवं विभिन्न क्षेत्रों के विकास हेतु प्रायः घर, परिसर में घटित होनेवाली घटनाओं/प्रसंगों, स्वच्छता, पर्यावरण, जल संरक्षण आदि आवश्यकताओं/समस्याओं को आधार बनाया गया है । कौशल एवं विभिन्न क्षेत्रों के दृढ़ीकरण हेतु नाविन्यपूर्ण खेल, कृति, स्वाध्याय, उपक्रम तथा विविध प्रकल्प दिए गए हैं । इनके माध्यम से विद्‌यार्थियों की रचनात्मकता को विशेष महत्त्व दिया गया है । पुस्तक को अधिक बालोपयोगी बनाने के लिए इसे चित्रमय एवं विद्‌यार्थी केंद्रित रखा गया है । भाषाई दृष्टि से आवश्यक अन्य विषयों को भी समाविष्ट किया गया है । व्याकरणिक संदर्भों को भाषा प्रयोग एवं खेलों के माध्यम से प्रस्तुत कर रोचक रूप देने का प्रयास किया गया है ।

विद्‌यार्थी की कल्पनाशीलता, सृजनशीलता एवं विचार शक्ति का उचित ढंग से विकास होना चाहिए । इसके लिए जीवनकौशलों पर आधारित चित्रों के साथ-ही-साथ वैविध्यपूर्ण समोपदेशक एवं मनोवैज्ञानिक प्रश्नों को भी समाहित किया गया है । शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर सूचनाएँ दी गई हैं । अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्‍चित ही उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, कार्यगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध विभागों से आमंत्रित प्राथमिक शिक्षकों, विशेषज्ञों द्‌वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचनाओं और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है ।

'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, कार्यगट, समीक्षकों, विशेषज्ञों, चित्रकारों, भाषाविशेषज्ञ डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्‌यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक :- ५ मार्च २०१५
भारतीय सौर १४ फाल्गुन १९३६

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु इसे दो विभागों में विभाजित करते हुए इसका 'सरल से कठिन' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण- संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा प्रयोग एवं व्यावहारिक सृजन पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्यार्थियों के लिए लयात्मक गीत, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों के साथ-साथ चित्रवाचन; पहचानो और चर्चा करो; देखो, बताओ और कृति करो; सुनो, समझो और गाओ; सुनो, समझो और बताओ; देखो, पढ़ो, समझो और बोलो; सुनो, पढ़ो, और लिखो; करो; पढ़ो, समझो और प्रयोग करो; पढ़ो, समझो और कृति करो के साथ-साथ आकलन, मौन-मुखर वाचन, अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन आदि कृतियाँ भी दी गई हैं । सूचनानुसार इनका सतत अभ्यास अनिवार्य है ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने के पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो','पढ़ो' की पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए शब्दार्थ का उपयोग करें । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण कराना आवश्यक है । इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया गया है । विद्यार्थी इनसे सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । इनके माध्यम से मानक शब्दावली का अभ्यास करना सरल हो जाता है । अतः मानक हिंदी का विशेष एवं सतत अभ्यास आवश्यक है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यमापन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है । इससे विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, क्रियात्मक व्याकरण और व्यावहारिक सृजन का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

अनुक्रमणिका

पहली इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
	✻ जन्मदिन	१
१.	प्राकृतिक दृश्य	२,३
२.	पथ मेरा आलोकित कर दो	४
३.	असली गहने	७
४.	कश्मीरा	१०
५.	बात से बात	११
६.	मेरा बचपन	१३
७.	शुभकामना कार्ड	१६
८.	अपनापन	१७
९.	(अ) अक्षरमाला	२०
	(ब) दिमाग चलाओ	२१
१०.	(अ) नाम हमारे	२२
	(ब) संबोधन तुम्हारे	२३
११.	अनोखा यात्री	२४
१२.	पंच परमेश्वर	२७
१३.	बूझो तो जानें	३१
१४.	कला का सम्मान	३२
१५.	कूड़ा-करकट से बिजली	३५
१६.	नाट्यकला	३८
	✻ पुनरावर्तन -१	४१
	✻ पुनरावर्तन -२	४२

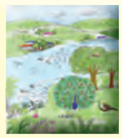

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
	✻ निसर्ग खेल	४३
१.	संगणक	४४
२.	रिश्ता-नाता	४६
३.	बुद्धिमान मेमना	४९
४.	क्या तुम जानते हो ?	५२
५.	खूब पढ़ो - खूब खेलो	५३
६.	दिलों को जोड़ना जरूरी	५५
७.	आओ, आयु बताना सीखें	५८
८.	ताले की कुंजी	५९
९.	(अ) हम ऐसे बने	६२
	(ब) हमसे नाम बनाओ	६३
१०.	(अ) विशेषता हमारी	६४
	(ब) कार्य हमारा	६५
११.	गुनगुनाते चलो	६६
१२.	अद्‌भुत वीरांगना	६९
१३.	साइकिल	७३
१४.	महाराष्ट्र दिवस	७४
१५.	खज्जियार:भारत का स्विट्‌जरलैंड	७७
१६.	स्काउट-गाइड	८१
	✻ पुनरावर्तन-३	८४
	✻ पुनरावर्तन-४	८५
	✻ चित्रकथा	८६
	✻ शब्दार्थ	८७
	✻ मुहावरे-कहावतें, उत्तर	८८

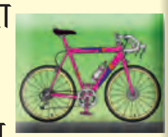

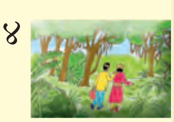

● देखो – पहचानो और चर्चा करो :

जन्मदिन

❑ **अध्यापन संकेत :** चित्रों का निरीक्षण कराएँ । वस्तुओं के नाम तथा व्यक्तियों की कृतियों पर प्रश्न पूछें । चित्रों में दिखाए गए व्यक्तियों का नामकरण विद्‌यार्थियों से कराएँ । उनके आपसी संबंध बताने के लिए कहें । 'जन्मदिन' पर पाँच वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें ।

● देखो, बताओ और कृति करो :

१. प्राकृतिक दृश्य

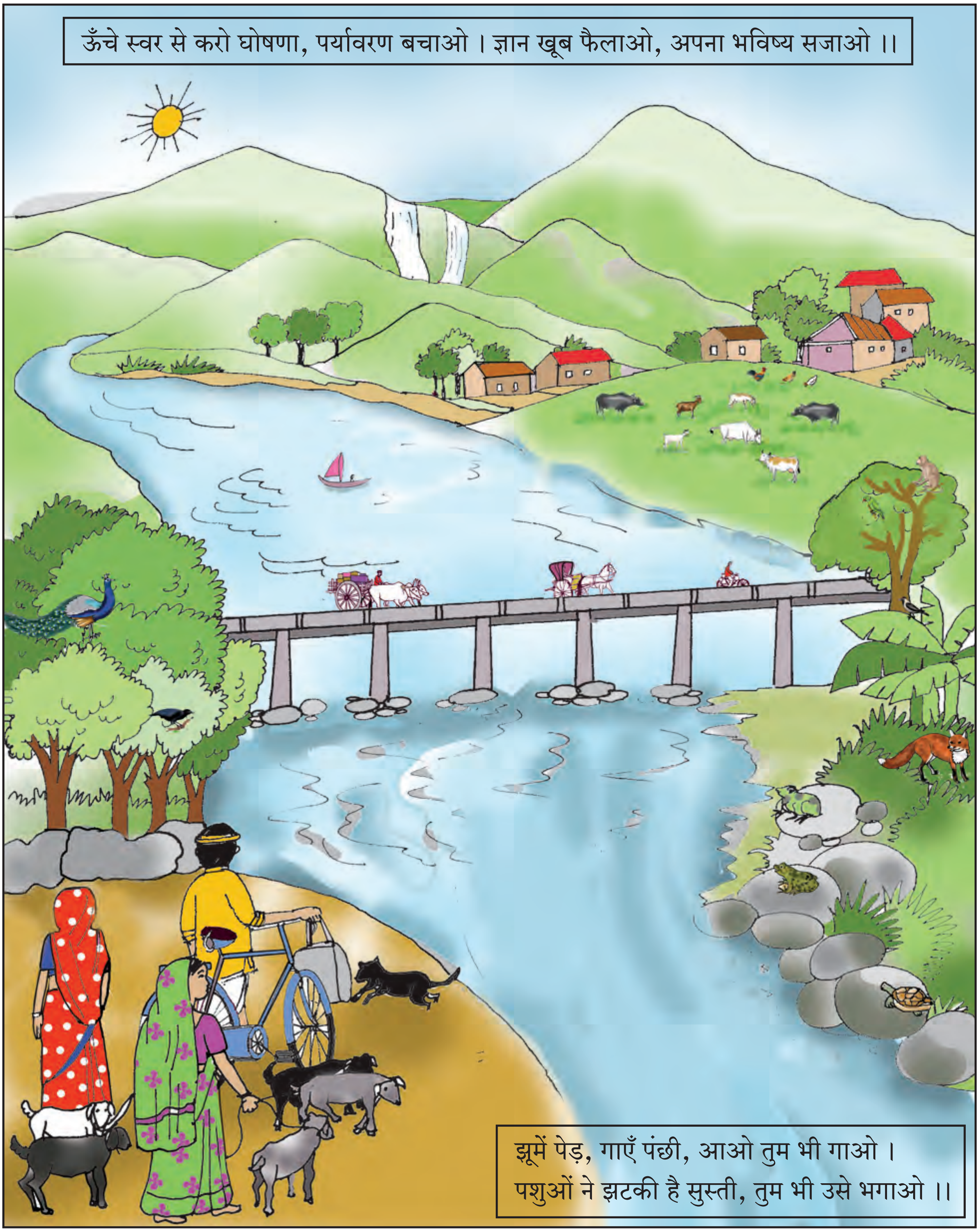

❑ चित्र का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराके पूछें कि इसमें क्या-क्या दिखाई पड़ रहा है । दिखाई देने वाले प्राणियों की बोलियाँ एकल, गुट एवं सामूहिक रूप से बुलवाएँ । विद्‌यार्थियों के दो गुट बनाकर उनसे अन्य प्राणियों और उनकी बोलियाँ बोलने की कृतियाँ कराएँ ।

पहली इकाई

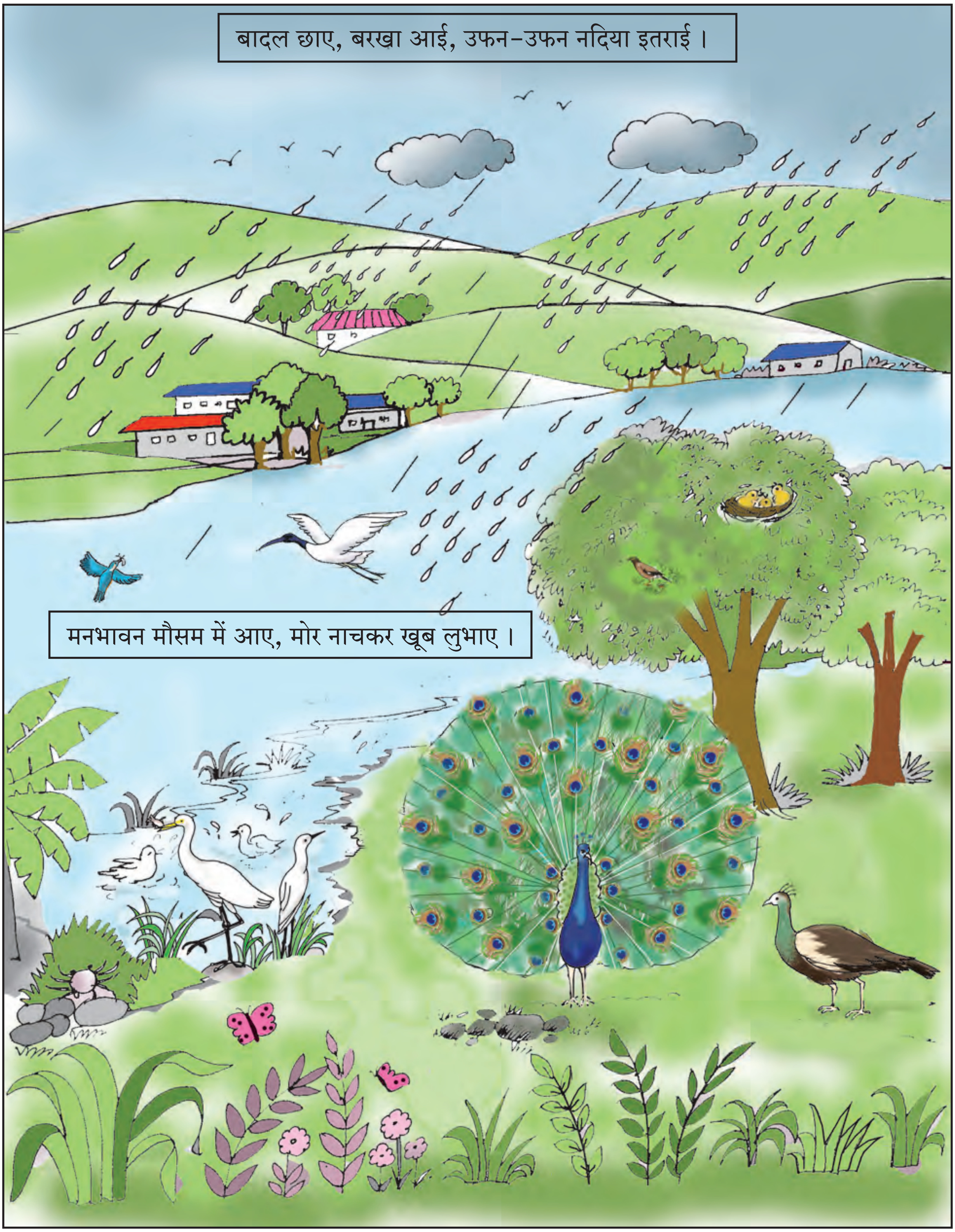

❑ विद्‌यार्थियों को चित्र के बारे में आठ-दस वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें । वर्षा के कारण उनके चारों ओर प्रकृति में कौन-कौन-से परिवर्तन होते हैं, उनसे बताने के लिए कहें । वर्षा में अपने भीगने के अनुभव लिखने के लिए प्रत्येक विद्‌यार्थी को प्रोत्साहित करें ।

● सुनो, समझो और गाओ :

२. पथ मेरा आलोकित कर दो

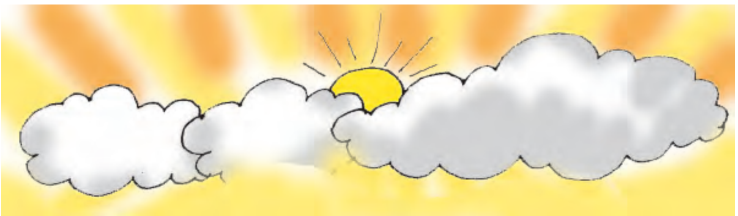

पथ मेरा आलोकित कर दो ।
नवल प्रात की नवल रश्मि से
मेरे उर का तम हर दो ॥

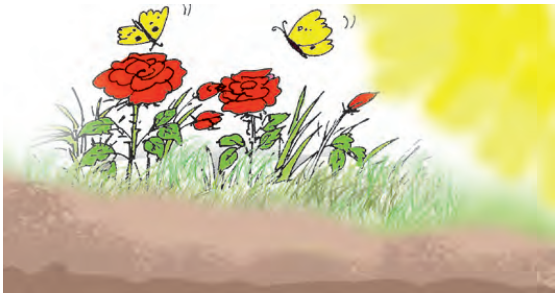

मैं नन्हा-सा पथिक विश्व के
पथ पर चलना सीख रहा हूँ,
मैं नन्हा-सा विहग विश्व के
नभ में उड़ना सीख रहा हूँ ।

पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक
मुझको ऐसे पग दो, पर दो ॥

❑ उचित हाव-भाव, अभिनय के साथ कविता का सस्वर पाठ करें । विद्‍यार्थियों से कविता का अनुकरण पाठ कराएँ । उनसे कविता में समाहित भावों पर चर्चा करें । विद्‍यार्थियों से सामूहिक, गुट में एवं एकल रूप से कविता का साभिनय, सस्वर पाठ कराएँ ।

पंख बहुत नन्हे हैं मेरे
ऊँचा अधिक न उड़ पाता हूँ,
लक्ष्य दूर तक उड़ पाने का
प्राप्त नहीं मैं कर पाता हूँ ।

शक्ति मिले तो उड़ पाऊँ मैं
मेरे हित कुछ ऐसा कर दो ॥

पाया जग से जितना अब तक
और अभी जितना मैं पाऊँ,
मनोकामना है यह मेरी
उससे कहीं अधिक दे पाऊँ ।

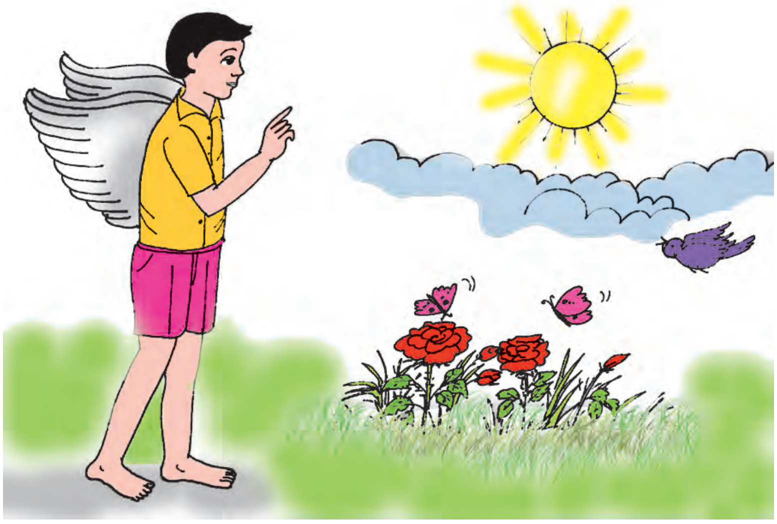

धरती को ही स्वर्ग बनाऊँ
मुझको यह मंगलमय वर दो ॥

– द्‌वारिका प्रसाद माहेश्वरी

❑ विद्यार्थियों से कविता में तुकांत शब्द ढूँढ़ने के लिए कहें । कविता में आए अनुनासिक (ँ) शब्दों का वाचन कराएँ । विश्व, पग, पंख, धरती आदि शब्दों के समानार्थी शब्द बताने के लिए प्रेरित करें । कविता में आए नए शब्दों का वाचन एवं लेखन कराएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक पाठ के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. **त्योहार एवं शुभ अवसर पर गाया जाने वाला अपनी बोली का कोई गीत सुनाओ ।**

२. **एक वाक्य में उत्तर दो :**

(क) विश्व के पथ पर कौन चलना सीख रहा है ?

(ख) नवल रश्मि से क्या अपेक्षा की जा रही है ?

(ग) नन्हे पथिक को कैसे पग चाहिए ?

(घ) नन्हा विहग कहाँ उड़ना सीख रहा है?

(ङ) नन्हा विहग किसे स्वर्ग बनाने का वर माँग रहा है ?

३. **इस कविता के संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों को पढ़ो ।**

४. **कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :**

(च) नवल प्रात की................................ मेरे उर का तम हर दो ।

(छ) मैं नन्हा-सा विहग .... उड़ना सीख रहा हूँ ।

(ज) पंख बहुत नन्हे हैं मेरे .... पाता हूँ ।

(झ) शक्ति मिले ....ऐसा कर दो ।

(ञ) मनोकामना है यह मेरी .... दे पाऊँ ।

५. **निम्नलिखित परिच्छेद में उचित स्थान पर उचित विरामचिह्न (' , ।, ?, " ", !) लगाकर पढ़ो :**

काबुलीवाले ने पूछा बिटिया अब कौन-सी चूड़ियाँ चाहिए मैंने अपनी गुड़िया दिखाकर कहा मेरी गुड़िया के लिए अच्छी सी चूड़ियाँ दे दो उसने मेरी गुड़िया के लिए हरी लाल पीली नीली चूड़ियाँ निकालीं फिर कहा बड़ी सुंदर है तुम्हारी गुड़िया बहुत महँगी होगी नहीं बाबा ये गुड़िया न महँगी है न ही बहुत सस्ती

६. **नीचे दिए गए 'स्वावलंबन' के चित्रों को देखो, समझो और चर्चा करो :**

७. **नदी, समुद्र आदि में लहरें उठती हैं । उन्हें देखकर तुम्हारे मन में कौन-से विचार आते हैं, बताओ ।**

● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. असली गहने

बच्चो ! तुमने अपनी दादी-नानी से बहुत सारी कहानियाँ सुनी होंगी । आओ, आज मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ । कुछ वर्ष पहले की बात है । वीरसिंह नामक गाँव था । उस गाँव के छोटे-से परिवार में एक बालक रहता था । वह बड़ा ही सीधा-सादा, बुद्‌धिमान एवं होनहार था । उसकी माँ का नाम भगवती देवी था । पढ़ाई के साथ-ही-साथ वह दिन-रात अपनी माँ की सेवा में लगा रहता था । माँ भी उसे बहुत प्यार करती थीं । माँ का जीवन सादा जीवन, उच्च विचारवाला था । उन्हें तड़क-भड़क पसंद नहीं थी । उनका रहन-सहन बहुत ही साधारण था ।

एक रोज गाँव में बारात आई । गाँव की अधिकांश औरतें आभूषणों से सुसज्जित होकर बारात देखने गईं मगर उसकी माँ के पास एक भी गहना नहीं था । यही बात उसने एक उत्सव में भी देखी थी । अपनी माँ को वह नए-नए कपड़ों और गहनों से सजी-धजी देखना चाहता था पर क्या करता ! वह तो अभी छोटा था । उसने मन-ही-मन तय कर लिया कि बड़ा होकर वह भी अपनी माँ के लिए गहने जरूर बनवाएगा ।

एक रात भोजन करने के बाद माँ के पैर दबाते समय उसने मन की बात स्पष्ट करने के लिए पूछा, "माँ, तुम्हारे पास अच्छा कपड़ा और कोई गहना नहीं है न ?"

"नहीं तो ! मगर बात क्या है बेटा ?" माँ ने अचरज से पूछा ।

"माँ, मेरी इच्छा है कि तुम भी गाँव की अन्य औरतों की तरह नए कपड़े पहनो और गहनों से सज-धजकर किसी आयोजन में जाया करो ।" फिर बालक ने पुलकित होकर कहा, "माँ, बड़ा होने पर मैं तुम्हारे लिए अच्छे-अच्छे कपड़े लाऊँगा । तुम्हारे लिए गहने भी बनवाऊँगा ।" "अच्छा, तो यह बात है," बेटे के प्यार में माँ का गला भर आया था ।

❑ विद्‌यार्थियों को कहानी सुनाकर मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । उपरोक्त कहानी अपने शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें । विद्‌यार्थी अपने माता-पिता एवं बुजुर्गों से क्या-क्या बातें करते हैं; यह कक्षा में परस्पर चर्चा करने और बताने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें ।

फिर मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, "बेटे, परिश्रम से खूब पढ़ाई करो । बड़े बनो । तुम्हीं मेरे सबसे अच्छे गहने हो । आदमी गहनों और कपड़ों से नहीं बल्कि अपने व्यवहार और कर्म से बड़ा बनता है ।" बालक ने कहा, "पर माँ, मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिए गहने बनवाऊँ ।" माँ कुछ देर सोचती रहीं फिर बोलीं, "बेटा, यदि तुम्हें अपनी माँ से इतना ही प्यार है तो मेरे लिए बस तीन गहने बनवा देना ।"

"बस तीन ही, माँ ! पर कौन-कौन-से ?" बालक ने अधीरता से सवाल किया ।

"बेटे ! इस गाँव में विद्यालय नहीं है । विद्यालय दूर होने के कारण गाँव के बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं । वे प्रगति नहीं कर पाते इसलिए गाँव में एक पाठशाला खुलवा देना । मरीजों के उपचार की कोई व्यवस्था

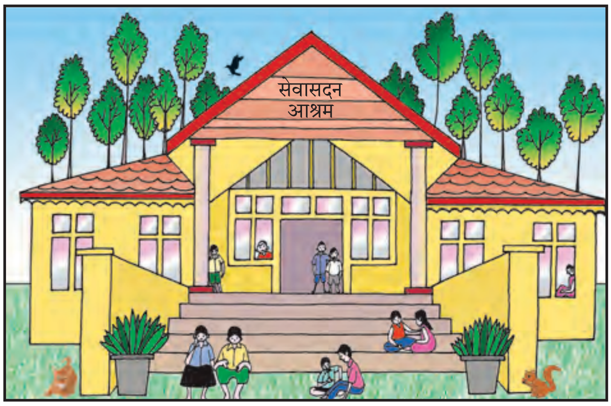

नहीं है यहाँ; उचित उपचार के अभाव में छोटे बच्चे एवं जवान अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं । अतः एक अस्पताल की स्थापना करवाना । गरीब-अनाथ बरसात में भीगते हैं । जाड़े में ठंड से ठिठुरकर अपनी रात गुजारते हैं । उनके रहने-खाने के लिए एक अनाथालय बनवा दो । बस यही तीन असली गहने मेरे लिए बनवा देना बेटा ।" माँ ने बेटे की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा । बेटे की आँखों में आँसू छलक आए । वह सोचने लगा, 'माँ कभी भी अपने लिए कुछ नहीं माँगतीं, हमेशा दूसरों के लिए ही चिंतित रहती हैं ।'

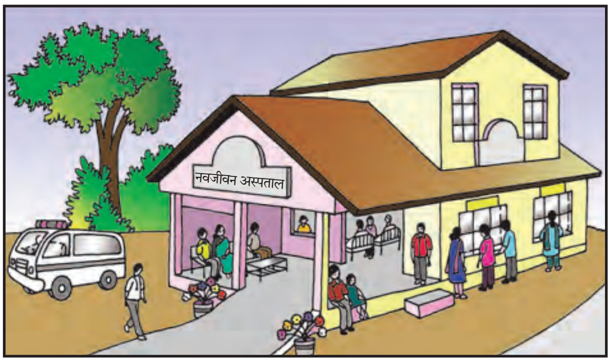

बालक ने माँ के पैर छुए और उसी दिन से माँ की इच्छा पूरी करने में जी-जान से लग गया । आगे चलकर उसने माँ की तीनों इच्छाएँ पूरी की । केवल इतना ही नहीं; उसने देश और समाज की भलाई के अनेक काम किए । जानते हो यह बालक कौन था ? यही बालक आगे चलकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से विख्यात हुआ । विद्यासागर जी ने अपना पूरा जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित कर दिया ।

– दीनदयाल शर्मा, 'दिनेश्वर'

❑ विद्यार्थियों के गुट बनाकर पाठ में आए एवं अन्य उपसर्ग और प्रत्यययुक्त शब्द समझाएँ । शब्दों के पहले 'स','प्रति' आदि उपसर्ग तथा शब्दों के बाद 'ईय', 'दार' आदि प्रत्यय लगाकर शब्द तैयार करवाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए ऐसे शब्दों की सूची बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. अंधविश्वास दूर करने के विषय में सुनी हुई कोई कहानी सुनाओ ।

२. निम्नलिखित भाषाओं से संबंधित राज्यों के नाम दक्षिण से उत्तर दिशा के अनुसार बताओ :

१. पंजाबी   २. तमिळ   ३. उड़िया   ४. कन्नड़   ५. मलयाळम

३. जलचर प्राणियों से संबंधित जानकारी पढ़ो ।

४. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(क) बालक कहाँ रहता था ?

(ख) गाँव की अधिकांश औरतें किस प्रकार सुसज्जित होकर बारात देखने गई थीं ?

(ग) बालक की क्या इच्छा थी ?

(घ) माँ भगवती देवी ने अपने बेटे से कौन-कौन-से गहने बनवाने के लिए कहा ?

(ङ) वह बालक किस नाम से प्रसिद्‌ध हुआ ?

५. मुहावरों और कहावतों के अर्थ बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो :

(च) तिल का ताड़ बनाना ।

(छ) ठहाका लगाना ।

(ज) दंग रह जाना ।

(झ) नाच न जाने आँगन टेढ़ा ।

(ट) नौ नगद न तेरह उधार ।

(ठ) नेकी कर दरिया में डाल ।

६. 'वृद्‌धों एवं विकलांगों के प्रति आस्था' संबंधी नीचे दिए गए चित्रों को समझो और चर्चा करो :

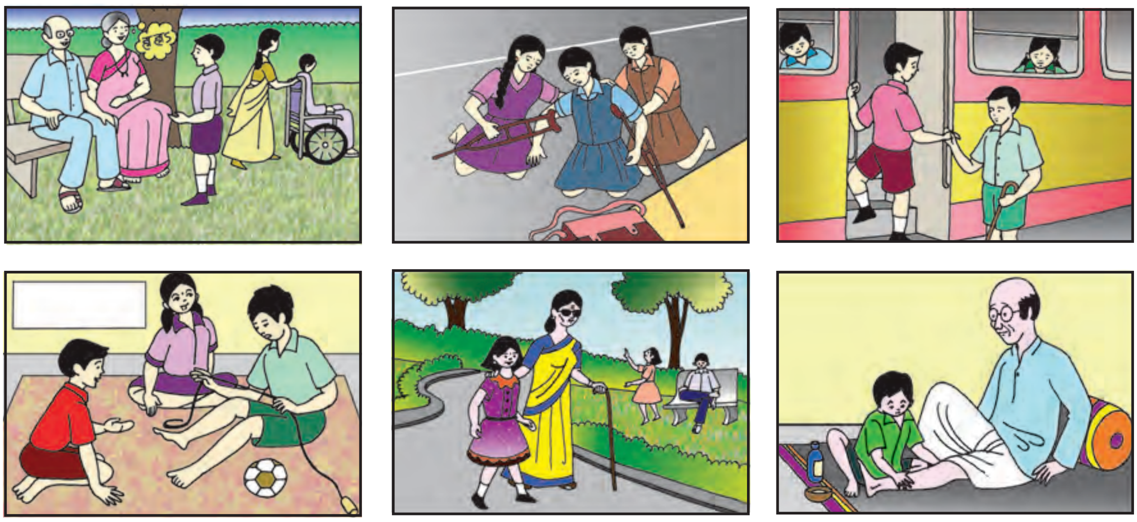

७. तुम्हारे मित्र के बारे में तुम्हारे अभिभावकों की राय अच्छी नहीं है, ऐसे में तुम क्या करोगे, बताओ ।

● अंतर बताओ :

४. कश्मीरा

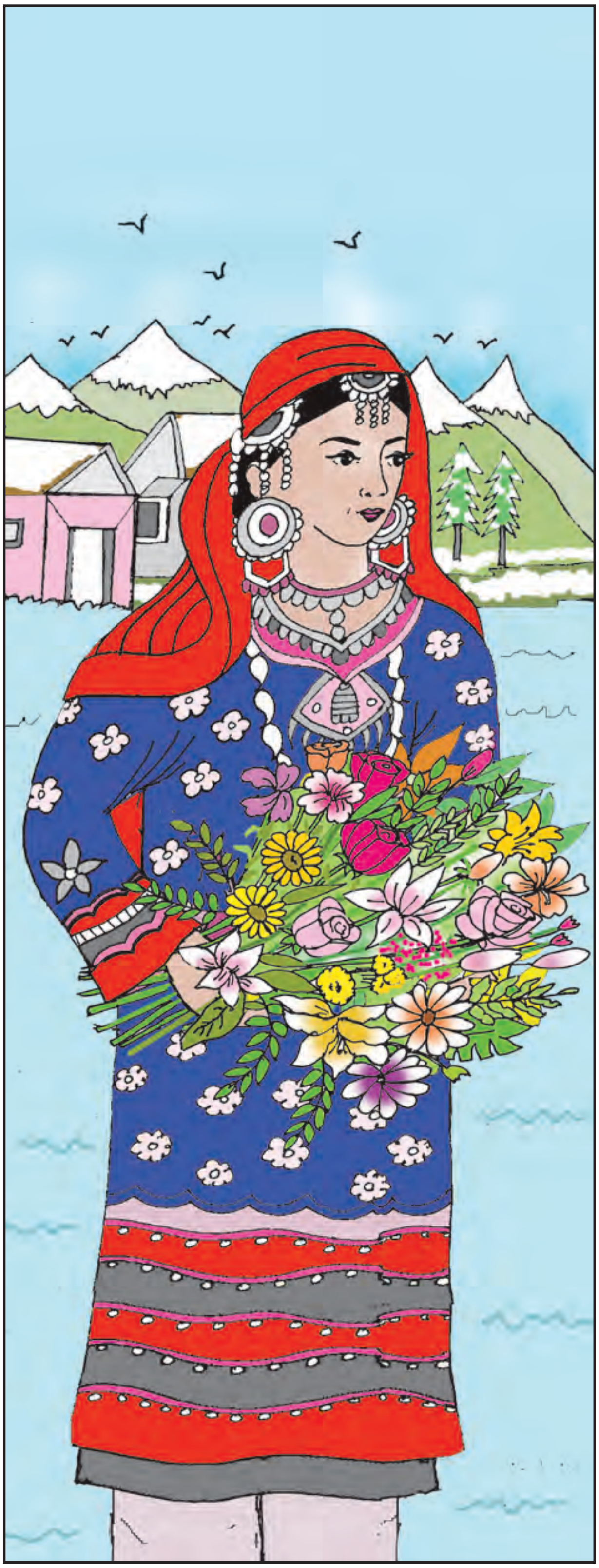

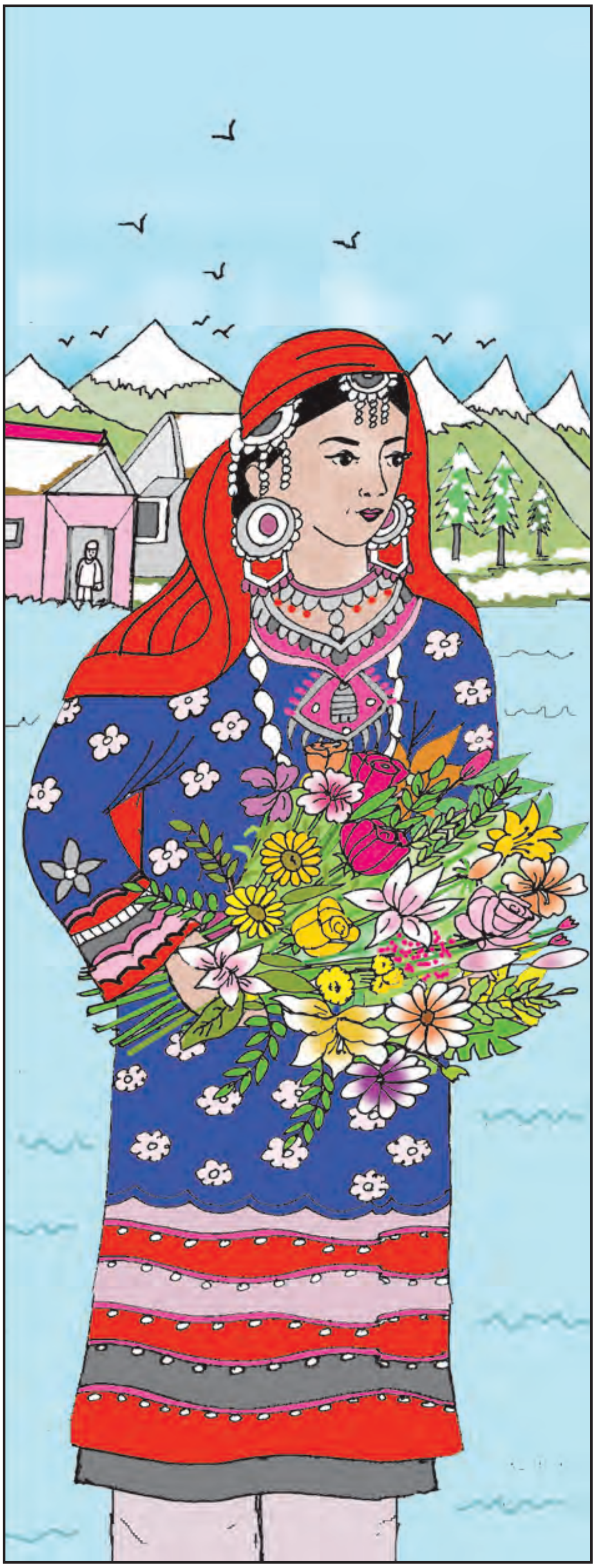

❑ ऊपर के दोनों चित्रों का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । दोनों चित्रों में दस अंतर ढूँढ़कर बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों को भारत के अलग-अलग राज्यों की वेशभूषा और आभूषणों की जानकारी प्राप्त करने तथा उनके चित्रों का संग्रह करने के लिए प्रेरित करें ।

● पढ़ो, समझो और बोलो :

५. बात से बात

(मंच पर सभी पात्र बैठे हैं । प्रश्नोत्तर का क्रम चल रहा है ।)

चाचा जी : बच्चो ! हम तुमसे कुछ सरल और मजेदार प्रश्न पूछते हैं । एक वायुयान इंदौर से मुंबई जाता है तो उसे एक घंटा बीस मिनट लगते हैं । जब मुंबई से इंदौर आता है तब उसे अस्सी मिनट लगते हैं । ऐसा क्यों ? कौन फटाफट उत्तर देगा ?

स्वानंद : चाचा जी, एक घंटा बीस मिनट और अस्सी मिनट दोनों ही बराबर होते हैं । अच्छा, अब मैं एक प्रश्न पूछता हूँ । बताइए कि हमने एक मटका नल के नीचे रखा है । पानी भी आ रहा है; फिर भी क्या कारण है कि मटका नहीं भरता ?

इमाद : इसलिए कि मटके में बड़ा छेद है फिर वह भरेगा कैसे ? अच्छा ! अब यह बताओ कि चौके में रखी हुई वह कौन-सी वस्तु है जो फटने पर आवाज नहीं करती ?

स्वर्णिमा : इसका उत्तर है दूध । चाचा जी, ठीक कहा न ?

चाचा जी : हाँ, बिलकुल ठीक । अच्छा भाई, बताओ कि किन संकेतों को करते रहने से बातचीत आगे बढ़ती है और किन बातों को करते रहने से झगड़ा हो जाता है ?

स्वामी : मैं बताता हूँ । हाँ-हाँ, हूँ-हूँ करते रहने से बातचीत आगे बढ़ती रहती है और तू-तू मैं-मैं अर्थात आरोप-प्रत्यारोप करते रहने से झगड़ा हो जाता है ।

चाचा जी : अच्छा, अब एक और किंतु आखिरी प्रश्न हम पूछ रहे हैं । बताओ, कार्यक्रम के अंत में वह कौन-सा काम है जो दो हाथों के बिना संभव नहीं होता ?

सभी बच्चे : ताली बजाना ।

चाचा जी : बहुत अच्छे ! इसी बात पर सब बच्चे ताली बजाओ ।

❑ पाठ का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से पाठ का वाचन कराएँ । संवादों का नाट्यीकरण कराएँ । उन्हें किसी कार्यक्रम में चुटकुले/हास्य कथा सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें । पिछले सप्ताह किस बात पर वे खूब हँसे थे, उन्हें क्रमशः बताने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. **खेल के बारे में किसी से सुना हुआ कोई प्रेरक अनुभव सुनाओ ।**

२. **दूरदर्शन से लाभ एवं हानि पर समूह में चर्चा करते हुए अपने विचार व्यक्त करो ।**

३. **समाचारपत्र में प्रकाशित मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक विज्ञापन पढ़ो ।**

४. **किसने-किससे कहा, लिखो :**

(क) "हम तुमसे कुछ सरल और मजेदार प्रश्न पूछते हैं ।"

(ख) "अच्छा, अब मैं एक प्रश्न पूछता हूँ ।"

(ग) "एक घंटा बीस मिनट और अस्सी मिनट दोनों बराबर होते हैं ।"

(घ) "इसलिए कि मटके में बड़ा छेद है; फिर वह भरेगा कैसे ?"

(ङ) "आरोप-प्रत्यारोप करते रहने से झगड़ा हो जाता है ।"

५. **नीचे आए शब्दों के संयुक्ताक्षरों में कौन-से वर्ण पूर्ण और कौन-से अपूर्ण हैं, बताओ :**

(च) सर्वोदय, अब्राहम, राष्ट्र, व्यर्थ ।

(छ) वस्तु, अच्छा, प्याज, गुप्त, सत्य ।

(ज) रक्त, गिरफ्तार, डॉक्टर, दफ्तर ।

(झ) गट्ठर, चिह्न, विद्‌यालय ।

(ञ) साम्य, पेन्सिल, मान्यता ।

६. **नीचे दिए गए 'प्रकृति' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **'मोटू-पतलू', 'डोरेमॉन', 'छोटा भीम' धारावाहिकों के कौन-से पात्र तुम्हें अच्छे लगते हैं, क्यों, बताओ ।**

● सुनो, पढ़ो और लिखो :

६. मेरा बचपन

मेरे पिता जी कुटुंबप्रेमी, सत्यप्रिय और बहुत ही उदार थे । वे पोरबंदर के दीवान थे । उनका नाम करमचंद था । वे रिश्वत से दूर भागते थे इसलिए निष्पक्ष न्याय करते थे । वे राज्य के प्रति बड़े वफादार थे । मेरी माँ का नाम पुतलीबाई था । मेरे मन पर यह छाप है कि माता जी साध्वी स्त्री थीं । बड़ी भावुक, पूजा-पाठ के बिना कभी भोजन न करतीं । व्रत-उपवास उनके जीवन के अंग बन गए थे । माता जी व्यवहार कुशल थीं । दरबार की सब बातें जानती थीं । बचपन में माँ मुझे कभी-कभी अपने साथ राजमहल ले जाया करती थीं । ऐसे माता-पिता के यहाँ संवत १९२५ की भादों बदी द्‌वादशी के दिन अर्थात सन १८६९ के अक्तूबर की दूसरी तारीख को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ । बचपन वहीं बीता ।

मुझे राजकोट की ग्राम पाठशाला में पढ़ने भेजा गया । तब मेरी उम्र सात बरस की रही होगी । मेरी गिनती शायद साधारण श्रेणी के विद्‌यार्थियों में रही होगी । सभी शिक्षकों के नाम-धाम मुझे आज भी याद हैं । मैं अपने शिक्षकों का बड़ा आदर करता था । उनके प्रति मेरा आदर कभी घटा नहीं । बड़ों के दोष न देखने का गुण मुझमें स्वाभाविक रूप से था । मैंने समझ रखा था कि बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए । जो वे कहें; वह करना चाहिए । जो करें उसका काजी मुझे नहीं बनना चाहिए । इसी समय के दो प्रसंग सदा मुझे याद रहे हैं । पिता जी की खरीदी हुई एक किताब पर मेरी नजर पड़ी । वह 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक नाटक था । उसे बड़े चाव से पढ़ गया । उन दिनों बाइस्कोप दिखाने वाले

❑ प्रथम परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्‌यार्थियों से सामूहिक एवं एकल मुखर वाचन और सामूहिक मौन वाचन कराएँ । पाठ में समाविष्ट प्रसंगों पर प्रश्न पूछें और उनपर चर्चा करें । विद्‌यार्थियों को उनके बचपन के विशेष अनुभव बताने के लिए प्रेरित करें ।

दरवाजे पर फिरा करते थे । उसमें मैंने श्रवण द्‌वारा अपने माता-पिता को काँवड़ में बिठाकर यात्रा पर ले जाने का चित्र भी देखा । दोनों चीजों का मुझपर गहरा असर पड़ा । मुझे भी श्रवण के समान होना चाहिए, यह भाव मन में उठने लगा । इसी बीच कोई नाटक कंपनी आई । मुझे उसका नाटक देखने की इजाजत मिली । उसमें हरिश्चंद्र की कथा थी । यह नाटक देखने से मेरी तृप्ति नहीं होती थी । हरिश्चंद्र के सपने आया करते । 'हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी सब क्यों नहीं हो जाते ?' यह धुन लगी रहती । मेरे मन में हरिश्चंद्र और श्रवण आज भी जीवित हैं । मैं इनके आधार पर अपने आचरण पर सदैव ध्यान देने लगा । मुझे याद नहीं है कि मैंने कभी किसी शिक्षक या लड़के से झूठ बोला हो । सत्य पर टिके रहना, बड़ों का आदर करना तथा उनके प्रति सेवाभाव के साथ-ही-साथ दीन-दुखियों के दर्द को अपना समझना; आज भी मेरे जीवन का मूल मंत्र बना हुआ है ।

मैंने पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी होता है । मैंने सैर करने की आदत डाल ली । इससे मेरे शरीर में कसाव आ गया । पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं है, पता नहीं यह गलत विचार मेरे मन में कैसे बैठ गया था । इस भूल की सजा आज भी मेरे मन को मिल रही है । दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं अपनी लिखावट पर बहुत पछताता हूँ । बाद में मैंने अपनी लिखावट सुधारने का प्रयत्न किया किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी । बचपन में मुझे खेलों में रुचि नहीं थी । हमारे विद्‌यालय में ऊपर की कक्षा के विद्‌यार्थियों के लिए व्यायाम और क्रिकेट को अनिवार्य कर दिया गया था । मेरा मन इनमें नहीं लगता था । अब मुझे यह लगता है कि खेल और व्यायाम के प्रति मेरी यह अरुचि एक गलती थी । पढ़ने के साथ खेल एवं व्यायाम करना भी बहुत जरूरी है । बाद में समझ में आया कि विद्‌याभ्यास में व्यायाम अर्थात शारीरिक शिक्षा को मानसिक शिक्षा के बराबर ही स्थान होना चाहिए ।

कुछ गलत मित्रों की सोहबत से मुझे 'कश' खींचने का शौक हो गया । पैसा पास न होने के कारण हमने चाचा के पीकर फेंके गए सिगरेट के टुकड़े चुराना शुरू कर दिए । कुछ समय बाद अपनी गलती का अहसास हो गया और सिगरेट पीने की आदत भी जाती रही । बड़े होने पर मुझे कभी सिगरेट पीने की इच्छा ही नहीं हुई । मेरी यह सदैव धारणा रही कि किसी भी नशे की आदत जंगली, गंदी और हानिकारक है । सिगरेट-बीड़ी का इतना जबरदस्त शौक दुनिया में क्यों है, इसे मैं कभी समझ ही नहीं सका । प्रत्येक बाल, युवा, प्रौढ़ को किसी भी नशे से बचना चाहिए ।

– मोहनदास करमचंद गांधी

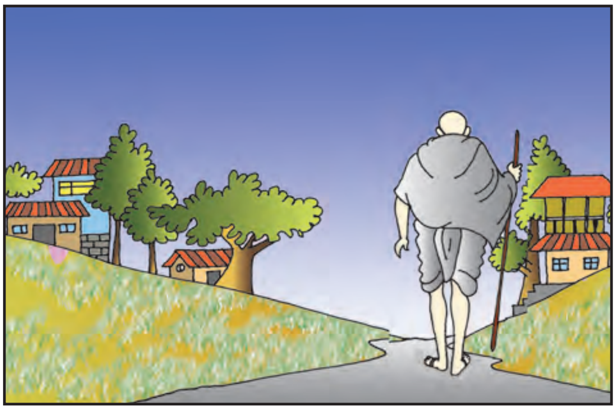

- विद्‌यार्थियों से गांधीजी के जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों के बारे में बताने के लिए कहें । महान विभूतियों की जीवनी पढ़ने हेतु उन्हें प्रेरित करें । पाठ में आए स्थानों, व्यक्तियों, वस्तुओं, अवस्थावाले संज्ञा शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें । इनके स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों पर चर्चा करें । किसी भी लत/नशे से होने वाली हानियों, घातक परिणामों के बारे में विद्‌यार्थियों का मार्गदर्शन करें ।

स्वाध्याय

१. **लोकमान्य टिळक के जीवन का कोई प्रसंग सुनो ।**

२. **व्यायाम/खेल के लाभ पर चर्चा करो ।**

३. **विद्‌यालय के सूचना फलक पर लिखी सूचनाएँ पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

(ख) बचपन में गांधीजी के जीवन पर किन-किन बातों का प्रभाव पड़ा ?

(ग) गांधीजी के जीवन का मूल मंत्र क्या था ?

(घ) गांधीजी ने पढ़ने के साथ खेल और व्यायाम को जरूरी क्यों बताया है ?

(ङ) नशे के बारे में गांधीजी की सदैव कौन-सी धारणा रही ?

५. **मोटे टाइपवाले शब्दों के वचन परिवर्तन करके वाक्य पुनः बोलो :**

(च) **मैं** अपने शिक्षकों का बड़ा आदर करता था ।

(छ) पिता जी द्‌वारा खरीदी हुई **किताबों** पर मेरी नजर पड़ी ।

(ज) हरिश्चंद्र **के सपने** आया करते ।

(झ) **हमारे** विद्‌यालय में ऊपर की कक्षा के विद्‌यार्थियों के लिए व्यायाम अनिवार्य था ।

(ञ) बचपन में **मुझे** खेलों में रुचि नहीं थी ।

६. **'गहन विश्लेषणात्मक विचार' वाले चित्रों को देखो, समझो और चर्चा करो :**

७. **खो-खो खेलते समय तुम्हारा धक्का लगने से साथी खिलाड़ी जोर से गिर पड़ा है, तुम क्या करोगे ?**

● **पढ़ो, समझो और कृति करो :**

७. शुभकामना कार्ड

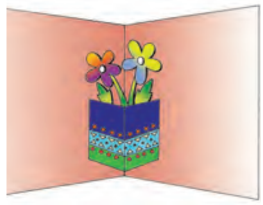

शुभ अवसरों पर हम एक-दूसरे को बधाई देते हैं, अभिनंदन करते हैं । शुभकामना एवं बधाई कार्ड देने की भी परंपरा है । आओ, हम यहाँ शुभकामना कार्ड बनाना सीखें :

सामग्री : ड्रॉइंग पेपर, विभिन्न रंगों के कागज, गोंद, कैंची, टिकलियाँ, रंगीन पेन्सिलें ।

कार्ड बनाने की विधि-

३५ सेमी लंबा एवं १२ सेमी चौड़ा ड्राइंग पेपर काट लो । लंबे भाग को बीच से मोड़ लो । अब १७ सेमी लंबा और ७ सेमी चौड़ा दूसरा ड्राइंग पेपर काट लो । लंबे भाग को बीच से मोड़ लो । मोड़ने के बाद पेपर को एक-एक सेमी भीतर से मोड़ लो । भीतर से मोड़े हुए भाग पर गोंद लगाओ और बड़े फोल्डर के भीतर मोड़ी हुई विपरीत दिशा में चिपका दो । अब बड़े फोल्डर के भीतर दूसरा फोल्डर चिपक गया । रंगीन कागज से फूल और पत्ते काट लो । फूल और पत्तों को छोटे फोल्डर के भीतर चिपका लो । बड़े फोल्डर में शेष जगह पर बधाई/शुभकामना शब्द लिख लो । बाहर से अलग-अलग रंग के फूल और डिजाइन के अगल-बगल में टिकलियाँ चिपका लो । नीचे के भाग पर फूल-पत्तियों का चित्र बनाकर उसमें रंग भर लो ।

अब तुम्हारा बधाई/शुभकामना कार्ड तैयार हो गया है । यह कार्ड उचित अवसर पर अपने मित्र/अपनी सहेली, बड़े/छोटों को दो ।

❑ पाठ का मुखर वाचन कराएँ । 'शुभकामना कार्ड' बनाने की सामग्री एवं प्रक्रिया पर चर्चा करें । पूर्वसूचना द्‌वारा सामग्री मँगवाकर विद्‌यार्थियों से कक्षा में शुभकामना कार्ड बनवाएँ । उनसे अलग-अलग अवसरों से संबंधित शुभकामना लिखने हेतु कहें । बधाई, अभिनंदन एवं स्वागत करने के कौन-से अवसर हो सकते हैं, इनपर चर्चा करें । इन प्रसंगों पर कार्ड बनाकर परिवार के सदस्यों, मित्रों को देने के लिए कहें । कार्ड में सही शब्दों के उचित जगहों पर प्रयोग एवं लेखन हेतु प्रेरित करें । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें ।

● सुनो, समझो और लिखो :

८. अपनापन

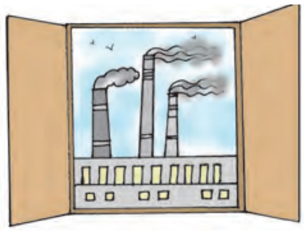

मथुरा के निकट एक गाँव में चारपाई पर रामदास जी पड़े हैं । उम्र लगभग ८५ वर्ष की हो गई होगी । शरीर अशक्त, उठना-बैठना दूभर हो गया है । पड़े-पड़े जोर से बड़बड़ा उठे, "गजा ! गजा ! तू कहाँ है ?" आवाज सुनकर उनका बेटा आजाद पास आकर बोला, "बापू क्या हुआ ? कुछ चाहिए क्या ?" उसने सहारा देकर पिता जी को बिठाया । पीठ सहलाते हुए बोला, "कुछ खाएँगे ?" रामदास की तंद्रा टूटी । बोले, "नहीं रे ! गजा की बहुत याद आ रही है ।"

'गजा' नाम सुनते ही आजाद के स्मृति पटल पर गजानन चाचा और अपने पिता की मित्रता किसी चलचित्र की भाँति घूम गई । गजानन चाचा आते ही बोलते, 'पाढे म्हण बघू' । रामदास एवं गजानन दोनों गहरे मित्र थे । उनका 'ड्यूटी' पर साथ-साथ जाना-आना, घूमना-फिरना, उठना-बैठना सभी बातें एक-एक कर उसे याद आने लगीं । बापू ने अनगिनत बार उसके नामकरण की कहानी सुनाई थी । उसका जन्म '१५ अगस्त' को हुआ था । रामदास बच्चे का नाम 'अगस्त' रखना चाहते थे । गजानन अड़ गए । बोले, "त्याचा जन्म 'आजादी दिन' ला 'झाला आहे' म्हणून नाम आजादच पाहिजे ।" रामदास के मौन रह जाने पर गजानन बोले, "बारसं मी करणार आणि नाव पण मीच ठेवणार ।" माँ बताती थीं कि फिर तो बापू की एक न चली । 'बरही' बड़ी धूमधाम से मनाई गई और नाम भी वही रखा गया जो गजानन चाचा चाहते थे । आस-पड़ोस में ही नहीं चाल में भी 'गजाभाऊ' और 'राम भैया' के किस्से मशहूर थे । होली हो या दिवाली, गणेशोत्सव हो या गोपाळकाला इन दोनों की ही धूम रहती थी । एक-दूसरे के

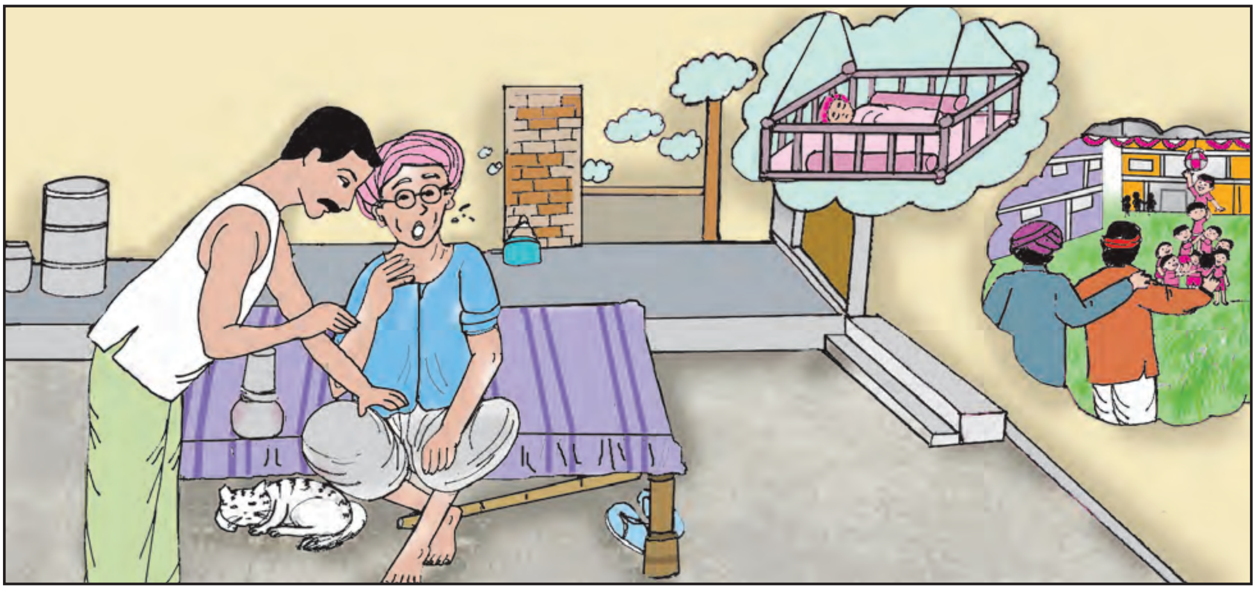

❑ विद्यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । पाठ के पात्रों के बारे में पूछें, चर्चा करें । विद्यार्थियों से उनके शब्दों में कहानी कहलवाएँ । पाठ के शब्दयुग्मों की सूची बनाने के लिए कहें । बोली भाषा के शब्दों के हिंदी मानक रूप लिखने के लिए सूचित करें ।

सुख-दुख में खड़े रहना, तीज-त्योहार में सहभागी होना इनका स्वभाव बन गया था । गजानन के छोटे भाई का विवाह होने वाला था । रामदास ने गजानन से कहा, "वह मेरा भी छोटा 'भाऊ' है । उसके लगन की सारी व्यवस्था 'माझी' ही होगी ।" गजानन उसकी मराठी सुनकर हँस पड़े, बोले, 'लगीन मुंबईत नाही रत्नागिरीला आहे ।' रामदास रत्नागिरी जाने के लिए तैयार हो गया । दस दिन की छुट्टी माँगने के लिए 'सुपरवाइजर' के 'ऑफिस' गया । सुपरवाइजर देखते ही बोल पड़ा, "नो लीव । तुम्हें ड्यूटी पर हजर रहना पड़ेगा । छुट्टी नहीं मिलेगी ।" रामदास बिफर पड़े । बोले, "मैं चला । मेरे भाऊ की शादी है । नौकरी जाए तो जाए ।" बाद में गजानन ने दोनों की सुलह-सपाटी करवाई ।

रामदास और गजानन के घर का कोई भी काम ऐसा न था जिसमें दोनों परिवार सम्मिलित न होते थे । एक-दूसरे का सहयोग करना, हाथ बँटाना, समय-कुसमय में हर ढंग से सहयोग करना उन दोनों के स्वभाव की विशेषता बन गई थी । नौकरी से निवृत्ति के बाद दोनों अपने-अपने गाँव मथुरा और रत्नागिरी चले गए । धीरे-धीरे उनमें संपर्क कम होता गया लेकिन अपनापन वैसा ही था ।

रामदास अचानक बहुत बीमार पड़ गए । उन्हें आज गजाभाऊ की बहुत याद आ रही थी । अचानक दरवाजे पर आवाज सुनाई पड़ी, "राम भैया कुठे आहेस तू ?" रामदास को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ । सामने देखता है कि सिर पर साफा बाँधे गजानन खड़े हैं । रामदास के शरीर में एकाएक उत्साह आ गया । उठकर वह गजाभाऊ से लिपट गए । बहुत देर तक दोनों की आँखों से प्रेमाश्रु झरते रहे । गजानन बोले, "मथुरा आया था । सोचा, यह सुदामा अपने मित्र कृष्ण से मिलता चले ।" दोनों पुनः एक-दूसरे से लिपट गए । रामदास ने गजानन को एक सप्ताह के लिए अपने घर पर ही रोक लिया । नई-पुरानी, सुख-दुख की बातें चलती रहीं । बेटे ने दोनों को मथुरा, वृंदावन के दर्शन करवाए । अंत में बड़े रुँधे गले से रामदास ने गजानन को विदा किया ।

❑ विद्यार्थियों से पाठ में आए मराठी, अंग्रेजी शब्दों, वाक्यों को खोजने के लिए कहें । इनका हिंदी में अनुवाद कराएँ । हिंदी-मराठी में प्रयुक्त होने वाले समोच्चारित समानार्थी एवं भिन्नार्थी शब्दों पर चर्चा करें, सूची बनवाएँ । हिंदी-अंग्रेजी के समोच्चारित शब्द पूछें ।

स्वाध्याय

१. किसी खिलाड़ी के बारे में सुनो ।

२. नीचे दिए गए शब्दों में से असंबद्ध शब्द बताओ :

दरवाजा, खिड़की, रोशनदान, गाय;   आम, दूध, घी, दही;   मक्खन, गेहूँ, चावल, दाल ।

३. जमीन के भीतर निवास करने वाले पाँच प्राणियों के बारे में पढ़ो । उनके चित्र और जानकारी अपनी कृति-पुस्तिका में चिपकाओ ।

४. हिंदी में अनुवाद करके लिखो :

(क) केल्याने होत आहे रे, आधी केलेचि पाहिजे.

(ख) प्रकाशातले तारे तुम्ही अंधारावर रुसा, हसा, मुलांनो हसा.

(ग) Time and tide wait for none.

(घ) Actions speak louder than words.

५. (च) नीचे दिए गए शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखो :

दूर, अशक्त, मौन, मित्रता, दुर्गति, बिछड़ना, छोटा, व्यवस्था, अस्त, अंत, कठिन, प्रकाश ।

(छ) नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो :

उपयोग, पीड़ा, संगति, साधारण, प्रभाव, व्यायाम, काका, शक्ति, चंद्रमा, वृक्ष, पानी ।

६. नीचे दिए गए 'सौंदर्य दृष्टि' संबंधी चित्रों को देखो, समझो और चर्चा करो :

७. कोई परिचित व्यक्ति रो रहा है । उसे देखकर तुम्हें क्या अनुभव होता है, उसके लिए तुम क्या करोगे, बताओ ।

● अनुलेखन करो :

१. (अ) अक्षरमाला

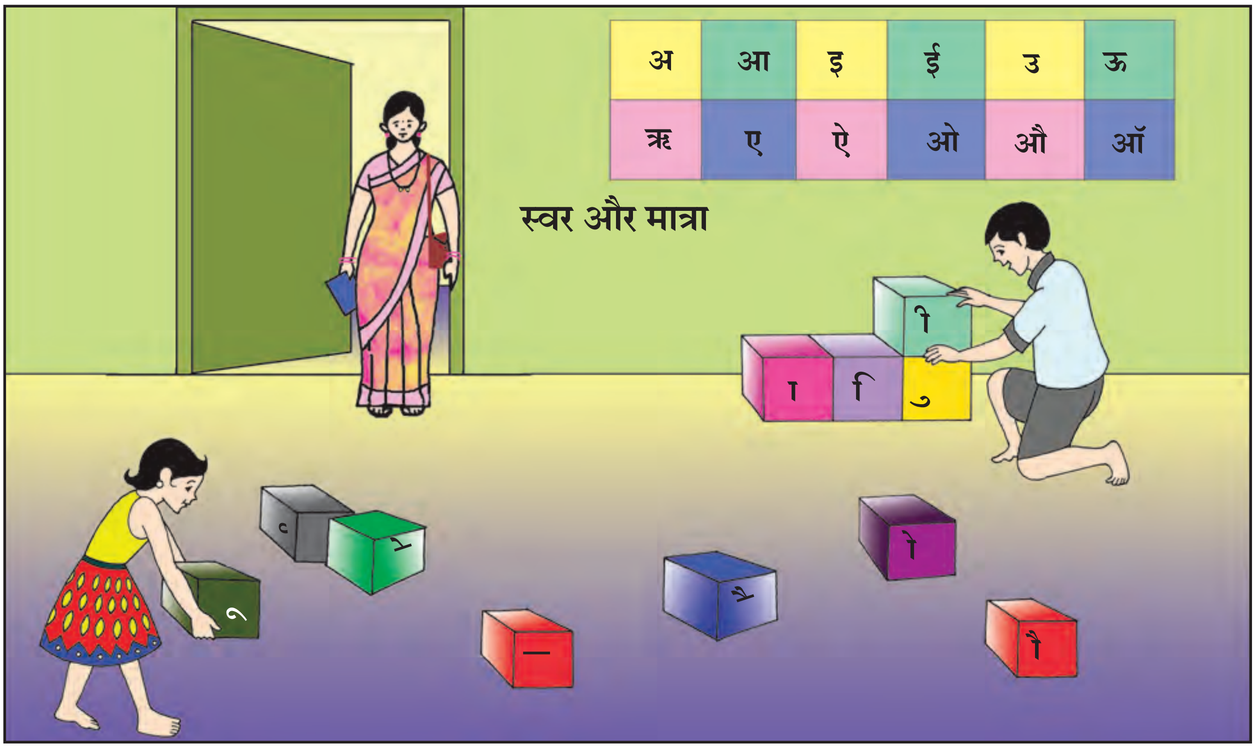

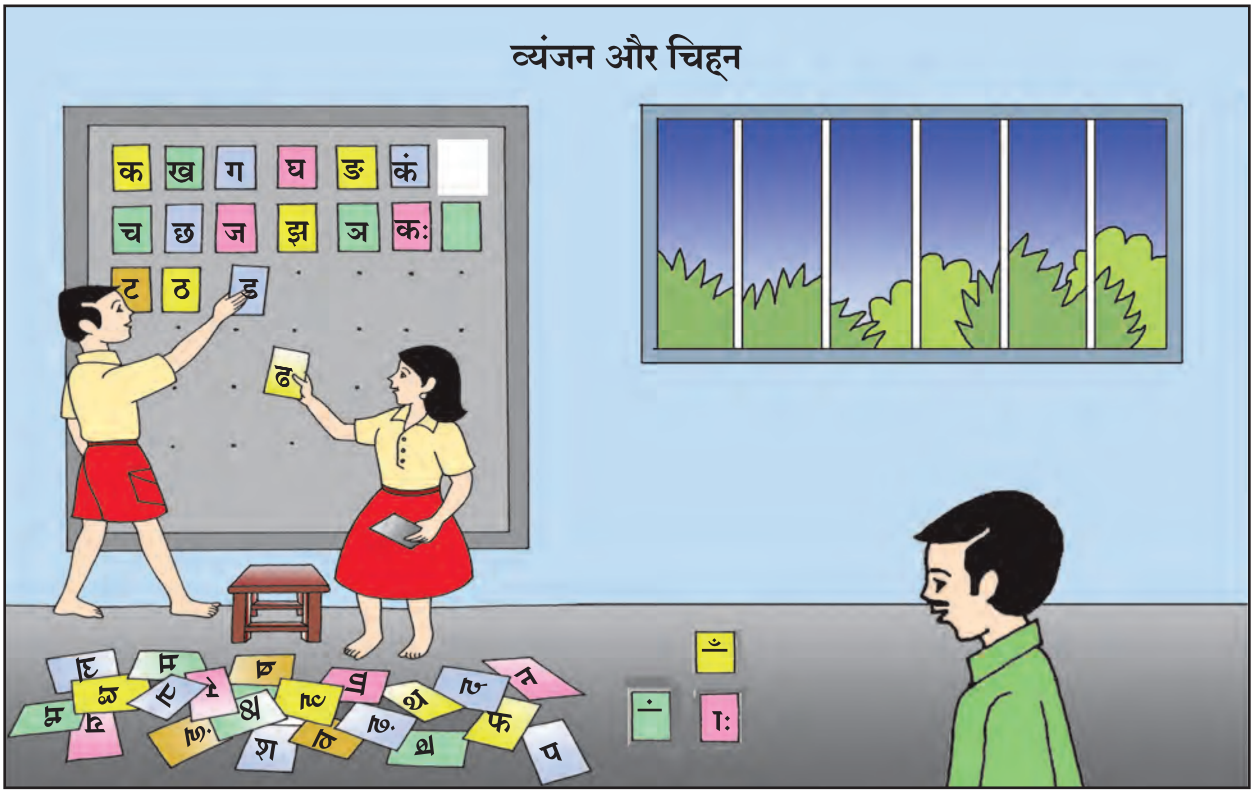

❑ ऊपर दिए गए वर्णों का शुद्ध वाचन करके विद्यार्थियों से शुद्ध अनुवाचन, मुखर वाचन कराएँ। वर्णों के अवयवों के अनुसार लेखन क्रम एवं पद्धति का अभ्यास कराएँ। निरुपयोगी वस्तुओं से स्वर एवं व्यंजन वर्णों के आकार बनवाएँ। ऊपर दिए गए व्यंजनों और विशेष वर्णों का मानक वाचन कराएँ। विद्यार्थियों से स्वर एवं व्यंजनों से पाँच संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों की सूची बनवाएँ।

● **देखो, समझो और पढ़ो :**

(ब) दिमाग चलाओ

१. मिचौली खेलना ।

२.

और

ग्यारह ।

३. अक्ल बड़ी या

४. क्या जाने का स्वाद ।

५. के 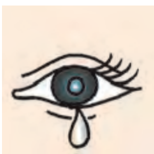 बहाना ।

६.

होना ।

७. होना ।

८. में राम बगल में

९. तले दबाना ।

१०. 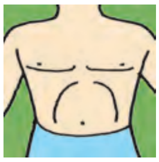 में दौड़ना ।

११. अपने पर मारना ।

१२. का जबाब से देना ।

१३. 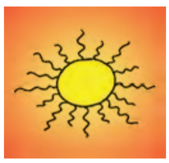 को दिखाना ।

१४. की 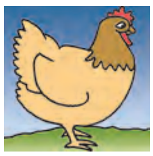 = ।

❑ ऊपर दिए गए चित्रों और शब्दों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराएँ । विद्यार्थियों को चित्रों के आधार पर कहावतें/मुहावरे पहचानकर लिखने के लिए कहें और उनके अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । अन्य मुहावरों एवं कहावतों के चित्र बनवाएँ ।

● पढ़ो, समझो और प्रयोग करो :

१०. (अ) नाम हमारे

१. रेखा द्‍वारा चित्रों और संज्ञाओं की जोड़ियाँ मिलाओ :

२. निम्न वाक्यों में आए संज्ञा शब्दों के चारों ओर पेन्सिल से गोल बनाओ :

(१) मैं विद्‍यार्थी हूँ ।
(२) यह वृक्ष है ।
(३) हिमालय बर्फीला है ।
(४) स्पृहा होशियार है ।
(५) भारत मेरा देश है ।
(६) केरल में सब साक्षर हैं ।
(७) गुलदस्ता सुंदर है ।
(८) श्रोता बैठे हैं ।
(९) शक्कर लेकर आओ ।
(१०) दो लीटर तेल दीजिए ।

❑ विद्‍यार्थियों से पाठ में आए चित्रों और शब्दों का सूक्ष्म निरीक्षण करवाकर मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रयोग के माध्यम से संज्ञा के अध्ययन-अनुभव की प्रक्रिया पूर्ण करें । अन्य संज्ञा शब्दों का अभ्यास कराएँ । ध्यान रहे कि संज्ञा की परिभाषा नहीं बतानी है ।

(ब) संबोधन तुम्हारे

१. रेखा द्‌वारा चित्रों और सर्वनामों की जोड़ियाँ मिलाओ :

२. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित सर्वनाम शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(१) चंद्रनील ने कांचन से कहा, ''........ अभी क्रिकेट खेलने जा रहा हूँ ।'' (हम, मैं)

(२) माँ ने बेटे से पूछा, ''........ कब तक घर वापस आओगे ?'' (तू, तुम, आप)

(३) बेटे ने माँ से कहा, ''........ चिंता मत कीजिए । मैं ..... आ जाऊँगा ।'' (आप, तुम, तू , अपने-आप)

(४) दरवाजे पर घंटी की आवाज सुनकर लता ने कहा, ''........ तो आया है ।'' (कुछ, कोई, कौन)

(५) यह ....कलम है जिसे मैं भूल गया था । (ये, वह, वही, यही)

(६) इस खेल में ...., ... कर रहा है, पता नहीं चलता । (कब, कौन, क्या)

(७) मैंने आज एक कहावत पढ़ी- 'जो .... बोएगा वह .... काटेगा ।' (जैसा, वैसा, ऐसा)

❑ विद्‌यार्थियों से शब्दों और चित्रों का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । शब्दों का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । सार्वनामिक शब्दों के सामान्य प्रयोग का अभ्यास कराएँ । प्रयोगों के आधार पर शब्दों के स्थान, महत्व पर चर्चा करें । सर्वनाम की परिभाषा नहीं बतानी है ।

● पढ़ो, समझो और बताओ :

११. अनोखा यात्री

नौजवान गदहे ने सोचा
चढ़ ली सभी सवारी,
लेकिन नहीं अभी तक आई
‘बाइ पोस्ट’ की बारी ।

सोचा, अबकी शहर घूमने
‘बाइ पोस्ट’ ही जाऊँ,
सारे जंगल में मैं ही तब
बुद्‌धिमान कहलाऊँ ।

तुलवाकर अपने को ढेंचू
डाक टिकट तब लाए,
सीने पर चिपकाकर उनको
फूले नहीं समाए ।

लेकिन डाक बॉक्स था छोटा
औ’ शरीर था भारी,
बुद्‌धि लगाई तब ढेंचू ने
नहीं मान ली हारी ।

❑ उचित आरोह-अवरोह, हाव-भाव के साथ कथागीत का सस्वर पाठ करें । विद्‌यार्थियों से साभिनय, हाव-भाव के साथ अनुपाठ एवं पाठ कराएँ । विद्‌यार्थियों को कविता में निहित कहानी अपने शब्दों में कहने हेतु प्रेरित करें । कविता में आए नए शब्द लिखवाएँ ।

हाथ डाल बक्से में सोचा
पोस्टमैन जब आए,
डाक बॉक्स को खाली करके
मुझको भी ले जाए ।

बंदर, 'पोस्टमैन' बन आया
देख के गदहा वह चिल्लाया,
समझ गदहे को चिट्ठी चोर,
बंदर ने मारा डंडा जोर ।

चोट खाकर चौंका गदहा
देखा नजर उठाकर,
पोस्टमैन था खड़ा सामने
रेंका तब गुस्सा कर ।

किसने तुमको काम दिया यह
देख नहीं क्या पाते,
टिकट लगे हैं सीने पर
औ' ठप्पा कहाँ लगाते ?

–आलोक मेहरोत्रा

❑ 'पत्र की यात्रा' पर चर्चा करें । कविता में आए संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रियाएँ ढूँढ़ने के लिए कहें । विद्‌यार्थियों को चुटकुले, हास्यकविता कहने के लिए प्रेरित करें । तौलने, चौंकने, चिपकाने, नजर उठाने, गुस्सा करने और ठप्पा लगाने का अभिनय करवाएँ ।

स्वाध्याय

१.   **सुना हुआ कोई अन्य कथागीत सुनाओ ।**

२.   **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताओ :**

नौजवान, बुद्धिमान, तुलवाना, गदहा, नजर, गुस्सा, शरीर, ठप्पा, पोस्टमैन, बॉक्स ।

३.   **कविता में आए 'ब', 'ल', 'स', 'आ' वर्ण से आरंभ होने वाले शब्द पढ़ो ।**

४.   **एक वाक्य में उत्तर लिखो :**

(क) गदहे की कौन-सी सवारी की बारी अभी तक नहीं आई थी ?

(ख) गदहे ने डाक टिकट कहाँ चिपकाया था ?

(ग) डाक बॉक्स कैसा था ?

(घ) पोस्टमैन कौन था ?

(ङ) पोस्टमैन ने गदहे को क्या समझा ?

५.   **निम्नलिखित वाक्यों में आए अशुद्ध शब्दों के मानक/शुद्ध रूप लिखो :**

(च) विद्यार्थी विद्यालय में पढते हैं ।

(छ) वाक्यों में विरम चिहन लगाना चाहिये ।

(ज) छमा बड़ों का करतव्य है ।

(झ) पञ्च और पन्थ की पहचान जरुरि है ।

(ञ) शृङ्गार से सदचर बढकर है ।

६.   **नीचे दिए गए तनाव दूर करने संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

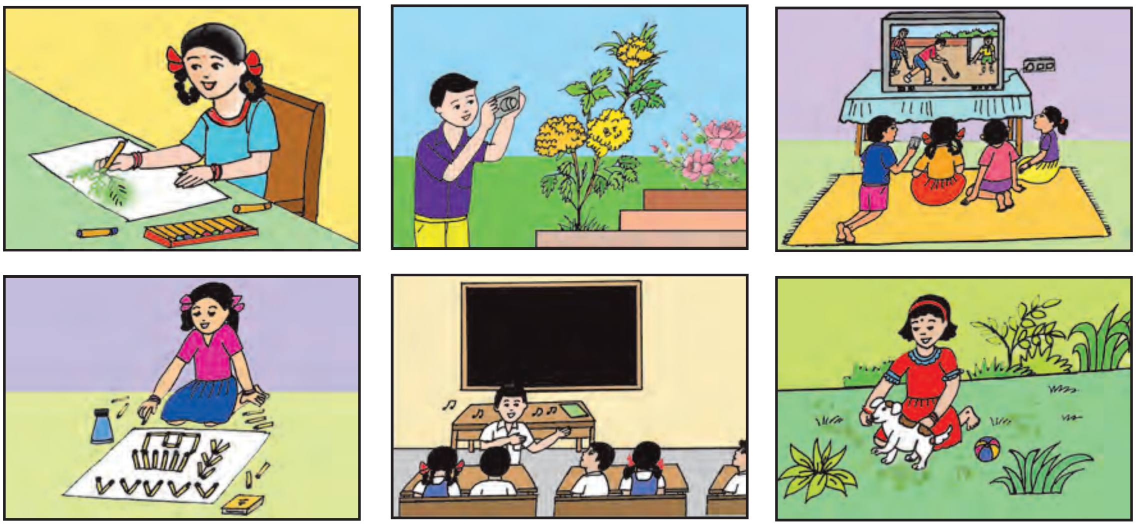

७.   **श्यामपट्ट पर तुम्हें अपनी इच्छा से कुछ लिखना/चित्र बनाना है । तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● पढ़ो, समझो और बोलो :

१२. पंच परमेश्वर

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी । उनकी साझे में खेती होती थी ।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थी । उसके पास कुछ थोड़ी-सी मिलकियत थी । उसके निकट संबंधियों में कोई न था । जुम्मन ने लंबे-चौड़े वादे करके वह मिलकियत अपने नाम लिखवा ली थी । जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री न हुई थी तब तक खालाजान का खूब आदर सत्कार किया गया पर रजिस्ट्री की मुहर ने इन सारी खातिरदारियों पर मानो पाबंदी लगा दी ।

अंत में एक दिन खाला ने जुम्मन से कहा, "बेटा, तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा । तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अपना पका-खा लूँगी ।" जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया, "रुपये क्या यहाँ फलते हैं ?" खाला बिगड़ गई । उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी । जुम्मन बोले, "हाँ जरूर पंचायत करो ।"

संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी । पंच बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे बिनती की, "पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी । जुम्मन ने मुझे ताहयात रोटी-कपड़ा देना कबूल किया, अब रात-दिन का रोना सहा नहीं जाता । मुझे न पेट की रोटी मिलती है, न तन का कपड़ा ।"

रामधन मिश्र बोले, "जुम्मन मियाँ ! किसे पंच बदते हो ?" जुम्मन बोले, "पंचों का हुक्म अल्लाह का हुक्म है । खालाजान जिसे चाहें उसे बदें ।" खाला बोलीं, "और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने दो, अलगू चौधरी को मानते हो ? लो, मैं उन्हीं को पंच बदती हूँ ।" अलगू कन्नी काटने लगे । बोले, "खाला तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है ।"

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । कहानी पर उनसे चर्चा करें । विद्यार्थियों को उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों से पूछें कि वे अपने किन-किन कामों में स्वयं निर्णय लेते हैं । साहु, अंक, पंच, अंबर, पक्षी, पत्र, कर शब्दों के अन्य भिन्नार्थक शब्द लिखवाएँ । यथा- कुल = वंश एवं सब मिलाकर ।

खाला ने गंभीर स्वर से कहा, "बेटा, दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता । पंच के दिल में खुदा बसता है । पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ से निकलती है ।"

अलगू चौधरी पंच हुए । जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाजी मेरी है । अलगू चौधरी को हमेशा कचहरी से काम पड़ता था । अतएव वह पूरा कानूनी आदमी था । उसने जुम्मन से जिरह शुरू की । एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ता था । अंत में अलगू ने फैसला सुनाया, "जुम्मन शेख ! पंचों ने इस मामले पर विचार किया । उन्हें यह नीतिसंगत मालूम होता है कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाए ।" यह फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए । रामधन मिश्र और अन्य पंच कह उठे, "इसका नाम पंचायत है । दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया । दोस्ती, दोस्ती की जगह है, किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है ।"

इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी । वे मिलते-जुलते थे मगर उसी तरह जैसे तलवार से ढाल मिलती है ।

अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है पर बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं होती । जुम्मन को भी बदला लेने का अवसर जल्द ही मिल गया । पिछले साल अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी गोई मोल लाए थे । पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया । अब अकेला बैल किस काम का ? उसका जोड़ बहुत ढूँढ़ा गया पर न मिला । निदान यह सलाह ठहरी कि इसे बेच डालना चाहिए । गाँव में एक समझू साहु थे, वह इक्कागाड़ी हाँकते थे । इस बैल पर उनका मन लहराया, उन्होंने बैल खरीद लिया । एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा । चौधरी को भी जरूरत थी ही, घाटे की परवाह न की । समझू साहु ने नया बैल पाया तो लगे उसे रगेदने । वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे । न चारे की फिक्र थी, न पानी की, बस खेपों से काम था ।

एक दिन चौथी खेप में साहु जी ने दूना बोझा लादा । दिनभर का थका जानवर, पैर उठते न थे ।

❑ विद्‌यार्थियों को उनके सरपंच, नगरसेवक/पार्षद के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें । ग्राम पंचायत की कार्यपद्‌धति पर चर्चा करें । किसी समस्या पर 'वर्ग पंचायत' का प्रात्यक्षिक कराएँ । ग्राम पंचायत की महिला सदस्यों के नाम लिखवाएँ ।

वह धरती पर गिर पड़ा और ऐसा गिरा कि फिर न उठा । देहात का रास्ता बच्चों की आँख की तरह साँझ होते ही बंद हो जाता है । कोई नजर न आया । लाचार बेचारे साहु जी आधी रात तक नींद को बहलाते रहे । पौ फटते ही जो नींद टूटी और कमर पर हाथ रखा तो थैली गायब जिसमें दो-ढाई सौ रुपये बँधे थे । घबराकर इधर-उधर देखा तो कई कनस्तर तेल भी नदारद ।

इस घटना को कई महीने बीत गए । अलगू जब अपने बैल के दाम माँगते तब साहु और सहुआइन दोनों ही झल्लाए हुए कुत्ते की तरह चढ़ बैठते । अलगू चौधरी एक बार गरम पड़े । गाँव के भलेमानस परामर्श देने लगे कि पंचायत कर लो ।

इसके बाद तीसरे दिन उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी । रामधन मिश्र ने कहा, "बोलो चौधरी, किस-किसको पंच बदते हो ?" अलगू ने दीन भाव से कहा, "समझू साहु ही चुन लें ।" समझू खड़े हुए और कड़ककर बोले, "मेरी ओर से जुम्मन शेख ।" जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा धकधक करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो ।

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक, पथ प्रदर्शक बन जाता है । जुम्मन शेख के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ । उसने सोचा; मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ । मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है । पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने शुरू किए । बहुत देर तक दोनों दल अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे । अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया, "अलगू चौधरी और समझू साहु ! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया । यही उचित है कि समझू बैल का पूरा दाम दें । जिस वक्त उन्होंने बैल लिया, उसे कोई बीमारी न थी । अगर उसी समय दाम दे दिए जाते तो आज समझू उसे फेर लेने का आग्रह न करते ।"

अलगू चौधरी फूले न समाए । उठ खड़े हुए और जोर से बोले, "पंच परमेश्वर की जय !" इसके साथ ही चारों ओर से प्रतिध्वनि हुई, "पंच परमेश्वर की जय !" थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले, "भैया ! आज मुझे ज्ञान हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन । न्याय के सिवा उसे कुछ और नहीं सूझता ।" अलगू भी रोने लगे । इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया । मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई ।

– मुंशी प्रेमचंद

❑ पाठ में आए पंचमाक्षर से बने अनुस्वारयुक्त शब्दों को खोजने के लिए कहें । उन शब्दों में किस वर्ग के कौन-से पंचमाक्षर आए हैं, पूछें । विद्‍यार्थियों से पंचमाक्षरयुक्त अन्य शब्द कहलवाएँ/लिखवाएँ । यहाँ विद्‍यार्थियों को पंचमाक्षर के नियम नहीं बताने हैं ।

स्वाध्याय

१. **अपनी पसंद की सुनी हुई कोई एक कहानी सुनाओ ।**

२. **वृक्षारोपण समारोह के बारे में दिए गए मुद्दों के आधार पर आठ से दस वाक्य बताओ :**

कब... दिनांक ... समय ... की गई तैयारी ... कौन-कौन आए ... कैसे मनाया गया ... तुम्हें कैसा लगा ।

३. **उभयचर प्राणियों से संबंधित जानकारी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) किनके बीच गाढ़ी मित्रता थी ?

(ख) खालाजान ने किसे पंच बदा ?

(ग) जुम्मन क्यों सन्नाटे में आ गए ?

(घ) जुम्मन शेख के मन में जिम्मेदारी का भाव कब पैदा हुआ ?

(ङ) अलगू के गले लिपटकर जुम्मन क्या बोले ?

५. **निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञा और सर्वनाम शब्द ढूँढ़कर बताओ :**

माधोपुर गाँव के मेले में शहर जैसी बड़ी भीड़ थी । वहाँ कुछ बच्चे भी घूम रहे थे । उन्होंने दुकानों में पानीपूरी, दही, चने, समोसे, दहीबड़े, लस्सी और कई प्रकार की मिठाइयाँ बिकते हुए देखीं । उन्होंने तय किया कि हम सब अपने-आप खरीददारी करेंगे । कुछ समय बाद जब वे आपस में मिले तो किसने क्या खरीदा है, पूछने लगे । अंत में सभी खुशी-खुशी अपने-अपने घर आ गए ।

६. **नीचे दिए गए 'निर्णय क्षमता' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **तुम्हारे जन्मदिन पर माँ ने तुम्हारे उस मित्र को आमंत्रित किया है, जिससे तुम्हारा मनमुटाव है । उसे सामने पाकर तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी, बताओ ।**

● पढ़ो और समझो :

१३. बूझो तो जानें !

चाहे मुझे इंजिन में डालो,
चाहे सिगड़ी ही सुलगा लो,
जलकर बन जाऊँगा राख,
बस यही है मेरी साख ।

×××

लड़की के हाथों में सुहाती,
लड़के के हाथों में भाती,
सोने-चाँदी से बनती पर,
हीरे पन्ने में भी इठलाती ।

×××

बच्चो मेरी कलाएँ देखो,
घटती-बढ़ती अदाएँ देखो,
दिन में मैं नहीं दिखता,
रात-रात भर जगता रहता ।

लिए हुए मैं नीर हूँ,
कुदरत की मैं देन हूँ,
रोगी के मैं जाता पास,
पीते ही बुझती है प्यास ।

×××

धरती पर हूँ पड़ा हुआ,
पत्थर का हूँ बना हुआ,
पुदीना, धनिया, मिर्ची ले लो,
चटनी मसाले पीस डालो ।

×××

बाँध गले में डोर मैं अपने,
घूम-घूम कर आती हूँ,
आसमान में मँड़राती हूँ,
चिड़ियों संग लहराती हूँ ।

-भारती श्रीवास्तव

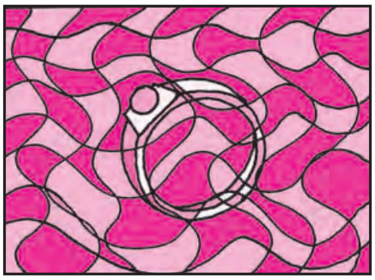

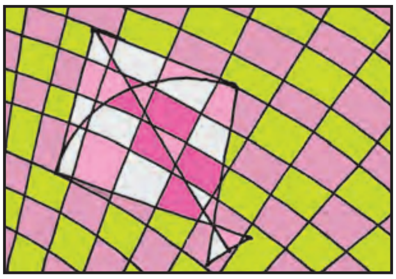

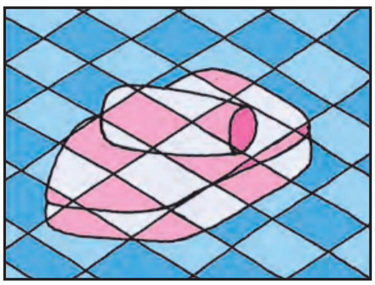

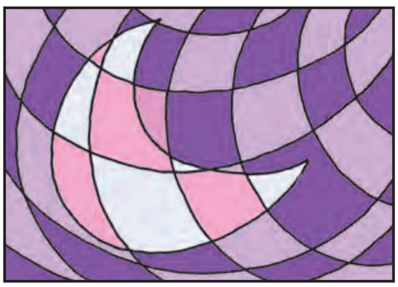

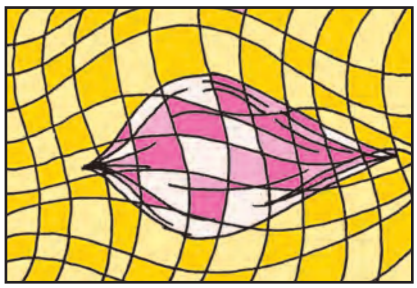

❑ उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ पहेलियों का सस्वर वाचन करें । मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । विद्यार्थियों से पहेलियाँ पूछें । अन्य पहेलियाँ बूझने के लिए भी प्रेरित करें । रिक्त स्थानों में उत्तर लिखने के लिए कहें । पहेलियों का संग्रह कराएँ ।

● पढ़ो और चर्चा करो :

१४. कला का सम्मान

प्रथम दृश्य

(कुंतल घर में खिलौने रँग रही है ।)

माँ : बेटी कुंतल, थोड़ी देर के लिए अपना काम रोककर दूध तो पी लो ।

कुंतल : अभी नहीं माँ, मुझे ये खिलौने रँग लेने दो ।

पिता जी : बेटा इतनी जल्दी क्या है, बाद में रँग लेना ।

कुंतल : नहीं बापू, आज ही ये सारे खिलौने विद्‌यालय ले जाना है । विद्‌यालय में कला प्रदर्शनी है ।

बुआ जी : तो क्या विद्‌यालय के सारे बच्चे खिलौने बनाकर लाएँगे ?

कुंतल : नहीं बुआ जी, कोई चित्र बनाकर लाएगा, कोई कपड़े से फूल-पत्तियाँ बनाकर लाएगा ।

माँ : हमारे घर में मिट्‌टी के बर्तनों का व्यवसाय होने से कुंतल ने खिलौने बनाना सीख लिया ।

कुंतल : लाओ माँ अब दूध दे दो । ये देखो मेरे सारे खिलौने तैयार हैं ।

पिता जी : बेटी बहुत सुंदर बने हैं खिलौने ।

बुआ जी : देखना अपनी कुंतल की बहुत प्रशंसा होगी ।

पिता जी : वैसे तुम्हारे बंडू चाचा का बड़ा बेटा पंचम भी बढ़िया कलाकार है ।

(पड़ोस के बच्चों का प्रवेश ।)

गंधार : कुंतल तैयार हो क्या स्कूल चलने के लिए ?

डिंपल : वह शायद भीतर के कमरे में तैयार हो रही है ।

पांडुरंग : चाचा जी नमस्ते ! अब कैसी तबीयत है आपकी ?

पिता जी : नमस्ते बेटा, दवाई ले रहा हूँ । पहले से काफी अच्छी तबीयत है ।

डिंपल : ये लो कुंतल आ गई । चलो चलें, देर न हो जाए ।

कुंतल : माँ-बापू आप लोग भी आना हमारे विद्‌यालय में ।

गंधार : हाँ, बहुत अच्छी कलाकारी देखने को मिलेगी ।

माँ : जरूर बेटा ! हम दस बजे तक विद्‌यालय पहुँच जाएँगे ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ ।

दूसरा दृश्य

(स्कूल के प्रांगण में मेजों पर चित्र, खिलौने आदि सजाकर रखे हैं ।)

टीचर जी : जिन विद्‌यार्थियों की जो भी कलाकारी है वे उन वस्तुओं वाली मेज के पीछे खड़े हो जाएँ ।

पंचम : पांडुरंग मेरे चित्र और तुम्हारे कपड़े के फूल एक ही मेज पर रखे हैं ।

डिंपल : टीचर जी क्या मैं अपनी सहेली कुंतल के साथ खड़ी हो जाऊँ ?

टीचर जी : हाँ, हाँ खड़ी हो जाओ । देखो बच्चो ! भीड़ बढ़ रही है । अपनी जगह मत छोड़ना ।

तीसरा दृश्य

(कुंतल के घर में चर्चा चल रही है ।)

माँ : बेटा कुंतल, सारे बच्चों ने सुंदर काम किया था बहुत अच्छी लगी प्रदर्शनी ।

पिता जी : पुरस्कार किसी को भी मिले पर सारे कलाकारों का सम्मान होना चाहिए ।

माँ : आज आपने बहुत अच्छी बात की है । चलिए हम कंगना टीचर को ये बात बताएँ ।

(अचानक कंगना टीचर का प्रवेश ।)

माँ : अरे टीचर जी तो यहीं आ गईं । नमस्ते ! टीचर जी ।

टीचर जी : मुझसे रहा नहीं गया । मैं आपको यह बताने आई हूँ कि कुंतल के खिलौने सबने बहुत पंसद किए हैं । उसे प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया है ।

पिता जी : हमारी बेटी को पुरस्कार मिला है ये खुशी की बात है पर हम चाहते हैं कि सारे कलाकार बच्चों का सम्मान हो ।

टीचर जी : वाह ! ये तो बहुत अच्छी बात है । मैं प्रधानाचार्य जी से बात करूँगी ।

(अगले दिन पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में सारे कलाकार बच्चों का सम्मान किया गया ।)

❑ विद्‌यार्थियों के गुट बनाकर एकांकी का नाट्‌यीकरण कराएँ । अब तक पढ़े संवाद/नाटकों के बारें में विद्‌यार्थियों से पूछें ।‘कलाकार बच्चों का सम्मान’ विषय पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों से पाठ में आए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया की सूची बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **परिवार के किसी बुजुर्ग का उनसे सुना हुआ एक अनुभव सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित वाक्यों में लिंग बदलकर वाक्य पुन: बोलो :**

(क) बैल खूँटे से बँधा है ।

(ख) मुक्केबाज अपना खेल प्रदर्शित कर रही है ।

(ग) हाथी जंगल में रहता है ।

(घ) सब्जीवाली ठेले पर सब्जी बेच रही है ।

(ङ) बिलाव दूध पी रहा है ।

३. **'लड़का-लड़की एक समान' विषय पर समूह में चर्चा करते हुए अपने विचार व्यक्त करो ।**

४. **किसने किससे कहा, लिखो :**

(च) "अभी नहीं माँ, मुझे ये खिलौने रँग लेने दो ।"

(छ) "विद्‌यालय में कला प्रदर्शनी है ।"

(ज) "देखना अपनी कुंतल की बहुत प्रशंसा होगी ।"

(झ) "वह शायद भीतर के कमरे में तैयार हो रही है ।"

(ञ) "टीचर जी क्या मैं अपनी सहेली कुंतल के साथ खड़ी हो जाऊँ ?"

५. **अपनी कक्षा में स्वच्छता हेतु श्रमदान करना है अत: अनुमति प्राप्त करने के लिए प्रधानाध्यापक को पत्र लिखो ।**

६. **नीचे दिए गए 'समानुभूति' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

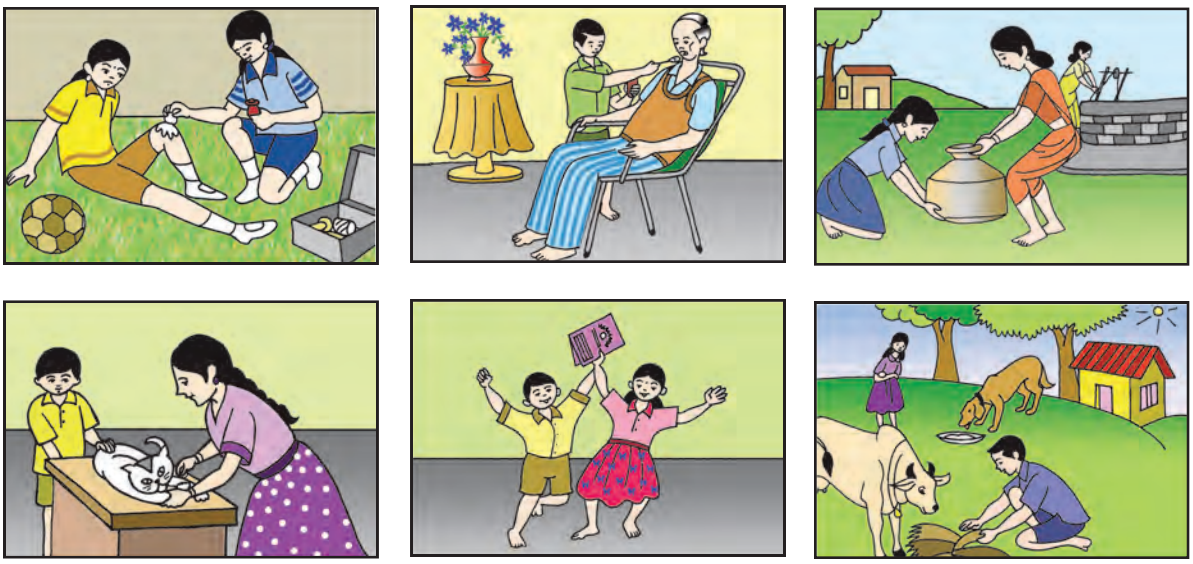

७. **तुम घर में अकेले हो । बाहर से दरवाजा बंद हो गया है । तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

१५. कूड़ा-करकट से बिजली

विश्व में ऊर्जा का अकाल चल रहा है । हमारे यहाँ इसका संकट और भी अधिक है । इसका कारण यह है कि अपने देश में न केवल तेल से प्राप्त ऊर्जा का अभाव है अपितु विद्‌युत शक्ति की कमी भी है । हमारी जरूरतों के लिए जितनी बिजली चाहिए उतनी यहाँ पैदा नहीं हो पाती । यद्‌यपि देश में अनेक बिजलीघर हैं पर बिजली उत्पादन की कमी है । बिजली संकट का एक कारण तो यह है पर अभाव के अन्य कई कारण भी रहे हैं, जैसे- बायलरों, टरबाइनों आदि का लापरवाही या किसी त्रुटि के कारण गड़बड़ा जाना, हड़तालों के कारण उत्पादन कार्य ठप होना आदि । एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे यहाँ जितनी बिजली पैदा होती है उसके अनुपात से कहीं अधिक ट्रान्समिशन की गड़बड़ी में नष्ट हो जाती है ।

बिजली तैयार करने के प्रमुख स्रोत हैं-ताप,पानी और अणु । तीनों ही स्रोतों से हमारे यहाँ बिजली तैयार की जाती है । हमारी जरूरत को तारापुर के परमाणु ऊर्जा केंद्र, भाखड़ा नंगल जैसे बड़े जल विद्‌युत केंद्र और बोकारो थर्मल पावर स्टेशन जैसे ताप बिजली-घर कई-कई संख्या में होने के बावजूद पूरा नहीं कर पाते । अतः बिजली किस तरह ज्यादा-से-ज्यादा पैदा की जाए, इसपर गहराई से विचार करना स्वाभाविक हो गया है ।

कूड़ा-करकट से बिजली : कम लागत, अधिक लाभ- ताप एवं पनबिजली की दारुण स्थिति से उबरने का एक सुविधाजनक तथा कम खर्चीला उपाय यह है कि कूड़ा-करकट से बिजली तैयार की जाए । यह है भी कितनी अच्छी बात कि कूड़ा-करकट की गंदगी से बचाव का बचाव और फायदे का फायदा, यानी बिजली प्राप्ति । महानगरों में कूड़ा-करकट का कितना बड़ा भंडार होता है, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि अकेले मुंबई में प्रतिदिन कई हजार टन कूड़े-कचरे का ढेर लग जाता है । इस ढेर को नष्ट

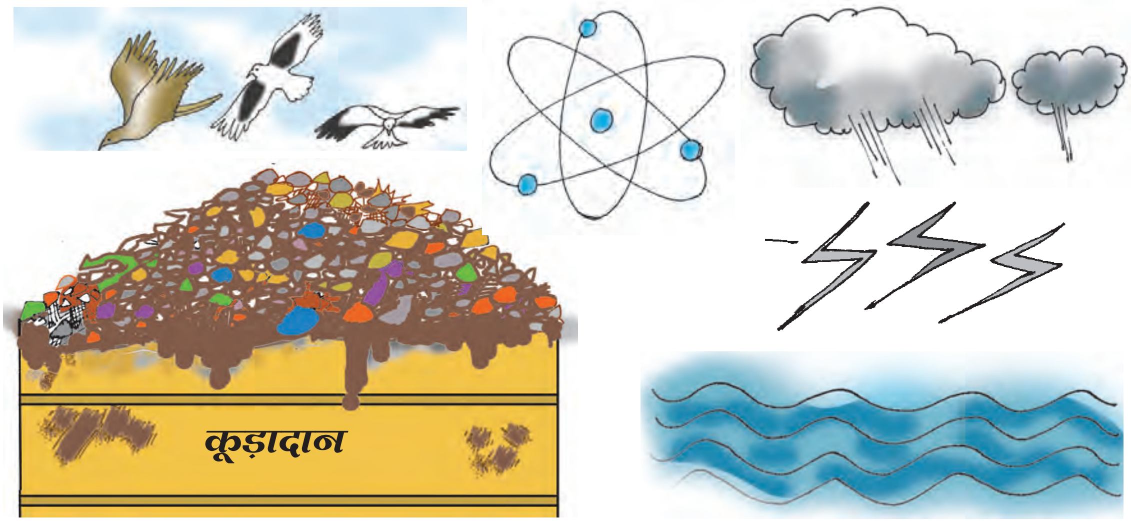

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ के एक परिच्छेद का सस्वर वाचन कराएँ । 'बिजली' की बचत किस प्रकार की जा सकती है, पूछें । 'हमें किन-किन चीजों की बचत करनी चाहिए और क्यों' चर्चा कराएँ । बिजली से चलने वाले यंत्रों के नाम पूछें ।

न करके, जलाकर ताप बिजली तैयार की जाए तो इससे दो लाख किलोवाट से अधिक बिजली तैयार हो सकती है । है न हैरत की बात ! अब इससे सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि प्रतिदिन न जाने कितने लाख किलोवाट बिजली पैदा करने के साधन को बेकार में फेंककर बरबाद कर दिया जाता है ।

बिजली पैदा करने के लिए भी आखिर कूड़ा-करकट को जलाना ही होगा पर एक खास तरीके से । बिजली पैदा करने के उद्‌देश्य से कूड़े-कचरे को जलाने वाली एक विशिष्ट भट्‌ठी चाहिए । इस भट्‌ठी में कूड़ा अच्छी तरह जल सके, इसके लिए यह जरूरी है कि ऑक्सीजनयुक्त हवा उसे अच्छी तरह मिलती रहे । अच्छी तरह जलने पर तापमान एक हजार से बारह सौ सेंटीग्रेड तक हो जाएगा फिर वाष्प टरबाइन अपनी ड्‌यूटी बजाते हुए बिजली पैदा करने वाले जनरेटर को चलाएँगे । लीजिए साहब, हो गई बिजली तैयार !

यदि ऐसे प्रयोग की शुरुआत हो जाए तो विद्‌युत उत्पादन के इतिहास में एक सुखद क्रांति आ जाए । शहरों में इस तरीके से बिजली का उत्पादन चल पड़े तो हमारे उपेक्षित ग्रामों की हालत भी सुधर जाए । अभी हमारे देश में जितनी बिजली पैदा होती है उसका अधिक प्रतिशत शहरों में ही खपता है, ग्रामों को केवल कुछ प्रतिशत ही बिजली मिल पाती है । ग्रामीण क्षेत्रों के अविकसित होने का एक प्रमुख कारण बिजली की किल्लत ही है ।

कूड़ा-करकट से बिजली पैदा करना काफी सस्ता हो सकता है । इसके लिए जो संयंत्र लगाए जाएँगे, उसमें काम आने वाले सारे उपकरण स्वदेशी होंगे यानी विदेशी उपकरणों की निर्भरता नहीं रह जाएगी ।

पहले के जमाने में लोग कूड़े को फेंक देते थे पर अब वह दिन दूर नहीं जब लोग-बाग इसे फेंकने की बजाय सँजोकर रखना पसंद करेंगे । आने वाले समय में कचरा और कबाड़, बेकार और मामूली नहीं बल्कि काफी कीमती साबित होने वाले हैं । साथ ही साथ हमारा घर-आँगन, परिसर स्वच्छ भी हो जाएगा अर्थात आम के आम, गुठलियों के दाम ।

– जहीर नियाजी

❑ पाठ के किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन कराएँ । पाठ में आए पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें । बिजली, पानी की बचत के बारे में सुवचन/घोषवाक्य बनाने के लिए प्रेरित करें । उपरोक्त संदर्भ में विज्ञापनों का संग्रह कराएँ । सुवचन, घोषवाक्य, दोहों का संग्रह कराके इनके पाठ की प्रतियोगिता कराएँ । 'स्वच्छता' हेतु लगने वाली वस्तुओं की सूची बनवाएँ । साक्षात्कार पर वर्ग में चर्चा करें । बचत के बारे में विद्‌यार्थियों को उनके रिश्तेदार, पड़ोसी और परिचित मित्र का साक्षात्कार लेने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. **जलचक्र की वैज्ञानिकता सुनो ।**

२. **अपनी पसंद की चित्रमालिका पर गुटानुसार प्रश्न एवं उनके उत्तर तैयार करके बताओ ।**

३. **'विश्व पुस्तक दिवस' के बारे में पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) हमारे यहाँ ऊर्जा संकट के कौन-कौन-से कारण हैं ?

(ख) हमारी जरूरत की बिजली किन-किन केंद्रों से आती है ?

(ग) बिजली पैदा करने के साधन को किस तरह बरबाद कर दिया जाता है ?

(घ) ग्रामीण क्षेत्रों के अविकसित होने का क्या कारण है ?

(ङ) भविष्य में लोग-बाग कूड़े को क्यों सँजोकर रखना पसंद करेंगे ?

५. **लिंग परिवर्तित करके वाक्य पुनः बोलो :**

(च) लड़के खो-खो खेल रहे हैं ।

(छ) पेड़ से पत्ते झड़ रहे हैं ।

(ज) हिरनी कुलाँचें भर रही है ।

(झ) प्रतियोगिता की विजेता सम्मानित की गई ।

(ञ) मादा गेंडा घास चर रही है ।

६. **'समस्या का समाधान' संबंधी नीचे दिए गए चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **तुम्हारे पड़ोस में रहने आए लड़के/लड़की को हिंदी नहीं आती । तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● पढ़ो, समझो और कृति करो :

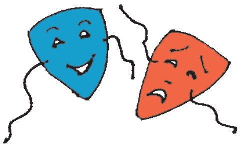

१६. नाट्यकला

नाट्यकला मनुष्य की अभिव्यक्ति का एक प्रभावी माध्यम है । किसी वास्तविक अथवा काल्पनिक वस्तु, स्थिति का आभास निर्माण करके उसे दिखाना, प्रस्तुत करना नाट्य है । देखे, सुने हुए प्रसंगों का अनुकरण करके पुनः प्रस्तुत करना एक कला है । इस प्रस्तुति में चेहरे के हाव-भाव, भाषा, आवाज में उतार-चढ़ाव महत्त्वपूर्ण हैं । शारीरिक क्रियाएँ, चेहरे के हाव-भाव और साथ में संबंधित शब्दों द्‌वारा अभिनय किया जाता है । इसी को नाट्यकला कहते हैं । अभिनय के कई प्रकार हैं । शारीरिक क्रियाओं द्‌वारा व्यक्त किए जाने वाले अभिनय को 'कायिक अभिनय' कहते हैं । शब्दों की सहायता से प्रस्तुत किया जाने वाला अभिनय 'वाचिक अभिनय' तथा चेहरे के भावों द्‌वारा किया गया अभिनय 'मुद्रा अभिनय' कहलाता है । चेहरे की रंगभूषा, पोशाक, गहने, मुखौटे आदि बाह्य साधनों के साथ किया गया अभिनय 'आहार्य' होता है । प्रतिदिन हम अपने जीवन में अभिनय का उपयोग करते रहते हैं । दादी से सुनी कहानियाँ, माँ की लोरी, मित्र से मेले का वर्णन, काम न करने के बहाने, हाव-भाव के साथ कविता पाठ आदि सभी जगह यह कला किसी-न-किसी रूप में उपस्थित है । अभिनय करते या कोई भूमिका निभाते समय बाहरी साधनों के उपयोग से वह अधिक प्रभावशाली हो जाती है । भूमिका के अनुसार चेहरे को सजाने, उचित कपड़े पहनने को रंगभूषा या 'वेशभूषा करना' कहते हैं । यदि परी की भूमिका करनी हो तो सफेद-चमकदार कपड़े, मुकुट, पंख, छड़ी आदि की आवश्यकता पड़ सकती है । यदि राक्षस की भूमिका करनी हो तो चेहरे पर पेन्सिल से, कोयले से या रंग की

❑ पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । परिसर के कृषक एवं व्यवसायियों की कृतियों, बोल-चाल पर प्रश्नोत्तर द्‌वारा चर्चा करें । इन व्यवसायियों के कार्यों की नकल विद्‌यार्थियों से कराएँ । उन्हें नाटक देखने के लिए प्रेरित करें और देखे नाटकों के बारे में पूछें ।

सहायता से भौंहें मोटी करना, दो बड़े दाँत सफेद रंग से, खड़िया से या आटे से रँगने आदि से वह प्रभावशाली होती है । रँगने के स्थान पर आवश्यकतानुसार मुखौटों का भी प्रयोग किया जा सकता है । वेशभूषा देश-काल, व्यक्ति के अनुसार ही होनी चाहिए । हमेशा बाह्य साधनों का उपयोग किया ही जाए, ऐसा आवश्यक नहीं है । हाँ, ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों के लिए इनका उपयोग प्रभावी होता है ।

हिंदी सीखने के लिए क, ख सीखना पड़ता है । इन वर्णों से बने चित्रों, शब्दों को देखना, पढ़ना, लिखना पड़ता है । ठीक उसी तरह अभिनय सीखने के लिए पशु-पक्षी, यातायात के साधनों की बोलियों, ध्वनियों, कृतियों की नकल करके शुभारंभ किया जा सकता है । आस-पास के व्यवसायियों के बोलने के ढंग, उनकी कृतियों की नकल द्‌वारा इसे दृढ़ किया जा सकता है । अभिनय सीखने के लिए आवश्यक नहीं कि किसी संस्था में प्रवेश लिया जाए । स्वयं अभ्यास से भी इसे काफी हद तक समझा जा सकता है । आज रंगमंच, दूरदर्शन या चित्रपट में चमकते हुए बड़े-बड़े सितारे/अभिनेता-अभिनेत्रियों में से कई ने किसी अभिनय अकादमी में शिक्षा-ग्रहण नहीं की थी । हाँ, यह अवश्य है कि ऐसी संस्थाएँ किसी की कला को अधिक चमका सकती हैं । एक सच्चे एवं सफल अभिनेता या अभिनेत्री के लिए उसकी अपनी लगन, परिश्रम, धैर्य, कार्य के प्रति समर्पण का होना अधिक आवश्यक होता है ।

सपने देखना अच्छी बात है पर इन सपनों को पूरा करने के पीछे लगने वाले परिश्रम को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए । परिश्रम ही सफलता की असली कुंजी है ।

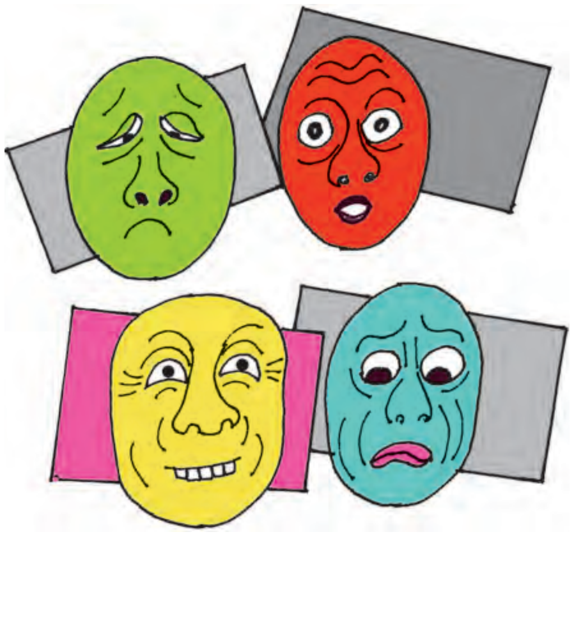

- परिसर के व्यवसायियों की सूची बनवाएँ । उनसे 'प्रिय व्यवसाय' और उनकी अपनी पसंद के कारण पर पाँच वाक्य बुलवाएँ । विद्‌यार्थियों को उनकी पसंद के किसी धारावाहिक के कलाकारों के नाम बताने के लिए कहें । वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं, पूछें ।

स्वाध्याय

१. **किसी कलाकार के बारे में सुनो ।**

२. **अपनी पसंद की चित्रकथा का निरीक्षण करो । उसकी पाँच विशेष बातें बताओ ।**

३. **अपनी प्रिय कला के बारे में पढ़ो और उससे संबंधित चित्र अपनी कृति पुस्तिका में चिपकाओ ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम क्या है ?

(ख) नाट्यकला किसे कहते हैं ?

(ग) नाट्यकला कहाँ-कहाँ उपस्थित है ?

(घ) अभिनय का शुभारंभ करने के लिए क्या करना चाहिए ?

(ङ) सच्चे अभिनेता या अभिनेत्री में कौन-से गुण होने चाहिए ?

५. **नीचे दिए गए शब्दसमूहों के लिए एक-एक सार्थक शब्द लिखो :**

(च) देश से प्रेम करने वाला ।

(छ) कृषि कार्य करने वाला ।

(ज) संचालन करने वाला ।

(झ) जो माता के प्रति भक्ति रखता है ।

(ञ) 'अ' से ' श्र' तक के वर्ण ।

६. **नीचे दिए गए 'स्व की पहचान' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **राह चलते एक व्यक्ति बेहोश होकर गिर पड़ा है । ऐसी स्थिति में उसकी सहायता के लिए तुम क्या-क्या करोगे, बताओ ।**

पुनरावर्तन-१

१. रेडियो/सीडी पर वाद्‌यसंगीत सुनो ।

२. अपने राज्य के किसी महत्वपूर्ण बाँध की जानकारी बताओ ।

३. कोई बाल एकांकी पढ़ो ।

४. अपने अबतक के बचपन की किसी मजेदार घटना का वर्णन लिखो ।

५. नीचे दी गई चौखट में संज्ञा तथा विशेषण शब्द ढूँढ़कर चौखट बनाओ । संज्ञा और विशेषण अपनी कॉपी में लिखो :

भी	ड़	ब	हा	दु	र	आ	य
सुं	पं	द्र	ह	लो	ग	म	ह
चि	द	सि	पा	ही	व्य	न	या
प	त्र	र	द	मि	जा	क्ति	रा
को	कु	थो	ड़ा	ही	ठा	दा	धा
क	ई	छ	प	ड़ा	बी	स	ली
गे	हूँ	ते	व	य	ती	न	ट
भा	र	व	ल	ही	मी	ट	र

उपक्रम/प्रकल्प

प्रति सप्ताह अपने बड़ों से दोहे सुनो ।

तुमने पशु-पक्षियों के लिए वर्षभर क्या-क्या किया, बताओ ।

अपने प्रिय स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में हर सप्ताह पुस्तकालय में जाकर पढ़ो ।

देश में मनाए जाने वाले त्योहारों की माहवार सूची बनाओ ।

पुनरावर्तन-२

१. किसी महिला क्रांतिकारी की प्रेरक कहानी सुनाओ ।

२. अपने गाँव/शहर के प्रमुख व्यवसाय संबंधी जानकारी बताओ ।

३. महादेवी वर्मा लिखित 'मेरा परिवार' से कोई एक रेखाचित्र पढ़ो ।

४. किसी भी विषय पर ७-८ पंक्तियों की कविता लिखो ।

५. निम्न सारिणी के स्तंभों में दिए शब्दों से अर्थपूर्ण वाक्य बनाओ :

(संज्ञा, सर्वनाम के रूप में जहाँ आवश्यक हो वहाँ परिवर्तन कर सकते हैं ।) जैसे : हमने पुस्तकें पढ़ीं।

(१)	(२)	(३)
मैं, हम, तू	रोटी, चिड़िया	खाता हूँ/खाते हैं /खाता है ।
तुम, आप	बच्चा, फल	है/हो ।
स्वयं, यह	पुस्तक	खिलाता हूँ ।
वह, ये, वे	रोटियाँ, चिड़ियाँ, पुस्तकें	खिलाते हैं ।
कौन, क्या		खिलवाता है ।
कोई, कुछ		पढ़ी/पढ़ीं ।
जो		छोड़ दिया ।
यही, वही		पढ़ती हूँ /पढ़ते हैं ।
		पढ़ते हो ।

उपक्रम/प्रकल्प

अपने बड़ों से मूल्यों पर आधारित कहानियाँ नियमित सुनो ।

हिंदी में नया क्या सीखा, सप्ताह के अंत में अपने अभिभावक/बड़ों को बताओ ।

अब तक पाठ्यपुस्तक में आए नए शब्दों के अर्थ शब्दकोश में पढ़ो ।

महान विभूतियों की जयंती, पुण्यतिथि की सूची महीनों के अनुसार बनाओ ।

स्वयं अध्ययन

✻ आओ खेलें

❑ **सूचना :** अलग-अलग रंगों की गोटियाँ और पासा लेने के लिए कहें । पासा फेंककर जितने अंक आए उतने घर आगे बढ़ना है । ४-५ के गुट में सभी को बारी-बारी से खेलना है । खाने में दी गई सूचना के अनुसार अभिनय करवाएँ और उसपर पाँच वाक्य कहलवाएँ ।

● देखो, समझो और बताओ :

१. संगणक

❑ दिए गए चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । संगणक के विभिन्न भागों के नाम पूछें । इसके विविध भागों के सामान्य कार्यों और विशेषताओं पर चर्चा करें । संगणक के अति प्रयोग से होने वाली हानियाँ समझाएँ । संगणक का चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें ।

दूसरी इकाई

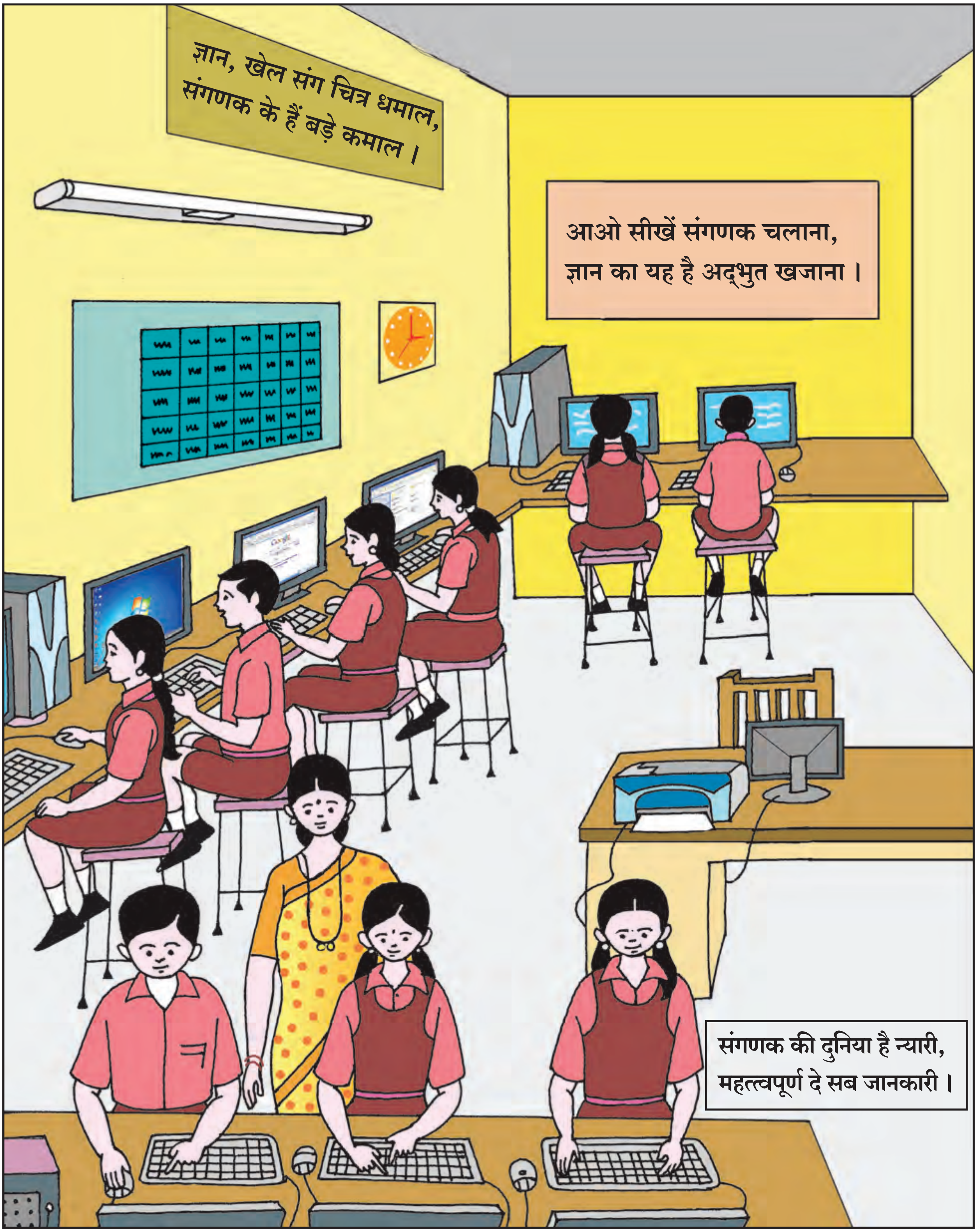

❑ विद्‌यार्थियों से संगणक पर आधारित प्रश्न पूछने के लिए कहें । उनसे संगणक चलाने का अपना पहला अनुभव बताने के लिए कहें । इसके लाभ और सांकेतिक चिह्‌नों पर विद्‌यार्थियों से चर्चा कराएँ । चित्र के आधार पर पाँच-पाँच वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें ।

● सुनो, दोहराओ और साभिनय गाओ :

२. रिश्ता-नाता

पीपल पावन पिता सरीखा, तुलसी जैसे माता ।
'त्रिफला' बहन-बहू-बिटिया-सा, बेर सरीखा भ्राता ।।
महुआ मामा जैसा लगता, वन-उपवन महकाता ।
आम-वृक्ष नाना-सा वत्सल, मीठे फल बरसाता ।।

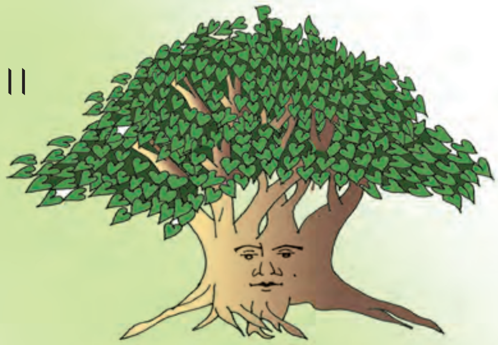

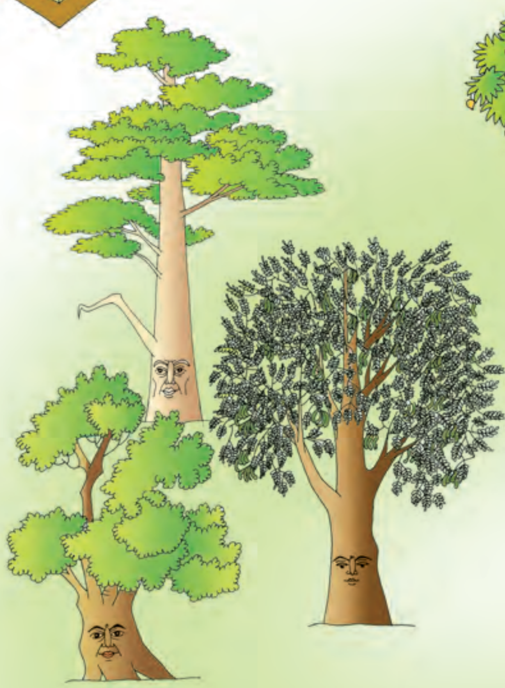

पोषक रक्षक, जीवनदायी औषधियों का दाता ।
वृक्ष निभाता आज भी सबसे रिश्ता-नाता ।।
पौधों को रोपें-सींचें ।
आओ ! आनंद उलीचें ।।

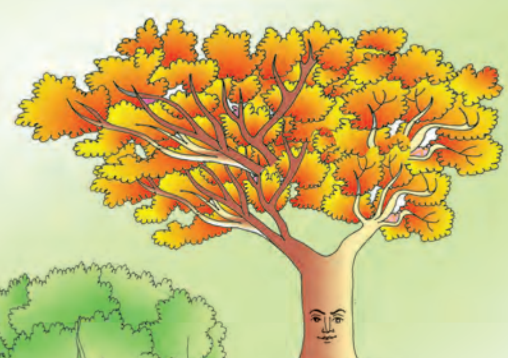

देवदार दादा जी जैसा, इमली जैसे दादी ।
खिरनी नानी-सी मीठी, निर्मल, सीधी-सादी ।।
बरगद है परदादा जैसा, जटा-जूट संन्यासी ।
गुलमोहर चाचा-सा जिसकी रंगत हरे उदासी ।।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्‌यार्थियों से एकल एवं सामूहिक साभिनय पाठ कराएँ । कविता में किन रिश्तों की बात आई है, पूछें । त्रिफला, शगुन, मधुमेह पर मार्गदर्शन करें । औषधीय गुणोंवाले पौधों/वनस्पतियों पर चर्चा करें ।

नीम ननद-ननदोई-सा जो है रोगों का त्राता ।
वृक्ष निभाता आज भी सबसे रिश्ता-नाता ॥
पौधों को रोपें-सींचें ।
आओ ! आनंद उलीचें ॥

मौलसिरी यानी ज्यों मौसी, मोहक ममतावाली ।
मेहँदी मामी-सी है, किंतु अद्‌भुत क्षमतावाली ।।
है अशोक परनाना-सा, रिश्तों की नैया खेता ।
शीशम शगुन श्वसुर-सा देता, नहीं कभी कुछ लेता ।।

मधुमेह का कुशल वैद्‌य है, जामुन ज्यों जामाता ।
वृक्ष निभाता आज भी सबसे रिश्ता-नाता ॥
पौधों को रोपें-सींचें ।
आओ ! आनंद उलीचें ॥

– अजहर हाशमी

❑ कविता में किन-किन शब्दों के बीच योजक चिह्न (-) आए हैं, विद्‌यार्थियों से खोजने के लिए कहें । योजक चिह्न के प्रयोग पर चर्चा करें । उलीचना, उदास होना, सींचना, नाव खेना आदि कृतियों का अभिनय कराएँ । इन शब्दों का उनसे वाक्यों में प्रयोग कराएँ ।

स्वाध्याय

१. प्रकृति संबंधी सुनी हुई कोई कविता सुनाओ ।

२. वृक्षों से होने वाले लाभ का आठ से दस वाक्यों में वर्णन करो ।

३. कविता में आए हुए तुकांत शब्द पढ़ो । जैसे : माता–भ्राता आदि ।

४. उत्तर लिखो :

(क) वृक्ष क्या करता है ?

(ख) 'रिश्ता–नाता' कविता में किन–किन पेड़–पौधों के नाम आए हैं ?

(ग) भाई के समान कौन है ?

(घ) महुआ किसके समान है ? वह क्या करता है ?

(ङ) कविता में औषधीय गुणों वाले किन–किन पौधों का उल्लेख आया है ?

५. नीचे दिए गए शब्दों में कौन–कौन–से उपसर्ग/प्रत्यय आए हैं, पहचानकर लिखो :

महत्त्व, अनुकरण, साभिनय, अनमना, उपवन, सहपाठी, प्रतिदिन, परदादा, धनवान, अपनापन, प्रगति, मानवता, रसहीन, दिनभर, बड़ाई, दैनिक, क्षणिक, सब्जीवाला, शक्तिहीन, बुढ़ापा, सुविचार, अचल ।

६. नीचे दिए गए 'पारस्परिक सहसंबंध' वाले चित्रों को समझो और चर्चा करो :

७. पैर में चोट लगने के कारण तुम पाठशाला की खेल प्रतियोगिता में भाग नहीं ले पा रहे हो । ऐसे में तुम्हारे मन में कौन–से भाव उठते हैं, बताओ ।

● पढ़ो और बताओ :

३. बुद्‌धिमान मेमना

एक घने जंगल की गुफा में एक नन्हा मेमना अपने माँ-बाप के साथ रहता था । उन सबके खाने के लिए जंगल में बहुत कुछ था- झाड़ियाँ, पत्तियाँ आदि । तीनों का जीवन आराम से कट जाता, बस शिकारी जानवरों का डर भर न होता ।

पूरा जंगल बड़े-बड़े बाघों और चालाक, निर्दयी गीदड़ों से भरा हुआ था । बकरी और बकरा, दोनों ही अपने मेमने को इन भयंकर जानवरों से बचाने की फिक्र में रहते । हर सुबह, अपने बेटे को गुफा में छोड़कर दोनों भोजन की तलाश में निकल जाते । उन्होंने मेमने से कह रखा था कि वह गुफा के बाहर कभी कदम न रखे और न ही उसके वहाँ होने का किसी को पता चले ।

मेमना बड़ा हो रहा था और चाहता था कि दुनिया देखे । इसलिए एक भरी दोपहरी में वह गुफा से बाहर आया और चलते-चलते बहुत दूर निकल गया । विशाल वटवृक्षों और झर-झर करते झरनों को पार करता हुआ वह चला जा रहा था । जब मेमने ने देखा कि रात हो रही है तो उसने घर लौट चलने का निश्चय किया ।

बेचारा मेमना ! वह तो रास्ता ही भूल गया था फिर भी रात तो कहीं काटनी ही थी । चलते-चलते मेमना किसी गीदड़ की गुफा तक जा पहुँचा । गीदड़ कहीं बाहर गया हुआ था । वह उस गुफा में घुस गया और उसने निश्चय किया कि जब तक उसके माता-पिता नहीं आ जाते, वह वहीं छिपा रहेगा ।

अगली सुबह गीदड़ वापस आया लेकिन गुफा के बाहर ही रुक गया । उसे लगा कोई अनजान जानवर गुफा में घुसा बैठा है । गीदड़ तेज आवाज में बोला, "बाहर आ जाओ, वरना बचोगे नहीं ।" मेमना समझदार था । उसने एक खूँखार जानवर की आवाज में जवाब दिया, "मैं शेर का मामा हूँ । मेरी दाढ़ी बहुत घनी, लंबी और मजबूत है । अपने भोजन में पचास बाघों को एक साथ खाता हूँ । जा भाग, मेरे लिए भोजन का प्रबंध कर ।" गीदड़ की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई । उसने सोचा, 'इससे पहले कि यह भीषण जानवर बाघों की खोज में गुफा से बाहर निकले, मुझे यहाँ से नौ-दो-ग्यारह हो जाना चाहिए ।' पलक झपकते ही गीदड़ जंगल के दूसरे

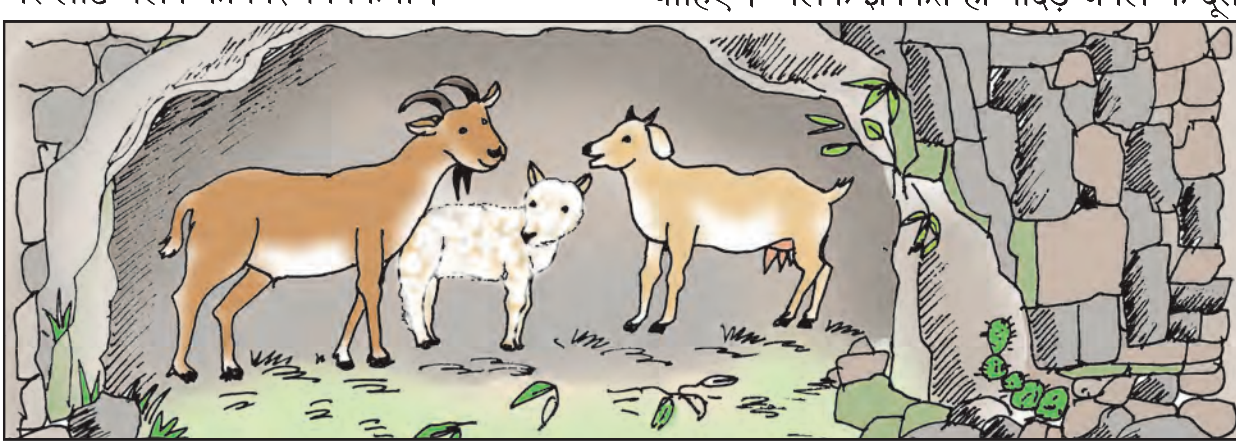

❑ उचित आरोह- अवरोह के साथ कहानी सुनाएँ । विद्यार्थियों से सामूहिक, मुखर वाचन कराएँ । उन्हें उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । उन्हें पढ़ी हुई कहानियों के नाम बताने के लिए कहें । 'माता-पिता एवं बड़ों की आज्ञा के पालन' पर चर्चा करें ।

छोर पर था, जहाँ उसे बाघों का सरदार मिला ।

गीदड़ हाँफते हुए बोला, "महोदय, मेरी गुफा में कोई अजीब-सा जानवर छिपा बैठा है । ऐसा लगता है कि वह बहुत विशाल और बलशाली है । उसकी भयानक आवाज सुनकर ही मैंने यह अंदाजा लगा लिया है । उसने मुझे अपने खाने के लिए पचास बाघ लाने का आदेश दिया है ।"

"हूँ !" बाघ बोला । "कौन-सा जानवर है, जो एक साथ पचास बाघ खा सके ? मेरे साथ चलो । ऐसा मजा चखाऊँगा कि उसे नानी याद आएगी ।"

इस बीच बकरी और बकरा अपने बेटे को ढूँढ़ रहे थे । उसके नन्हे खुरों के निशानों पर चलते-चलते दोनों उसी गुफा तक जा पहुँचे और उसे पुकारने लगे । मेमने ने गुफा से बाहर निकलकर गीदड़वाला किस्सा सुनाया । तभी उन्होंने दूर ही से गीदड़ और बाघ को अपनी ओर आते हुए देखा । "अब हम भटक तो गए ही हैं," मेमने का पिता बोला । "फिर भी कोई तिकड़म लगाते हैं ।" तीनों ने मिलकर एक योजना बनाई और फिर गुफा में जाकर बैठ गए । जब बाघ गुफा के पास पहुँचा तो बकरी ने मेमने के कान जोर से उमेठे । मेमना ऊँची आवाज में रोने लगा ।

"बच्चा रो क्यों रहा है ?" पिता चिल्लाया ।

"वह खाने में बाघ माँग रहा है," बकरी बोली । "हम जब से इस जंगल में आए हैं, तब से इसने हाथी, भालू और भैंसे तो खाए पर बाघ नहीं मिला ।" "हाँ, हाँ", मेमने का पिता आवाज बदलकर बोला । "मैंने गीदड़ को पचास बाघ लाने के लिए कहा है । तुम बाहर जाकर देखो, वह आया या नहीं ।"

इतना सुनकर बाघ के तो होश उड़ गए । वह किसी भयंकर जानवर के बच्चे द्‌वारा बड़े-बड़े हाथी निगलने की कल्पना करने लगा । उसे लगा कि उसकी भी मृत्यु निश्चित है, ये सोचकर बाघ वहाँ से भाग खड़ा हुआ । गीदड़ भी उसके पीछे भागने लगा । डर के मारे गीदड़, बाघ के पीछे जितना तेज भाग रहा था, बाघ उतना ही डर रहा था कि गीदड़ उस भयंकर जानवर के भोजन का प्रबंध कर रहा है ।

बाघ और गीदड़ के भाग जाने के बाद बकरी परिवार अपनी गुफा में सुरक्षित वापस आ गया । बहुत दिनों बाद जंगल के प्राणियों को अपनी मूर्खता का पता चला । सबने बुद्‌धिमान मेमने की की बड़ी प्रशंसा की । सभी जानवर जंगल में वापस आ गए । वन में फिर से चहल-पहल हो उठी ।

– राजेश्वरी प्रसाद चंदोला

❑ पाठ में संज्ञाओं की विशेषता बताने वाले शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें (जैसे – **घने** जंगल) । अंदाज लगाना, मजा चखाना, नानी याद आना, भाग खड़ा होना जैसे मुहावरों के अर्थ पूछकर वाक्य में प्रयोग कराएँ । पाठ में आए मुहावरों की सूची बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **सुनी हुई कोई बोधकथा सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित राज्यों के नाम पश्चिम से पूर्व दिशा के क्रम से बताओ :**

१. बिहार २. राजस्थान ३. छत्तीसगढ़ ४. प. बंगाल ५. मिजोरम

३. **नभचर प्राणियों से संबंधित जानकारी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) माँ-बाप ने मेमने से क्या कह रखा था ?

(ख) गीदड़ की सिट्‌टी-पिट्‌टी कब गुम हो गई ?

(ग) बकरी और बकरा गुफा तक कैसे पहुँचे ?

(घ) बाघ गुफा के सामने से क्यों भाग खड़ा हुआ ?

(ङ) इस कहानी में तुम्हें कौन-सी बात सबसे अच्छी लगी ?

५. **(च) पाठ्‌यपुस्तक में आए शब्दयुग्म ढूँढ़कर लिखो । जैसे : माँ-बाप ।**

(छ) निम्न शब्दों को प्रथम वर्णानुसार वर्णमाला के क्रम से लिखो :

एक, चालाक, विशाल, गीदड़, जंगल, आदेश, बाघ, गुफा, सरदार, छत, दूर, मेमना, भैंस, अंक ।

६. **नीचे दिए गए 'अंधविश्वास' संबंधी चित्रों को समझो और इन्हें न मानने के पक्ष में चर्चा करो :**

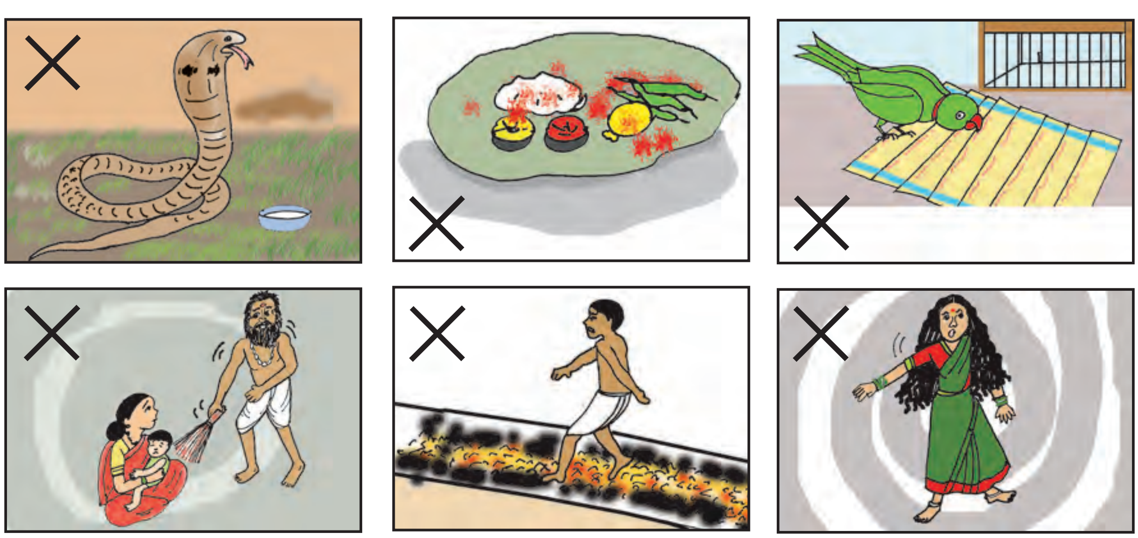

७. **विद्‌यालय छूटने पर तुम्हारा कोई परिचित/अपरिचित तुम्हें लेने आया है । तुम्हारे माता-पिता ने इस बारे में तुम्हें नहीं बताया था । तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● पढ़ो और समझो :

४. क्या तुम जानते हो ?

१. राकेश शर्मा अंतरिक्ष में जाने वाले प्रथम भारतीय हैं ।

२. चीता सबसे तेज दौड़ने वाला प्राणी है ।

३. मानसरोवर सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित प्राकृतिक सरोवर है ।

४. ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है ।

५. सूर्यप्रकाश शरीर में उपस्थित विटामिन 'डी' को सक्रिय करने का प्राकृतिक माध्यम है ।

६. एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्‌वीप है ।

७. शून्य का आविष्कार भारत में हुआ ।

८. संस्कृत को भारतीय भाषाओं की जननी माना जाता है ।

९. विश्वभर में डाकघरों की सबसे अधिक संख्या भारत में है ।

१०. भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है ।

❑ पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । विद्‌यार्थियों के दो गुट बनाकर पाठ में आई जानकारियों के आधार पर प्रश्न निर्मिति और उनके उत्तर देने की कृतियाँ कराएँ । उनसे इस तरह की अन्य सामान्य जानकारियों का संग्रह कराएँ । प्रश्न मंच का आयोजन करें ।

● पढ़ो और चर्चा करो :

५. खूब पढ़ो – खूब खेलो !

(कक्षा में विभिन्न खेलों पर चर्चा चल रही है ।)

सत्येंद्र : मुझे क्रिकेट बहुत पसंद है । इसके दो दलों में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं । इसमें क्रमानुसार एक दल बल्लेबाजी करता है, दूसरा क्षेत्ररक्षण ।

आदित्य : हॉकी मेरा प्रिय खेल है । यह भारत का राष्ट्रीय खेल है । ११-११ खिलाड़ियों के दो दलों में मैच होता है । ओलंपिक खेलों में हॉकी के लिए भारत ने सर्वाधिक बार स्वर्णपदक जीता है । वैसे शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए मैं रस्सी कूद भी खेलता हूँ ।

क्षितिजा : मुझे तो बैडमिंटन बहुत अच्छा लगता है । इसे रैकेट और शटलकॉक से खेला जाता है । इसमें एकल, युगल और मिश्रित युगल मुकाबले भी होते हैं ।

कृतिका : कबड्डी भारतीय खेल है । हर दल में सात-सात खिलाड़ी होते हैं । मैं टेबल टेनिस भी खेलती हूँ । यह खेल २ या ४ खिलाड़ियों के बीच खेला जाता है ।

हिमांशु : मेरा प्रिय खेल फुटबॉल है । इसमें ११-११ खिलाड़ियों के दो दल खेलते हैं । गेंद को पैर की मदद से उछालकर गोल करते हैं । गोलरक्षक के सिवा अन्य खिलाड़ी द्‌वारा गेंद को हाथ से छूना वर्जित है । 'हेडर' इस खेल की खासियत है ।

उपेंद्र गुरुजी : बच्चो ! ध्यान रखो कि इन खेलों को खेलने से पहले इनके नियमों की जानकारी होनी चाहिए । हर खेल शारीरिक और मानसिक व्यायाम का उत्तम साधन है । अतः खूब पढ़ो और खूब खेलो ।

– डॉ. मंजुला शर्मा

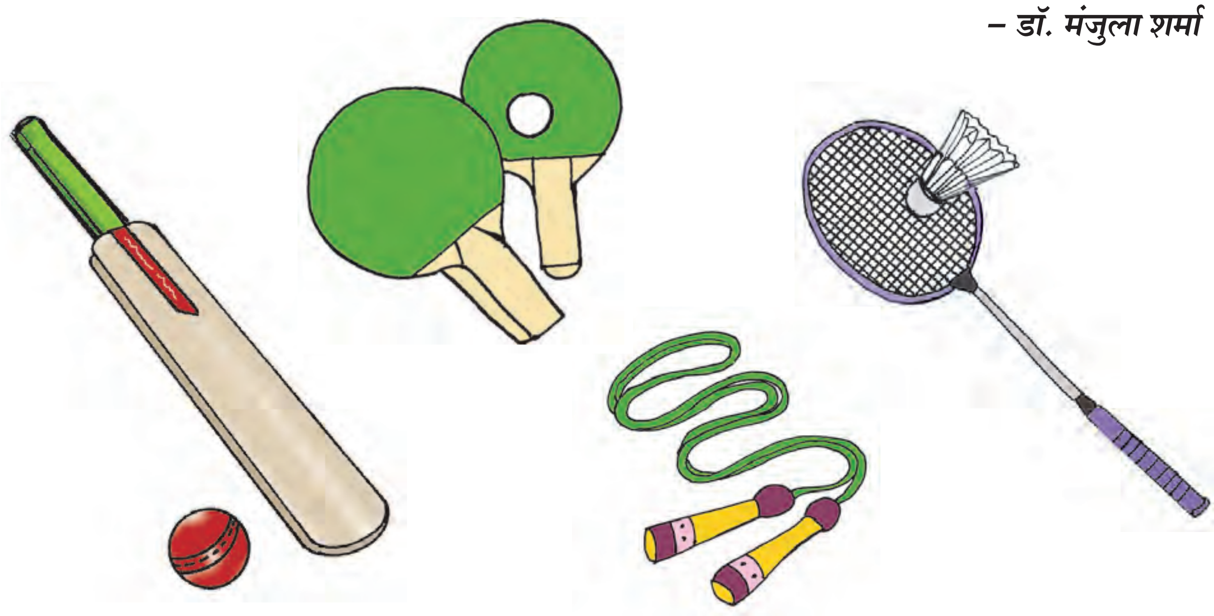

❑ ऊपर आए संवादों के आधार पर विद्‌यार्थियों के नामकरण करें । उनसे क्रमशः अपने-अपने संवाद का उचित आरोह-अवरोह के साथ मुखर वाचन एवं नाट्‌यीकरण कराएँ । पाठ में आए खेल संबंधी आशय और नियमों पर विद्‌यार्थियों से चर्चा करें और कराएँ ।

स्वाध्याय

१. **सुने हुए कोई पाँच सुवचन सुनाओ ।**

२. **तुम्हारे परिसर में अपने शारीरिक श्रम के बल पर जीवनयापन करनेवालों के बारे में बताओ ।**

३. **रेल और बस स्थानक पर लिखी हुई सार्वजनिक सूचनाएँ पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) क्रिकेट में एक दल में कितने खिलाड़ी होते हैं ?

(ख) भारत का राष्ट्रीय खेल कौन-सा है ?

(ग) बैडमिंटन में कितने और कौन-से मुकाबले होते हैं ?

(घ) खेल खेलने से पहले क्या करना चाहिए ?

(ङ) फुटबॉल में गेंद को किसकी मदद से उछाला जाता है ?

५. **नीचे दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार (-ं) एवं अनुनासिक (-ँ)लगाकर इन्हें पुनः लिखो :**

आगन, पकज, पखुड़ी, कगाल, साप, सघमित्रा, काचन, पूछ, माद, रजना, मजिल, ऊट, फटूश, कठ, मडी, मुह, ढिढोरा, अनत, आख, मथन, कुदन, वृदा, बधन, चपा, चबल, रभा, गुफन, उगली, चाद ।

६. **नीचे दिए गए 'ईमानदारी' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **जन्मदिन पर माँ-पिता जी द्‌वारा उपहार में दिए गए रुपयों का सदुपयोग कैसे करोगे, बताओ ।**

● पढ़ो और लिखो :

६. दिलों को जोड़ना जरूरी

प्रिय सुमति,

सस्नेह आशीष ।

तुम्हारा पत्र मिला । प्रथम सत्रांत परीक्षा में तुम प्रथम रही, यह पढ़कर बहुत खुशी हुई । सुमति, लेकिन मुझे यह बताओ कि आजकल तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है ? अच्छा है न ? हमारा शरीर निरोगी होना चाहिए, ताकतवर होना चाहिए । पढ़ाई तो करनी चाहिए ही, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन बाकी बातों की ओर भी ध्यान देना चाहिए । लोकमान्य टिळक जी ने एक बार कहा था, "केवल छात्रवृत्ति पाने के लिए हमारा जन्म नहीं हुआ है ।"

परसों मेरे एक मित्र ने मुझसे कहा, "मुझे इस बात का खेद है कि परीक्षा में मैं कभी भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं हो सका । वह खुशी, वह आनंद मैं अपने पिता जी को कभी नहीं दे पाया ।"

मैंने उससे कहा, "देखो भाई, परीक्षा में तुम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं हुए, सो तो है पर जीवन की परीक्षा में बहुत ही अच्छी तरह उत्तीर्ण हुए हो, इसमें जरा भी शक नहीं है । सच कहूँ तो, इसी में तुम्हारे पिता जी की भी खुशी समाई है । तुम उदार स्वभाववाले हो । तुम और तुम्हारे भाई एक साथ, मिल-जुलकर रहते हो, यह अच्छी बात है । इस बात से भी तुम्हारे पिता जी बहुत खुश होते होंगे ।" पढ़ाई, परीक्षा, अंक इनका अपने आप में महत्त्व तो है ही, लेकिन सभी बातों में उचित मेल होना चाहिए, अनुपात होना चाहिए । एक अंग्रेजी कहावत है, 'अनुपातबद्‌धता कला की आत्मा है ।' सुमति, मैं चाहता हूँ कि तुम यह कहावत हमेशा ध्यान रखो । पढ़ाई के साथ-साथ बाकी सारी बातों पर ध्यान देकर यदि तुम परीक्षा में प्रथम आओ तो बात बने । माँ के कामों में हाथ बँटाना, छोटे भाई/बहन के साथ प्यार से रहना, खेलना, ये सारी बातें करते हुए पढ़ाई में आगे रहना बड़ी उपलब्धि है ।

यह भी लिखा है कि तुमने हिंदी की कुछ परीक्षाएँ दी हैं । बहुत अच्छी बात है पर मुझे बताओ, क्या तुम हिंदी में बातचीत कर सकती हो ? बहुत वर्ष पहले मैंने भी तुम्हारी ही तरह हिंदी की कुछ परीक्षाएँ दी थीं लेकिन आज भी मैं हिंदी में ठीक से बातचीत नहीं कर पाता ।

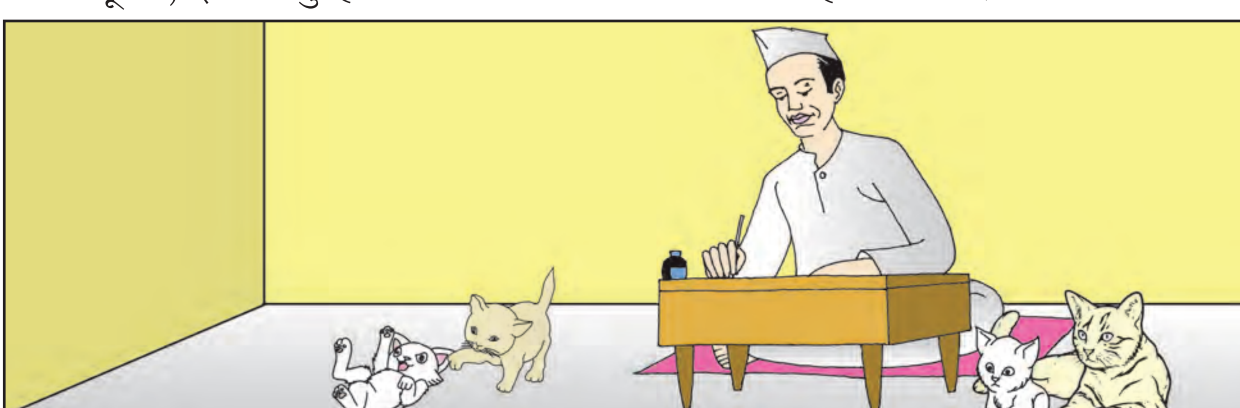

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पत्र का एकल मुखर वाचन एवं सामूहिक मौन वाचन कराएँ । पत्र के प्रारंभ, विषयवस्तु एवं पत्रांत पर चर्चा करें/कराएँ । पाठ में संज्ञा के बदले आए शब्द ढूँढ़ने के लिए कहें । इसी प्रकार के अन्य पत्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें ।

एक बार तो मेरी फजीहत ही हो गई थी । हुआ यूँ कि मैं एक गाँव गया था, व्याख्यान देने । व्याख्यान के बाद कुछ लोग मेरे पास आए । वे वहाँ के राष्ट्रभाषा केंद्र के संचालक थे । उन्होंने मुझसे कहा, "कृपया आप हमारे केंद्र में आइए । वहाँ भी आप एक व्याख्यान दीजिए ।"

मैंने बहुत आनाकानी की, टालमटोल किया पर आखिर मुझे जाना ही पड़ा । मैंने पाँच ही मिनट व्याख्यान दिया पर बहुत परेशानी हुई । ऐन मौके पर एक संत का एक पद मुझे याद आया । बस उसी के सहारे काम चलाया । वह पद इस तरह है -

'दिल किसी का मत दुखाओ
यह तो खुदा की मस्जिद है ।'

सचमुच सुमति, संत ने कितनी अच्छी बात कही है- हृदय रूपी मस्जिद । अनेक बार ऐसा होता है कि बाहरी मस्जिद या मंदिर को अगर किसी ने हानि पहुँचाई तो लोग दंगा-फसाद करते हैं पर इस हृदयरूपी मस्जिद, मंदिर को बार-बार चोट पहुँचाने के बावजूद हम कुछ नहीं करते । इसीलिए कवि ने कहा कि किसी के भी दिल को ठेस मत पहुँचाओ । हम हिंदी क्यों सीखें ? दिलों को जोड़ने के लिए, एकता के लिए । सिर्फ हिंदी की परीक्षा देना काफी नहीं है । दिलों को जोड़ना भी जरूरी है ।

अब रुकता हूँ । मेरे आस-पास बिल्ली के छोटे-छोटे बिलौटे कुछ गड़बड़ कर रहे हैं । हो सकता है कि कुछ बिलौटे स्याही की दवात पर झपट पड़ें । अतः पत्र को विराम दे रहा हूँ ।

तुम्हारा,
अण्णा

*(मूल मराठी पत्र : साने गुरुजी
अनुवाद- प्रकाश बोकील)*

❑ विद्‌यार्थियों को उनके द्‌वारा पढ़े, सुने हुए पत्रों के बारे में बताने के लिए कहें । वे किन प्रसंगों में पत्र लिख सकते हैं, मार्गदर्शन करें । जन्मदिन, विशेष प्रसंगों पर चर्चा करते हुए मित्र/ रिश्तेदार को पत्र लिखने हेतु प्रेरित करें । विविध पत्रों का संग्रह कराएँ ।

स्वाध्याय

१. माँ/ दादी से उनके बचपन के प्रसंग सुनो ।

२. तुम्हें अब तक किन-किन के पत्र आए हैं ? तुमने किस-किसको पत्र लिखे हैं, बताओ ।

३. 'विज्ञान दिवस' के बारे में पढ़ो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) प्रस्तुत पाठ में पत्र किसने किसे लिखा है ?

(ख) पत्र लेखक ने अपने मित्र से क्या कहा ?

(ग) लेखक ने संत के कौन-से पद से काम चलाया ?

(घ) हमें हिंदी क्यों सीखनी चाहिए ?

(ङ) लेखक के आस-पास कौन गड़बड़ कर रहे थे ?

५. पढ़ो, समझो और इसी प्रकार के अन्य समूह वाचक शब्द लिखो :

टिड्डियों का **दल**, लताओं का **कुंज**, पर्वतों की **शृंखला**, तारों का **पुंज**, पक्षियों का **झुंड**, गेहूँ का **ढेर**, कागजों का **पुलिंदा**, ऊँटों का **काफिला**, नोटों की **गड्डी**, नक्षत्रों का **मंडल**, राज्यों का **संघ** ।

६. 'अपनी जिम्मेदारी' संबंधी नीचे दिए गए चित्रों को समझो और चर्चा करो :

७. गणेशोत्सव के लिए तुम्हें पर्यावरणपूरक मूर्ति बनानी है । तुम किन पदार्थों का उपयोग करोगे, बताओ ।

● **समझो और करो :**

७. आओ, आयु बताना सीखें

१. अपने मित्र को उसकी वर्तमान आयु में अगले वर्ष की आयु जोड़ने के लिए कहें ।

२. इस योगफल को ५ से गुणा करने के लिए कहें ।

३. प्राप्त गुणनफल में उसे अपने जन्मवर्ष का इकाई अंक जोड़ने के लिए कहें ।

४. प्राप्त योगफल में से ५ घटा दें ।

५. घटाने के बाद जो संख्या प्राप्त होगी, उसकी बाईं ओर के दो अंक तुम्हारे मित्र की आयु है ।

इस सूत्र को उदाहरण से समझते हैं-

मान लो तुम्हारे मित्र की आयु १० वर्ष है तो-

१. १० (वर्तमान आयु) + (अगले ११ वर्ष की आयु) = २१

२. २१ × ५ = १०५

३. १०५ + ४ = १०९ (यदि जन्मवर्ष २००४ है, तो इकाई अंक ४ होगा ।)

४. १०९ - ५ = १०४

५. १०४ के बाईं ओर के दो अंक अर्थात १० वर्ष तुम्हारे मित्र की आयु है ।

इसी आधार पर अपने परिजनों, परिचितों, मित्रों को उनकी आयु बताकर आश्चर्यचकित कर सकते हो । करके देखो !

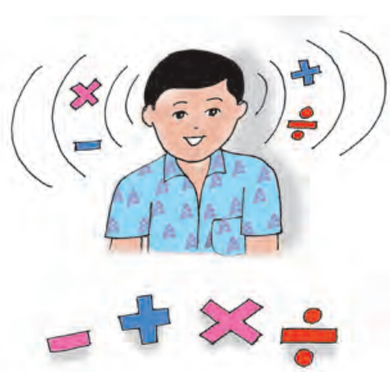

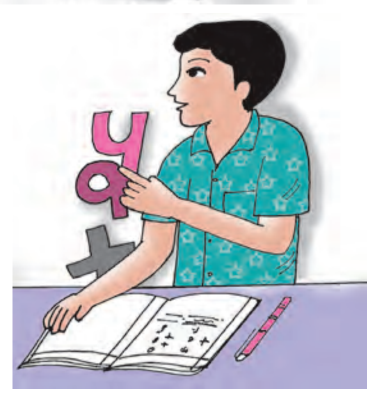

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । विद्यार्थियों की जोड़ियाँ बनाकर 'आयु बताने' का खेल खेलने के लिए कहें । कक्षा में अन्य भाषाई खेलों के माध्यम से बुद्धिमंथन के खेलों का प्रात्यक्षिक कराएँ ।

● पढ़ो, समझो और लिखो :

८. ताले की कुंजी

सुशांत के माता-पिता अमेरिका में नौकरी करते थे । सुशांत का जन्म वहीं हुआ । वह अमेरिका के ही एक अंग्रेजी विद्‌यालय में पढ़ रहा था । माता-पिता के काम पर चले जाने के बाद सुशांत घर में अकेला पड़ जाता था । वह परेशान रहने लगा । माँ- बाप से सुशांत की यह हालत देखी न गई । उन्होंने सुशांत के अच्छे भविष्य के लिए अपने देश भारत लौटने का निर्णय कर लिया । वे जानते थे कि सुशांत अपने दादा-दादी के साथ खुश रहेगा । वे सब भारत आ गए । सुशांत को एक अच्छे अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश मिल गया । दादा-दादी जी के साथ सुशांत बहुत खुश था । प्रतिदिन सोने से पहले दादा-दादी से रामायण-महाभारत, पंचतंत्र की कहानियाँ जरूर सुनता था । धीरे-धीरे उनसे सुशांत का लगाव बढ़ गया था । विद्‌यालय में भी शशांक, अनुराग, अनुष्का, पिंकी उसके अच्छे मित्र हो गए थे ।

सितंबर का महीना था । शिक्षिका ने कक्षा में कथाकथन प्रतियोगिता होने की सूचना दी । उन्होंने कहा, "इस वर्ष से तुम्हारी पाँचवीं कक्षा में हिंदी भी पढ़ाई जा रही है । अतः कथाकथन प्रतियोगिता अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में होगी ।" शिक्षिका अब तक जान गई थीं कि सुशांत अंग्रेजी विषय में सबसे अच्छा है पर हिंदी पढ़-लिख नहीं पाता है । शिक्षिका ने कहा, "सुशांत तुम 'हिंदी कथाकथन' प्रतियोगिता में भाग लोगे ।" शिक्षिका की सूचना सुनकर सुशांत का उत्साह ठंडा पड़ गया । वह टूटी-फूटी हिंदी बोलता था । हिंदी पढ़ना-लिखना तो उसे आता ही नहीं था । हिंदी को भी वह 'इंडी' कहता था ।

सुशांत का उदास चेहरा देखकर शिक्षिका बोलीं, "सुशांत ! पाँचवीं कक्षा में हिंदी एक विषय है । तुम हिंदी में कहानी बोल सकते हो ।" सुशांत बोला, "नो मैडम ! आय कान्ट ।" यह कहकर रुआँसा हो गया । शिक्षिका ने कहा, "सुशांत यू आर अ गुड स्टुडंट । आय एम श्योर, यू कैन ।" सुशांत कुछ बोल नहीं सका । सिर झुकाकर खड़ा रहा । उसे अधिक परेशान देखकर शिक्षिका बोलीं, "यू

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से एकल मुखर वाचन एवं सामूहिक मौन वाचन कराएँ । उन्हें उनके शब्दों में पाठ का सारांश कहने के लिए प्रेरित करें । कक्षा में सत्रानुसार कथाकथन प्रतियोगिता आयोजित करें ।

आर अ ब्राइट स्टुडेंट । यू शुड लर्न हिंदी । सुशांत यू मस्ट पार्टिसिपेट ।”

घर पहुँचने पर सुशांत का उतरा चेहरा देखकर दादा जी समझ गए कि कुछ गड़बड़ है । उन्होंने उसे पास बुलाया । प्यार से पूछने पर सुशांत ने विद्यालय का सारा किस्सा कह सुनाया । सुनकर दादा जी बोले, “बेटा, इसमें परेशान होने की क्या बात है ? हिंदी तो तुम्हें सीखनी ही चाहिए । आज से तुम, हम सबसे हिंदी में ही बात करोगे । तुम बहुत जल्द हिंदी बोलना सीख जाओगे । तुम्हारी टीचर ने तुम्हारे ऊपर इतना विश्वास किया है । यू शुड टेक पार्ट ।” सुशांत बोला, “बट हाऊ ?” दादी बोलीं, “चलो पहले खाना खा लो फिर तुम्हारे दादा जी कोई कुंजी ढूँढ़ेंगे ।”

सुशांत खाना खाकर दादा जी के पास आकर बोला, “दादू ! अब लाओ कोई कुंजी ।” दादा जी ने रोमन लिपि में Bharat, Basta, Dost, Desh, Katha, Hai, Adi शब्द लिखकर सुशांत से पढ़ने के लिए कहा । सुशांत ने पढ़ा– भारट, बस्टा, डोस्ट, डेश, काथा, हाई, आडि । दादा जी समझ गए कि सुशांत की क्या कमजोरी है । उन्होंने इन शब्दों के सही उच्चारण बताए । दादा जी सुशांत को ‘ट, थ, ड, द, स, श’ आदि का उच्चारण कई दिन समझाते रहें । एक दिन दादा जी ने लिखकर सुशांत को पढ़ने के लिए दिया–

Bharat Mera Desh Hai. Ham Sabhee Bhai-Bahan Hain. Ham Sabhee Shanti Se Rahte Hain.

सुशांत ने पढ़ा –भारत मेरा देश है । हम सभी भाई–बहन हैं । हम सभी शांति से रहते हैं ।

दादा जी बोले, “शाबास ! लो खुल गया ताला! मिल गई कुंजी । सुशांत, तुम तो हिंदी अच्छी तरह बोल सकते हो । मैं हिंदी की एक अच्छी कहानी बोलता हूँ । तुम उसे रोमन लिपि (अंग्रेजी) में लिख लो । बार–बार पढ़कर अच्छी तरह ‘प्रैक्टिस’ कर लो और ‘कांपिटिशन’ में सहभाग लो ।”

सुशांत बोला, “एट लास्ट वी हैव गॉट द की ।”

दादा जी बोले, “नहीं, ऐसे बोलो कि आखिर हमें बंद ताले की कुंजी मिल ही गई ।” सुशांत और दादा जी दोनों हँस पड़े ।

हँसने से सुशांत के मन का सारा तनाव दूर हो गया । पोते की आँखों में चमक देखकर दादा जी और दादी जी दोनों समझ गए कि अब सुशांत तैयार हो गया है ।

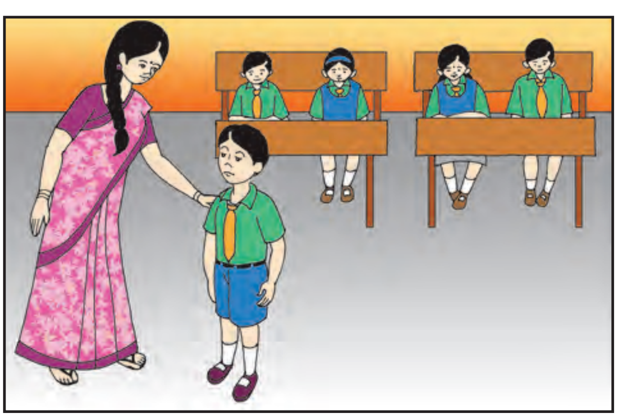

❑ पाठ में आए अंग्रेजी के शब्दों एवं वाक्यों को ढूँढ़ने के लिए कहें । लिप्यंतरण पर चर्चा करें । देवनागरी में लिखे शब्दों/वाक्यों का रोमन लिपि (अंग्रेजी) में एवं रोमन लिपि में लिखे शब्दों/वाक्यों का देवनागरी लिपि (हिंदी) में लिप्यंतरण कराएँ ।

स्वाध्याय

१. अपना प्रिय व्यंजन बनाने की विधि सुनो ।

२. अपनी पसंद के खेल एवं खिलाड़ियों के बारे में बताओ ।

३. भारतीय वृक्षों के बारे में जानकारी पढ़ो और ऐसे पाँच वृक्षों के चित्र कृति पुस्तिका में चिपकाओ ।

४. नीचे लिखे शब्दों और वाक्यों का सूचनानुसार लिप्यंतरण करो : (देवनागरी/रोमन में)

(क) पुस्तक, बिल्ली, कहानी, घर, चाय, दरवाजा, खिड़की, खेत, चारपाई, अहमद, रमा, कबड्डी ।

(ख) Boy, Girl, Sister, Brother, Mother, Father, Pen, Cricket, Maths, Cow.

(ग) सदा सच बोलो ।

हमेशा बड़ों का आदर करो ।

(घ) You should save water.

Milk is good for health.

५. दिए गए उदाहरण के अनुसार एक शब्द के लिए प्रचलित शब्दसमूह बताओ :

जैसे– विद्‌यार्थी–विद्‌या प्राप्ति की इच्छा रखने वाला ।

विद्‌यालय, शिक्षिका, लेखक, वक्ता, सहभागी, दाता, खिलाड़ी, गायक, श्रोता, नेता, अनुवादक ।

६. नीचे दिए गए 'रचनात्मक विचार' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :

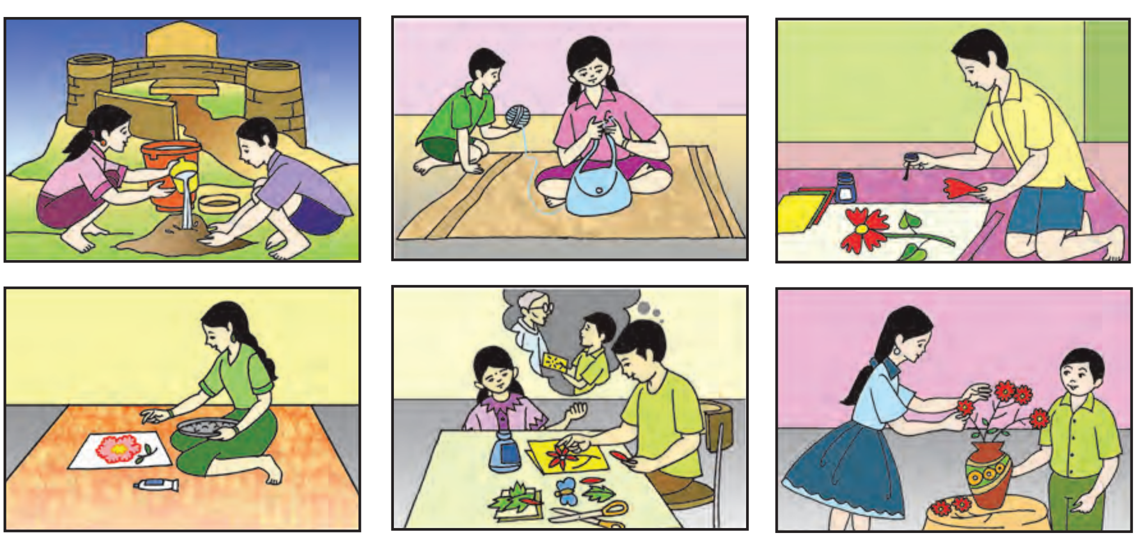

७. शिक्षक ऐसे काम के लिए तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं जो तुमने नहीं, किसी और ने किया है । ऐसे समय तुम क्या करोगे, बताओ ।

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

९. (अ) हम ऐसे बने

✻ पत्तों पर दिए वर्णों से सार्थक संयुक्ताक्षर शब्द बनाओ :

❑ चित्र में आए वर्णों और शब्दों का वाचन करें/कराएँ। संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द बनने की प्रक्रिया पर चर्चा करें। विद्यार्थियों से संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों के वाचन-लेखन का अभ्यास कराएँ। इन शब्दों का उनसे वाक्यों में प्रयोग करवाएँ। दस संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द लिखवाएँ।

● पढ़ो और समझो :

(ब) हमसे नाम बनाओ

* पंचमाक्षरवाली टोपी उचित विदूषक के सिर पर रेखा द्‌वारा रखो और अन्य शब्द बनाओ :

❑ चित्र में आए शब्दों का मुखर वाचन कराएँ । पंचमाक्षरों और उनके अनुस्वार रूप में परिवर्तन की प्रक्रिया पर चर्चा करें । पंचमाक्षरवाले शब्दों के वाचन-लेखन का दृढ़ीकरण करवाएँ । अक्षर लेखन, शिरोरेखा, अक्षरों के आकार, उनकी गोलाई पर मार्गदर्शन करें ।

- पढ़ो, समझो और लिखो :

१०. (अ) विशेषता हमारी

१. रेखा द्‌वारा चित्रों और विशेषणों की जोड़ियाँ मिलाओ :

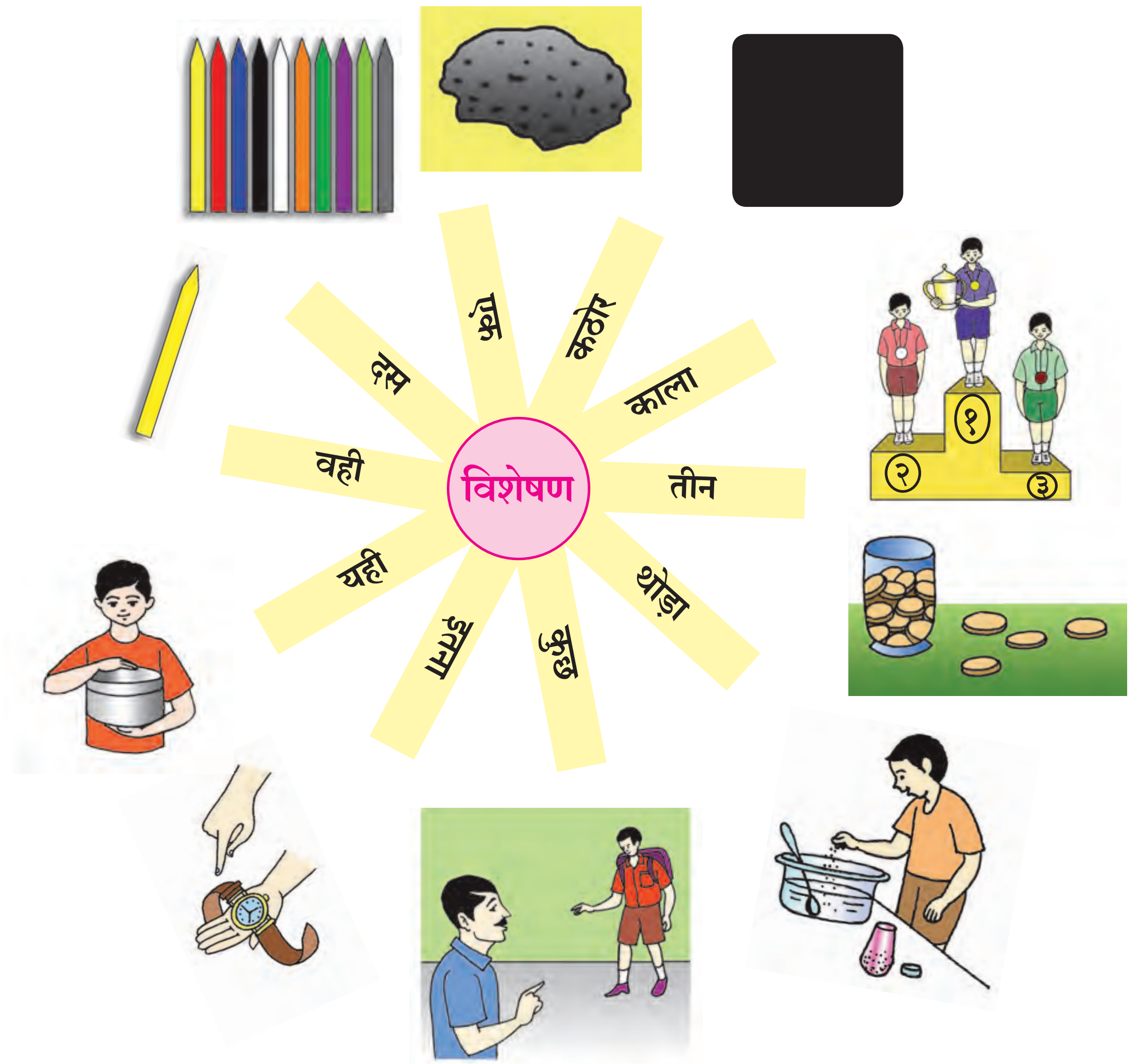

२. निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए विशेषण शब्दों को पहचानकर उनके चारों ओर गोल बनाओ :

(१) सुंदर अक्षर लिखने हैं ।
(२) सफेद कमीज पहनो ।
(३) पाँच फूल खिले हैं ।
(४) मैंने दो पुस्तकें पढ़ीं ।
(५) आज कुछ लोग आएँगे ।
(६) परीक्षा शुरू होने में ज्यादा दिन नहीं हैं ।
(७) यह वही व्यक्ति है ।
(८) अब ये चित्र देखिए ।

❑ ऊपर दिए शब्दों का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । पाठ्यपुस्तक से विशेषणयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें । संज्ञा की विशेषता बताने वाले उपरोक्त विशेषण शब्दों पर चर्चा कराते हुए इनका वाक्यों में प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । अन्य विशेषण शब्द कहलवाएँ ।

(ब) कार्य हमारा

१. रेखा द्‌वारा चित्रों और क्रियाओं की जोड़ियाँ मिलाओ :

२. निम्नलिखित वाक्यों में आई क्रियाओं को पहचानकर उनके चारों ओर गोल बनाओ :

(१) यह पेड़ा लो ।
(२) अमित चित्र रँगो ।
(३) जूही दौड़ती है ।
(४) माँ सोई हैं ।
(५) बंदर को देखकर बच्चे उछल पड़े ।
(६) यात्री आपस में बातें करने लगे ।
(७) माँ ने अलमारी खोल दी ।
(८) दादी जी कहानियाँ सुनाती हैं ।
(९) अध्यापिका ने कविता लिखवाई ।
(१०) मीरा ने कुत्ते को रोटी खिलाई ।

❑ ऊपर आए क्रिया शब्दों का मुखर वाचन कराएँ । क्रिया के प्रयोग पर चर्चा करें । क्रिया शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कराएँ । ऊपर दिए गए उदाहरणों के आधार पर क्रिया के प्रयोग पर चर्चा करें । क्रियाओं के आधार पर विद्‌यार्थियों को वाक्य रचना करने के लिए प्रेरित करें ।

● पढ़ो और गाओ :

११. गुनगुनाते चलो

पाँव में हो थकन, अश्रु-भीगे नयन,
राह सूनी, मगर गुनगुनाते चलो ।

यह न संभव कि हर पंथ सीधा चले,
यह न संभव कि मंजिल सभी को मिले,
वाटिका बीच कलियाँ लगें अनगिनत,
यह न संभव कि हर फूल बनकर खिले ।

यदि न सौरभ मिला तो यही कम नहीं,
राह मधुमास की तुम बनाते चलो ।

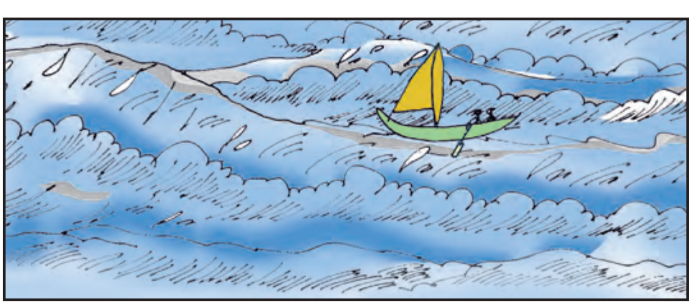

विश्व है एक सागर उमड़ता हुआ,
हर लहर जो उठी है उछलती रहे,
जिंदगी की कहानी यहाँ नाव-सी,
रात-दिन एक पतवार चलती रहे ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल एवं अभिनय के साथ कविता का साभिनय पाठ करें । विद्यार्थियों को कविता की एक-एक पंक्ति का सरल अर्थ बताने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों से पूछें कि उन्हें कविता की कौन-सी पंक्तियाँ बहुत अच्छी लगीं और क्यों ।

साँस भर तुम स्वयं भी चलाते चलो,
थक गए, दूसरों को बढ़ाते चलो ।

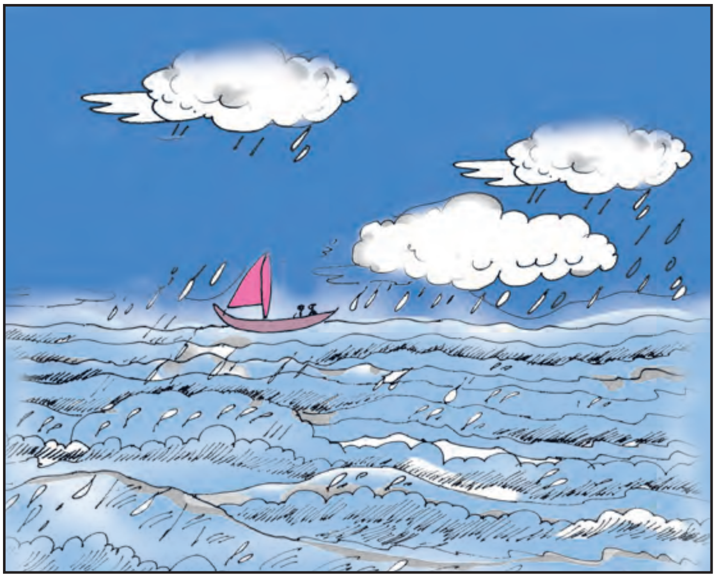

एक सागर किसी के लिए कम यहाँ,
एक कण के लिए अन्य तरसा करें,
सूखते जिंदगी के सरोवर रहें,
सागरों पर महामेघ बरसा करें ।

यह दोहरी प्रणाली चलेगी नहीं,
इसलिए धार को सम बहाते चलो ।

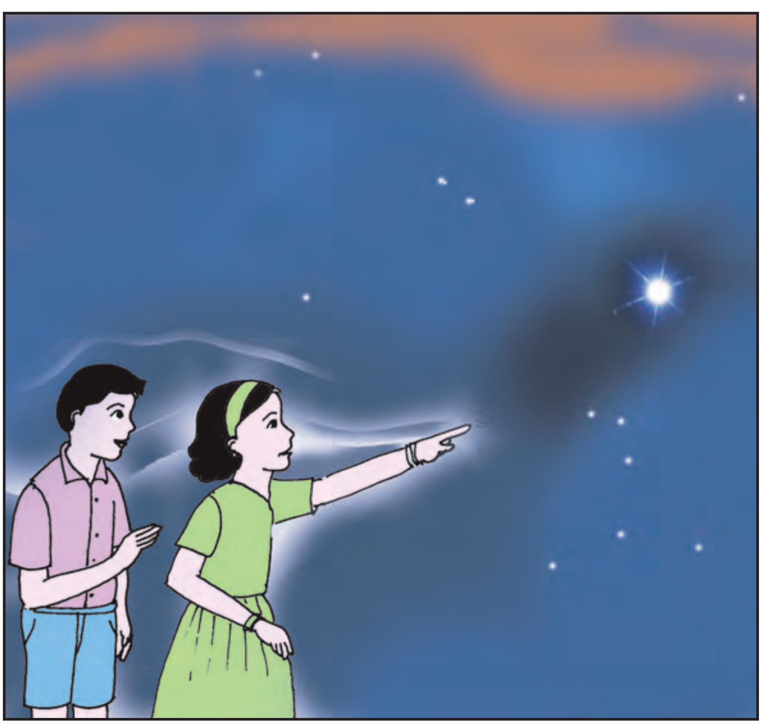

कुछ तुम्हारे सहारे खड़े राह पर,
कुछ सहारा तुम्हारे लिए चाहिए,
एक तारा बनो दूसरों के लिए,
एक तारा तुम्हारे लिए चाहिए ।

– श्रीपाल सिंह 'क्षेम'

❑ विद्यार्थियों से कविता में आए भावों पर चर्चा करें/कराएँ । समता, बंधुता, न्याय जैसे गुणों को अपनाने हेतु प्रेरित करें । 'पाँव में हो थकन, अश्रु भीगे नयन' के आधार पर चित्र बनाने के लिए कहें । कविता में आए सर्वनाम एवं क्रिया शब्दों की सूची बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा' सुना हुआ यह गीत लय-ताल के साथ सुनाओ ।

२. इस कविता के भाव पर आधारित दूसरी कविता बोलो।

३. कविता में आए नए शब्द पढ़ो ।

४. स्व रचना द्‌वारा कविता पूर्ण करो :

समय था प्रातःकाल, पूरब..............., ...थी चिड़ियाँ, ... सूरज बाल ।
बरसे बादल झमक-झमक, मोर नाचे........., बिजली तड़के........., दिल मेरा धड़के .... ।

५. निम्नलिखित परिच्छेद पढ़ो उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखो :

मंगल सौर परिवार में चौथा ग्रह है । इसे 'लाल ग्रह' भी कहते हैं क्योंकि यह लाल रंग का दिखता है । पृथ्वी और मंगल की कई बातें एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं । पृथ्वी के समान मंगल भी धरातलीय ग्रह है अर्थात इसपर खड़े हो सकते हैं । इसका वातावरण घना नहीं अपितु विरल है । वहाँ दिन की लंबाई २४ घंटे है और एक वर्ष पृथ्वी के लगभग ६८७ दिनों के बराबर होता है । पृथ्वी जैसे मौसमी चक्र मंगल पर भी होते हैं । भविष्य में मंगल पर मानव-सभ्यता बसने की संभावना है ।

प्रश्न : १. मंगल को क्या कहते हैं और क्यों ?

२. मंगल ग्रह का वातावरण कैसा है ?

३. एक वर्ष की अवधि में मंगल पर कितने दिन होते हैं ?

४. मंगल और पृथ्वी की कौन-कौन-सी बातें समान हैं ?

६. नीचे दिए गए 'विनम्रता' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :

७. तुम्हारे मित्रों के दो समूहों में झगड़ा हो रहा है । ऐसे में तुम क्या करोगे, बताओ ।

● पढ़ो, समझो और बताओ :

१२. अद्‌भुत वीरांगना

मेवाड़ में अनेक बहादुर और साहसी राजा हुए हैं । इनमें एक थे– राणा संग्रामसिंह ।

उनका चचेरा भाई बनवीर बड़ा धूर्त, चालाक और महत्त्वाकांक्षी प्रकृति का व्यक्ति था । राणा संग्रामसिंह की झूठी-सच्ची प्रशंसा करके वह उनका विश्वासपात्र बन बैठा । राणा संग्रामसिंह राज्य और परिवार के सभी विषयों पर बनवीर से विचार-विमर्श करते तथा उसके सुझाव को बड़ा महत्त्व देते थे ।

धीरे-धीरे बनवीर इतना प्रभावशाली हो गया कि राजपुरोहित, सेनापति तथा महामंत्री तक उससे भयभीत रहने लगे । बनवीर ने दुष्ट, बेईमान और धूर्त राजकीय कर्मचारियों का एक दल बना लिया । इस दल के लोग मेवाड़ की प्रजा का खुलकर शोषण करते थे, भोले-भाले लोगों पर अत्याचार करते थे किंतु बनवीर के प्रभाव के कारण उन्हें कोई कुछ नहीं कह पाता था । इसी समय बनवीर की सेवाओं से प्रसन्न होकर राणा संग्रामसिंह ने बनवीर को मेवाड़ का महामंत्री बना दिया । इससे बनवीर की शक्ति और बढ़ गई । वह राणा संग्रामसिंह के बाद मेवाड़ का सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति बन बैठा ।

कुछ समय बाद राणा संग्रामसिंह की मृत्यु हो गई । उनके एकमात्र पुत्र उदयसिंह को युवराज घोषित कर दिया गया । उस समय वे बहुत छोटे थे । बनवीर अपने प्रभाव द्‌वारा उदयसिंह का संरक्षक बन बैठा ।

बनवीर मेवाड़ का शासक बनना चाहता था । उसके रास्ते का बस एक ही काँटा था– युवराज उदयसिंह । बनवीर ने अपने सहयोगियों को लालच दिया कि यदि वह मेवाड़ का शासक बन जाएगा तो उन्हें ऊँचे-ऊँचे पद देगा । बनवीर के साथी भी उसकी तरह धूर्त और लालची थे । सभी ने मिलकर एक भयानक निर्णय लिया-युवराज उदयसिंह की हत्या का निर्णय !

बनवीर के सहयोगियों में एक राजकीय सेवक कट्टर राजभक्त था । इस सेवक ने जब युवराज उदयसिंह की हत्या के संबंध में सुना तो सीधा पन्ना

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । पाठ में आए मूल्यों पर चर्चा करें, प्रश्न पूछें । कहानी में आए एक-एक पात्र के स्वभाव के बारे में विद्यार्थियों को बारी-बारी से बताने के लिए प्रेरित करें ।

के पास पहुँचा और उन्हें सारी बातें बताई ।

पन्ना युवराज उदयसिंह की धाय थीं और उसे अपने पुत्र की तरह स्नेह करती थीं । पन्ना को जब युवराज उदयसिंह की हत्या के षडयंत्र की जानकारी मिली तो वे कुछ समय के लिए

किंकर्तव्यविमूढ़-सी हो गईं । अंत में उन्होंने युवराज को बचाने के लिए एक लोमहर्षक बलिदान देने का निर्णय लिया ।

पन्ना ने एक टोकरे में युवराज को लिटाया । ऊपर से जूठी पत्तलें भर दी, स्वामिभक्त सेवक को आवश्यक निर्देश देकर युवराज को एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के लिए कहा ।

बनवीर ने महल के उस भाग पर भारी पहरा बैठा दिया था, जहाँ पन्ना और उदयसिंह थे । यह दिन का समय था । बनवीर रात को युवराज उदयसिंह की हत्या करना चाहता था । अतः उसने दिन के समय युवराज की निगरानी के विशेष आदेश दिए थे ।

स्वामिभक्त सेवक को इन सभी बातों की पूरी जानकारी थी । वह महल के कई गुप्त रास्तों से भी परिचित था अतः उसे युवराज उदयसिंह को महल के बाहर ले जाने में कोई परेशानी नहीं हुई । सेवक सफाई कर्मचारी के वेश में था इसलिए कोई भी उसे पहचान न सका ।

इधर युवराज उदयसिंह को महल के बाहर भेजने के बाद पन्ना ने उसी आयु के अपने बेटे चंदन को युवराज के कपड़े पहनाए । उसे उसी पलंग पर सुला दिया जिस पर कुछ समय पूर्व युवराज उदयसिंह लेटे थे ।

पन्ना जानती थीं कि वे युवराज उदयसिंह को बचाने के लिए अपने बेटे का बलिदान देने जा रही हैं । पन्ना का हृदय हाहाकार कर उठा । एक ओर स्वामिभक्ति और दूसरी ओर माँ की ममता । अंत में पन्ना ने धैर्य और साहस से काम लिया और अपने बेटे को युवराज उदयसिंह के पलंग पर देखकर वह इस प्रकार सामान्य कार्यों में व्यस्त हो गईं जैसे उन्हें राजमहल में होने वाले षडयंत्रों की कोई जानकारी ही न हो ।

तभी अचानक अपने हाथ में तलवार लिए बनवीर ने युवराज उदयसिंह के कक्ष में प्रवेश किया ।

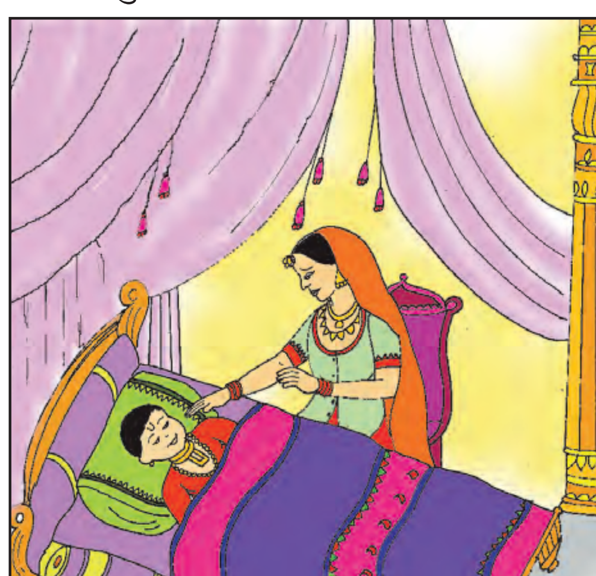

❑ कहानी में संज्ञाओं की विशेषता बताने वाले शब्द खोजने के लिए कहें । विशेषणयुक्त अन्य वाक्यों की रचना करवाएँ । ऐतिहासिक वीरांगनाओं के नामों की सूची बनवाएँ । विद्यार्थियों से किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन करवाकर एक-दूसरे से जाँच करवाएँ ।

उसने आते ही कठोर आवाज में पन्ना से पूछा– "उदयसिंह कहाँ है ?"

पन्ना कुछ क्षण तो ठगी–सी खड़ी रहीं फिर उन्होंने हृदय पर पत्थर रखकर युवराज उदयसिंह के पलंग पर लेटे हुए अपने बेटे की ओर इशारा कर दिया ।

बनवीर ने एक बार अपने चारों ओर देखा और फिर बड़ी निर्दयता से राजकुमार समझकर उसने चंदन की हत्या कर दी । युवराज उदयसिंह के कक्ष में एक भयानक चीख उभरी और फिर कुछ ही क्षणों में सब शांत हो गया । बनवीर के चेहरे पर एक विजयपूर्ण मुसकान आ गई । उसने सोचा कि उसके मेवाड़ नरेश बनने के मार्ग का एकमात्र काँटा दूर हो गया ।

पन्ना अभी तक बुत बनी हुई थीं । बनवीर के जाते ही वह फूट–फूटकर रो पड़ीं । उनके सामने उनके एकमात्र पुत्र की हत्या कर दी गई और वे कुछ न कर सकीं । पन्ना बड़ी देर तक पड़ी रोती रहीं । अगले दिन उन्होंने युवराज बने अपने बेटे का दाह संस्कार कराया और फिर चुपचाप उस स्थान पर आ पहुँची, जहाँ युवराज उदयसिंह थे ।

पन्ना ने युवराज उदयसिंह का बड़ी सावधानी से पालन–पोषण किया । उन्होंने एक ओर उदयसिंह को बनवीर की नजरों से दूर रखा और उन्हें युवराज के समान शिक्षित किया ।

बड़े होने पर युवराज उदयसिंह ने मेवाड़ की राजगद्दी प्राप्त की और युवराज उदयसिंह से राणा उदयसिंह बने । राणा उदयसिंह ने जीवन भर पन्ना का उपकार माना और जब तक पन्ना जीवित रहीं, उन्हें माता का सम्मान दिया ।

आज न पन्ना है न उदयसिंह किंतु एक वीरांगना के रूप में आज भी भारतवासी पन्ना को याद करते हैं । वीरांगना पन्ना का नाम सुनते ही हम भारतीयों के मस्तक उनके प्रति श्रद्‌धा से झुक जाते हैं ।

– डॉ. परशुराम शुक्ल

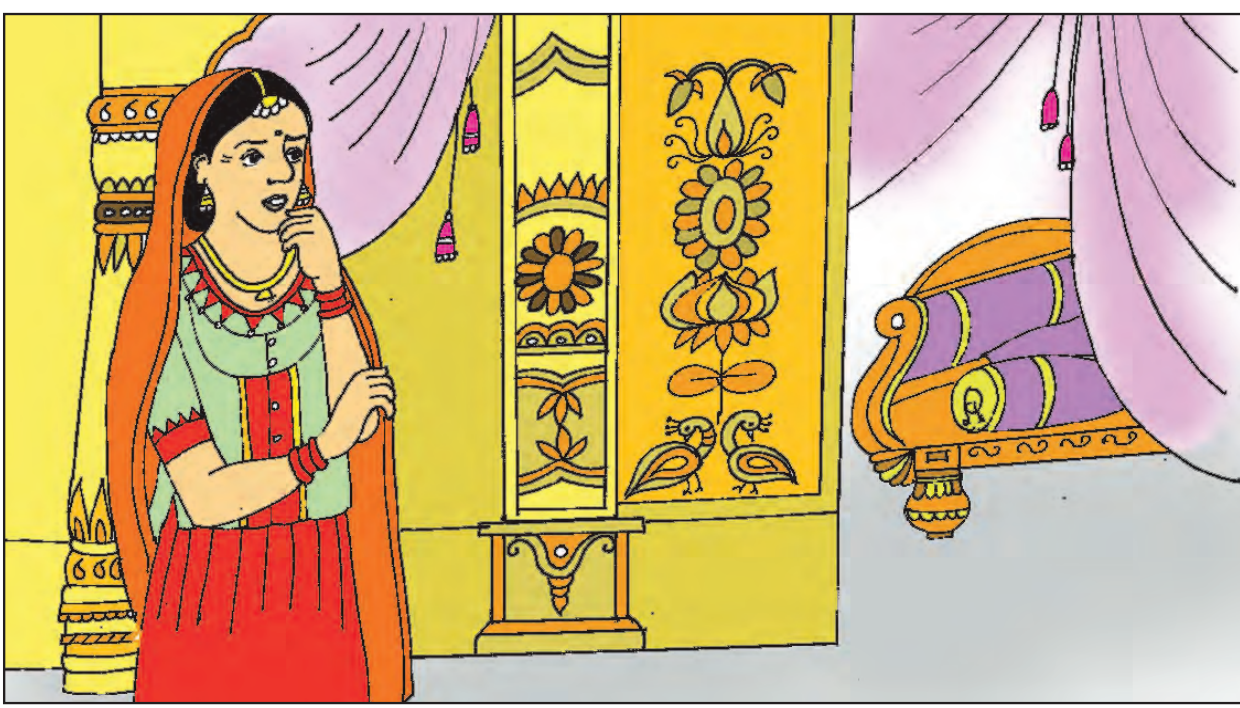

- कहानी में आए मुहावरे ढूँढ़ने के लिए कहें । 'अपने देश में अब राजा, युवराज क्यों नहीं होते,' इस विषय पर विद्यार्थियों से चर्चा करें/कराएँ । पढ़ी हुई ऐतिहासिक कहानी अपने शब्दों में लिखने के लिए कहें । उपसर्ग–प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढ़ने के लिए कहें ।

स्वाध्याय

१. **किसी महिला क्रांतिकारी के बारे में सुनी हुई कोई कहानी सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित राज्यों के नाम उत्तर से दक्षिण दिशा के क्रम में बताओ :**

१. तेलंगाना   २. पंजाब   ३. उत्तर प्रदेश   ४. जम्मू-कश्मीर   ५. केरल

३. **जमीन पर रेंगने वाले प्राणियों से संबधित जानकारी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) बनवीर कौन था ? उसका स्वभाव कैसा था ?

(ख) राणा संग्रामसिंह बनवीर से किन विषयों पर विचार-विमर्श करते थे ?

(ग) पन्ना ने युवराज उदयसिंह को कैसे बचाया ?

(घ) युवराज उदयसिंह को महल के बाहर भेजने के बाद पन्ना ने क्या किया ?

(ङ) भारतीयों के मस्तक किसके प्रति श्रद्‌धा से झुक जाते हैं ?

५. **अनेकार्थक शब्दों को पढ़ो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो :**

- धन < जोड़, संपत्ति
- नाना < विविध, माँ के पिता जी
- उत्तर < एक दिशा, जवाब
- पानी < जल, चमक
- फल < कोई एक फल, परिणाम
- वार < दिन, प्रहार
- सर < तालाब, सिर
- लक्ष्य < निशाना, उद्‌देश्य
- सुर < स्वर, देवता
- हार < माला, पराजय

६. **'भावना का समायोजन' संबंधी नीचे दिए गए चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

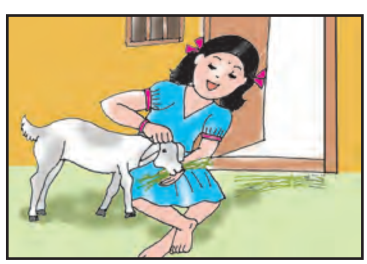

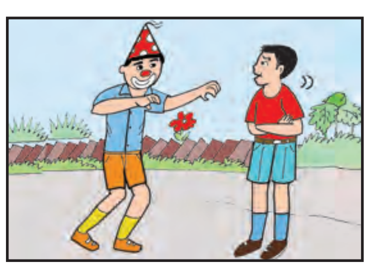

७. **यदि तुम्हें एक दिन के लिए कक्षा प्रमुख (मॉनिटर) बना दिया जाए तो अपनी कक्षा में किस तरह के बदलाव करना चाहोगे, बताओ ।**

● **देखो, समझो और लिखो :**

१३. साइकिल

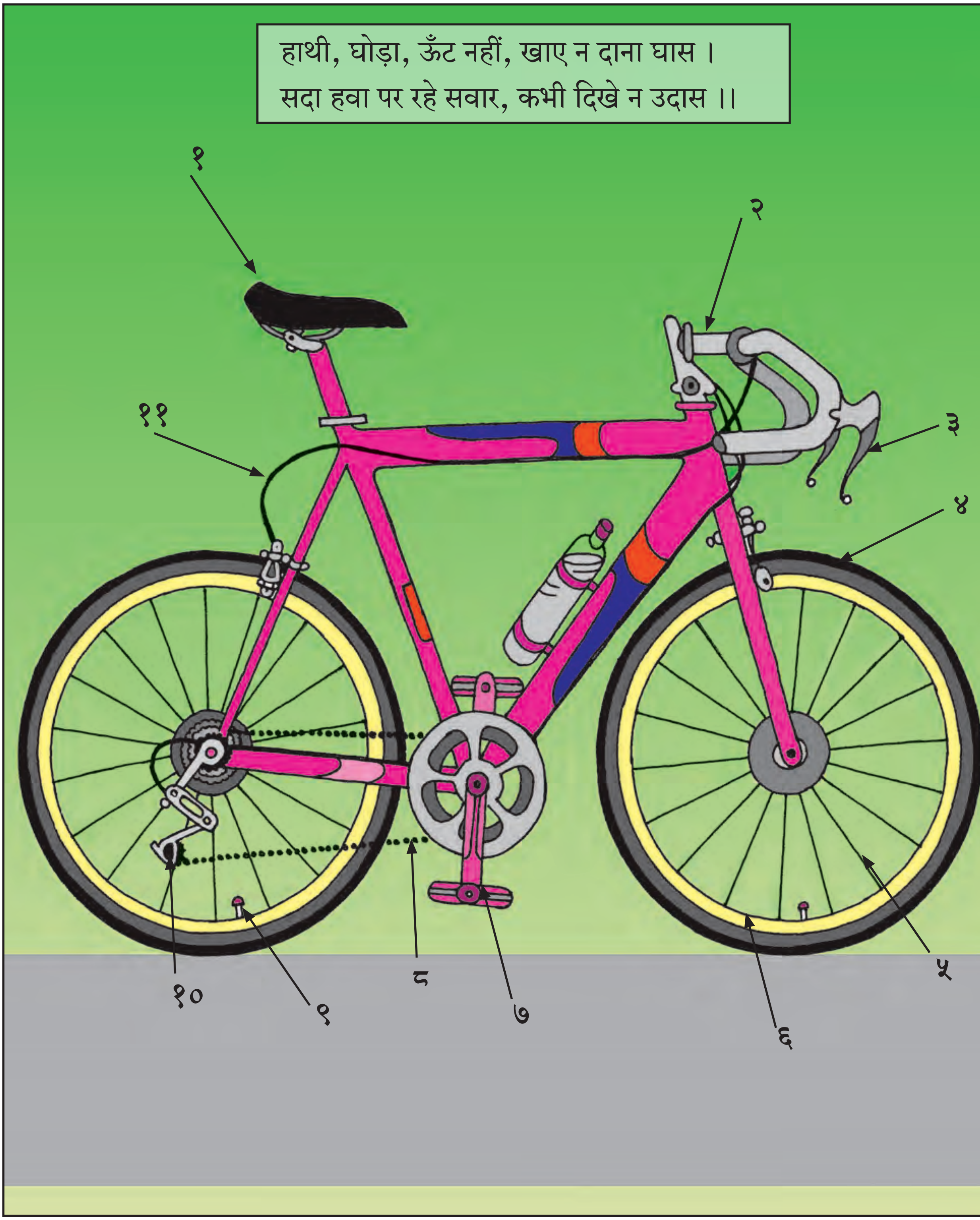

❑ ऊपर दिए गए चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । साइकिल के पुर्जों के नाम पूछकर लिखवाएँ । साइकिल के चित्र पर आधारित आठ से दस वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें । साइकिल चलाने के बारे में उनका अपना अनुभव बताने के लिए कहें ।

● पढ़ो और बोलो :

१४. महाराष्ट्र दिवस

उत्कर्ष – नर्गिस, प्रेरणा, पैट्रिक सभी शीघ्र यहाँ आओ ।

प्रेरणा – कहो भाई, क्या काम है ?

उत्कर्ष – १ मई याने महाराष्ट्र दिवस समीप आ रहा है । इसी दिन १९६० में महाराष्ट्र राज्य का गठन हुआ था । १ मई दुनिया भर में 'श्रमिक दिन' के रूप में भी मनाया जाता है । इस उपलक्ष्य में आओ हम कुछ अनूठा सोचें और कोई सामाजिक कार्य करें ।

पैट्रिक – सही बात है । अब बताओ ! हमें क्या-क्या कार्य करना चाहिए ?

प्रेरणा – ऐसा करते हैं कि गाँव की कुछ कर्मठ महिलाओं का पुष्पगुच्छ देकर सम्मान करते हैं और फिर किसी विदुषी का व्याख्यान भी रखते हैं ।

पैट्रिक – सुझाव तो ठीक है पर कर्मठ महिलाओं के सम्मान से महाराष्ट्र दिन का क्या संबंध है ?

प्रेरणा – कमाल करते हो भाई, क्या महाराष्ट्र के उत्थान में महिलाओं का योगदान नहीं है ?

नर्गिस – अरे ! महिलाओं ने इस दिशा में पुरुषों के कंधे-से-कंधा मिलाकर योगदान दिया है ।

पैट्रिक – क्षमा करो भाई, मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं था ।

प्रेरणा – चलो ठीक है, अब इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं है ।

पैट्रिक – बात तो ठीक है पर अपने मित्र फरहान और क्रिस्टो नहीं दिखाई पड़ रहे हैं ।

(इतने में दोनों आते दिखाई पड़ते हैं ।)

प्रेरणा – देखो, वे दोनों भी आ गए ।

फरहान – माफ करना मित्रो, एक पक्षी प्यास से व्याकुल होकर गिर गया था । उसके लिए पानी

❑ पाठ का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से पाठ का वाचन कराएँ । संवाद का नाट्यीकरण कराएँ । किसी कार्यक्रम के लिए कौन-कौन-सी तैयारियाँ करनी चाहिए; इसपर चर्चा करें । विद्यार्थियों को महाराष्ट्र की प्रमुख विशेषताएँ बताने के लिए प्रेरित करें ।

का प्रबंध करके ही हम यहाँ आए हैं । उसी की देखभाल में हमें देर हो गई ।

पैट्रिक – कोई बात नहीं मैं तुम दोनों को सारी बातें समझा दूँगा ।

उत्कर्ष – तो फिर अपना कार्यक्रम पक्का रहा । अब तय करो कि सम्मान किन-किन महिलाओं का हो और प्रमुख वक्ता के रूप में किसे आमंत्रित करें ?

नर्गिस – प्रमुख वक्ता के रूप में तो जिला परिषद कन्या विद्‌यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती कस्तूरी जी को आमंत्रित किया जाना चाहिए ।

पैट्रिक – गाँव की महिला पुलिसकर्मी, बैंक की मैनेजर, समाजसेविका, महिला गृह उद्‌योग की संचालिका और बचत समूह की प्रमुख को सम्मानित करना चाहिए । साथ ही आटा चक्की चलाने वाली महिला और किसी महिला कंडक्टर का नाम भी जोड़ दें ।

उत्कर्ष – कार्यक्रम शाम को छह बजे खुली हवा में और गाँव के मैदान में हो तो कैसा रहेगा ?

प्रेरणा – बहुत बढ़िया ! चलो, अब सबको आमंत्रित करना शुरू कर दें ।

नर्गिस – हाँ बिलकुल, हम लोगों के पास समय बहुत कम है । मंच और गुलदस्तों की भी व्यवस्था करनी है ।

पैट्रिक – अभी से काम में जुट जाएँ तो निर्धारित समय के भीतर सब हो जाएगा ।

उत्कर्ष – कहते हैं न, जहाँ चाह, वहाँ राह ।

(१ मई को कार्यक्रम संपन्न हुआ । महाराष्ट्र दिवस पर आयोजित इस अनूठे कार्यक्रम की सभी ने दिल खोलकर प्रशंसा की ।)

– प्रीति

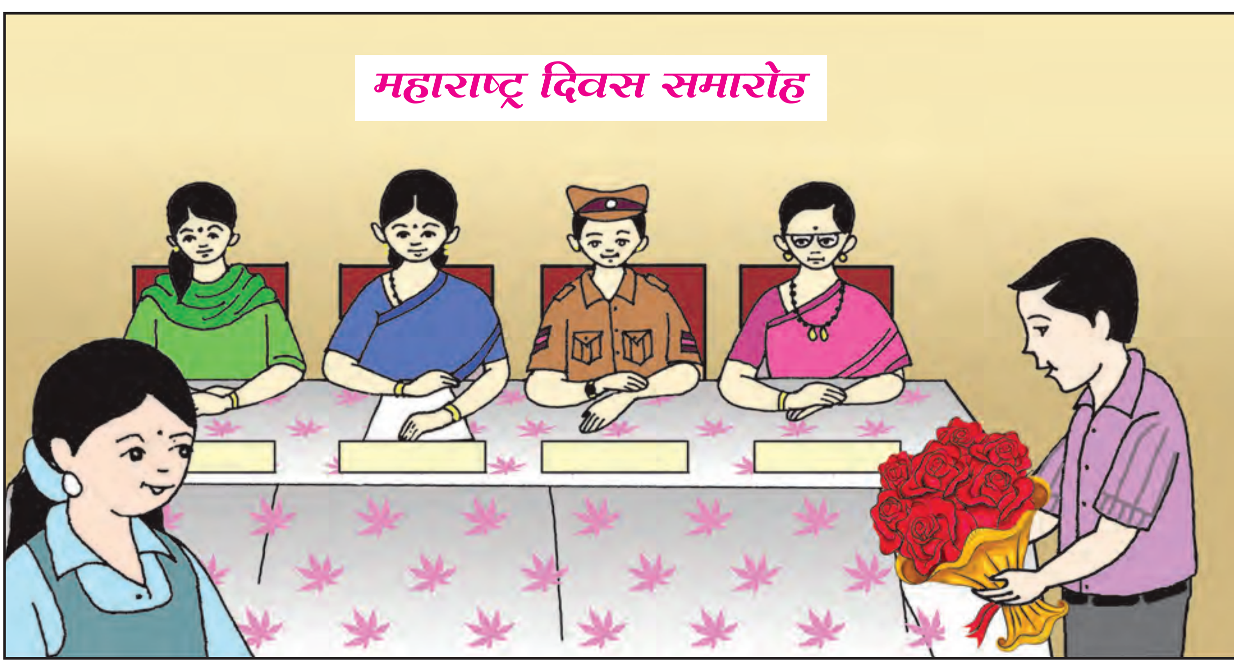

❑ 'महाराष्ट्र दिवस' और 'श्रमिक दिवस' पर चर्चा करें । महाराष्ट्र के महापुरुषों/महिलाओं के नाम पूछें । पाठ के संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का लेखन कराएँ । पाठ में कौन-कौन-से विरामचिह्न आए हैं, पूछें, चर्चा करें और विद्‌यार्थियों से इनका लिखित अभ्यास कराएँ ।

स्वाध्याय

१. **किसी राष्ट्रीय पर्व पर सुने हुए भाषण का सारांश सुनाओ ।**

२. **स्वच्छता के महत्त्व पर संक्षिप्त भाषण तैयार करके बोलो ।**

३. **सार्वजनिक स्थानों के सूचना फलक पर लिखी सूचनाएँ पढ़ो ।**

४. **एक वाक्य में उत्तर लिखो :**

(क) महाराष्ट्र राज्य का गठन कब हुआ ?

(ख) बच्चों ने प्रमुख वक्ता के रूप में किसे आमंत्रित किया ?

(ग) महाराष्ट्र दिवस के कार्यक्रम में किन-किन महिलाओं का सम्मान करना तय हुआ ?

(घ) महाराष्ट्र दिवस का कार्यक्रम कहाँ संपन्न हुआ ?

(ङ) इस संवाद के पात्रों के नाम लिखो ।

५. **सूचनानुसार काल परिवर्तन करके पुनः लिखो :**

(च) तितली फूल पर दिखाई देती है । (भूतकाल)

(छ) बाहर का खाना खाकर बच्चे बीमार हो जाएँगे । (वर्तमानकाल)

(ज) सोनू दादा जी की बात सुनता था । (भविष्यकाल)

(झ) बच्चों ने दुकानदार से रुपये गिनकर लिए । (वर्तमानकाल)

(ञ) सत्य बोलने वाले की हमेशा विजय होती है । (भविष्यकाल)

६. **'कर्मठता' संबंधी नीचे दिए गए चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

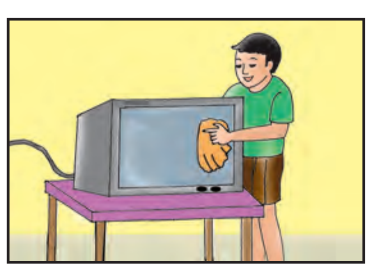

७. **गेंद ऊपर फेंको । तुम्हें उसे पकड़ना है । गेंद को ऊपर से नीचे आते देखकर तुम्हारे मन में क्या कोई विचार उठता है ? यदि हाँ तो कौन-सा, बताओ ।**

● सुनो, पढ़ो और लिखो :

१५. खज्जियार– भारत का स्विट्ज़रलैंड

"पापा, आपको पता है मेरी क्लास में रिया है ना, वह अपने मम्मी–पापा के साथ अभी सिंगापुर घूमकर आई है ।" खाना खाते–खाते अंबा ने पापा को बताया । "हाँ पापा और जो मेरा दोस्त है न अभिनव; वह भी अभी दुबई घूमकर आया है । पापा, हमें भी जाना है घूमने.... पिछली छुट्टियों में भी आप कहीं नहीं ले गए थे ।" अर्पण भी पीछे नहीं रहा ।

पापा ने कौर तोड़ा, "जाएँगे बेटा, जरूर जाएँगे ।" अंबा और अर्पण दोनों ने एक साथ चम्मच से थाली बजाई, "हाँ पापा ! और इस बार तो हम स्विट्ज़रलैंड ही जाएँगे चाहे कुछ भी हो जाए ।" पापा चौंक गए, "अरे स्विट्ज़रलैंड क्यों भाई, भारत में ही कहीं घूमने चलेंगे... ।"

"नहीं ।" दोनों ने एक साथ कहा, "अब तो हमें स्विट्ज़रलैंड घूमने जाना है तो जाना है ।" पापा ने खाना समाप्त कर उठते हुए कहा, "अच्छा भाई चलेंगे, स्विट्ज़रलैंड चलेंगे....।" एक दिन पापा ने आकर खुशखबरी सुनाई, "बच्चो ! तुम लोग कह रहे थे न स्विट्ज़रलैंड जाना है तो चलो इस बार तुम्हें स्विट्ज़रलैंड घुमा ही लाते हैं ।" "हुर्रे !" अंबा और अर्पण जोर से चिल्लाए । पापा ने बीच में टोका, "अरे–अरे ! पूरी बात तो सुनो, स्विट्ज़रलैंड नहीं मिनी स्विट्ज़रलैंड ।" बच्चे आश्चर्यचकित हो गए, "मिनी स्विट्ज़रलैंड !" पापा ने कहा, "हाँ ! अब ज्यादा सवाल–जवाब मत करो, पैकिंग करो । हाँ, पैकिंग में ऊनी कपड़े भरपूर रख लेना क्योंकि वहाँ ठंड बहुत होगी ।"

निश्चित दिन रेल द्‌वारा वे पठानकोट पहुँचे । वहाँ से उन्होंने एक टैक्सी किराए पर ली और चल पड़े मिनी स्विट्ज़रलैंड की तरफ । अंबा ने आश्चर्य से पूछा, "पापा, भारत में भी स्विट्ज़रलैंड है !" इससे पहले कि पापा कुछ कहते अर्पण ने अपना ज्ञान बघारा, "है ना, तुझे पता नहीं क्या, भारत है ही इतना सुंदर कि यहाँ स्विट्ज़रलैंड देखकर स्विट्ज़रलैंड वालों ने अपने देश का नाम स्विट्ज़रलैंड रख लिया था ।" मम्मी–पापा दोनों हँस पड़े ।

अंबा ने बोर्ड देखा उसपर लिखा था

❑ प्रथम परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्‌यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । पाठ के आधार पर विद्‌यार्थियों को खज्जियार यात्रा का वर्णन करने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए नए एवं संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का श्रुतलेखन कराएँ ।

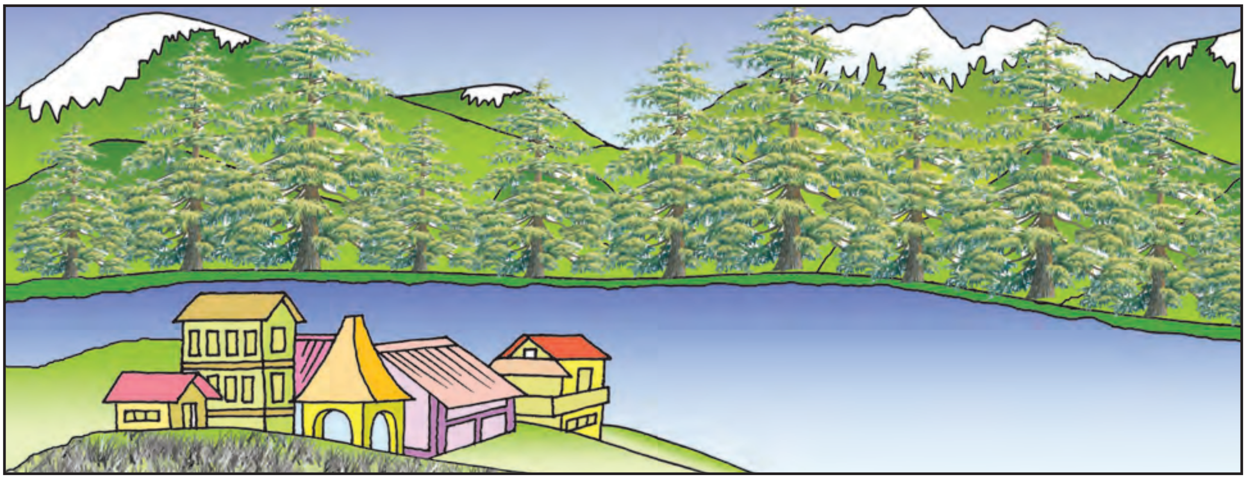

–'खज्जियार' में आपका स्वागत है । पापा ने कहा, "लो जी, आ गए हम अपने स्विट्ज़रलैंड में ।" अर्पण ने कुछ रूठे से स्वर में कहा, "यहाँ तो 'खज्जियार' लिखा हुआ है ।" पापा ने हँसकर उसके दोनों गाल दबा दिए, "हाँ तो, यही तो है अपना 'मिनी स्विट्ज़रलैंड !' देखो कितना खूबसूरत है । हरी–भरी वादियाँ, पहाड़ियाँ, बादल, बर्फ ....!"

दोनों ने देखा पर कुछ बोले नहीं । पापा ने वहाँ 'हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम' के होटल 'देवदार' में पहले से ही बुकिंग करवा ली थी । वे सीधे वहीं पहुँचे । सुंदर कमरा और खिड़की से दिखाई देते बाहर के दृश्य, मम्मी तो मंत्रमुग्ध–सी उन दृश्यों का आनंद ले रही थीं । उन सबको भूख भी लग रही थी । बाद में वे बाहर आए और एक रेस्टोरेंट में खाना खाया और फिर घूमने निकले ।

पापा ने बताया, "बच्चो, तुम्हें पता है इसे मिनी स्विट्ज़रलैंड नाम क्यों, कब और किसने दिया ?" ठंड से काँपते–बजते दाँतों के बीच दोनों ने कहा, "नहीं... !" अब की मम्मी ने कहा, "ये यहाँ–वहाँ बिखरी इसकी सुंदरता तो तुम देख रहे हो ना । हरी–भरी धरती, नीला अंबर, देवदार के विशाल वृक्ष, बर्फ इन सबकी वजह से इसे स्विट्ज़रलैंड का दर्जा दिया गया है ।"

"तुम्हें पता है ७ जुलाई १९९२ को भारत में 'चांसरी ऑफ स्विट्ज़रलैंड' के वाइस काउंसलर ब्लेजर ने 'खज्जियार' को स्विट्ज़रलैंड का खिताब दे डाला । अच्छा अर्पण, तुम बताओ स्विट्ज़रलैंड की राजधानी का नाम क्या है... ?"

अर्पण सोच में पड़ गया । पापा ने वहाँ लगा एक बोर्ड दिखाया, "देखो, इसपर सब लिखा है ।" अर्पण ने देखा, "बर्न्स ! स्विट्ज़रलैंड की राजधानी बर्न्स है ।" उसने आगे पढ़ा "और खज्जियार से बर्न्स की दूरी ६१९४ किमी है ।" अर्पण हैरानी से बोला, " ओ पापा ! इतनी दूर है स्विट्ज़रलैंड !" अंबा बीच में कूदी, "और नहीं तो क्या बगल में धरा है !" पापा ने मुस्कुराते हुए अंबा की चोटी हिला दी फिर बोले, "यहाँ के जो काउंसलर थे न, खज्जियार से एक पत्थर ले गए थे जिसे स्विस संसद के नजदीक लगाया गया ताकि वहाँ के लोग भारत में बसे इस 'मिनी स्विट्ज़रलैंड' को याद करते रहें ।"

अर्पण ने पूछा, "पर यहाँ पर बस यही सब है ? क्या और कोई देखने लायक जगह नहीं हैं ?"

❑ पाठ में आए प्राकृतिक दृश्य, मंदिर और नदी पर चर्चा करें । खाना, सोना, धरा जैसे शब्दों के भिन्नार्थी शब्द लिखने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए विशेषणयुक्त शब्दों की सूची बनवाएँ । विशेषण एवं संज्ञा शब्दों का वर्गीकरण कराके पुस्तिका में लिखवाएँ ।

पापा ने कहा, "हैं ना, चलो सबसे पहले तुम्हें खज्जियार बीच दिखाते हैं ।" वहाँ पहुँचते ही दोनों के मुँह से निकला 'वाह मजा आ गया !' बीच पर मस्ती कर, गरमागरम कॉफी पीकर वे लोग चले 'खज्जी नाग मंदिर' की तरफ ।

अंबा को साँपों से बड़ा डर लगता था । वह तो नाम सुनकर ही बोली, "मैं नहीं जाऊँगी वहाँ साँपों के पास ।" पापा ने समझाया, "असली साँप थोड़े ही हैं ? तुम साँप मत देखना, तुम तो मंदिर की वास्तुकला देखना ।" वाकई मंदिर की शैली अद्‌भुत थी । इसे देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं । कहा जाता है कि पुनर्निर्मित इस मंदिर में पांडवों ने हारे हुए कौरव सैनिकों को बाँधकर रखा था जिनकी छवियाँ छत से लटकती नजर आती हैं । अंबा डरकर अर्पण से चिपक गई, "भैया, क्या ये भूत हैं ?" अर्पण ने बहादुरी दिखाई, "हट पागल ! भूत-वूत कुछ नहीं होते, सब ऐसे ही कहते हैं । है ना पापा ......?"

पापा ने कहा, "बिलकुल सही बेटा ! फिर भी तुम्हें कुछ ऐसे खंडहर भी दिखाते हैं जिन्हें भूत बंगला बताकर उन्हें और डरावना बना दिया जाता है ।" अंबा और अर्पण ने वहाँ जाकर आवाजें निकाली और एक-दूसरे को 'भूत-भूत' कहकर डराया और वहाँ से फिर होटल चले आए ।

दूसरे दिन सुबह बर्फ पर स्कीइंग की, बर्फ के गोले एक-दूसरे पर फेंककर खूब मजे लिए । खेलते-खेलते वे कई बार गिरे पर चोट बिलकुल नहीं लगी । इससे उन्हें और ज्यादा मजा आया ।

अब वे निकले डलहौजी की तरफ जो खज्जियार से २४ किमी की दूरी पर है । रावी, चिनाब एवं दिवाशा नदी की चाँदी के समान धवल धाराओं के बीच बसे डलहौजी को अंग्रेज गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने स्वास्थ्य एवं सेहत को ध्यान में रखते हुए बसाया था । वहाँ की हरीतिमा, प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटक स्थल देखने के बाद वे लोग वापस लौट आए राजधानी दिल्ली । अब अर्पण और अंबा के पास अपने ही देश में बसे मिनी स्विट्‌जरलैंड के बारे में अपने दोस्तों को बताने के लिए ढेर सारी जानकारियाँ थीं ।

– डॉ. ममता मेहता

❑ पाठ में आए विराम चिह्नों का निरीक्षण कराएँ । विरामचिह्न रहित परिच्छेद देकर इन चिह्नों का दृढ़ीकरण कराएँ । महाराष्ट्र के दर्शनीय स्थलों की सूची बनवाएँ । उन्हें अपनी पसंद के किसी दर्शनीय स्थल का वर्णन लिखने के लिए प्रोत्साहित करें ।

स्वाध्याय

१. **अपने मित्र से गाँव की यात्रा संबंधी उसका अनुभव सुनो ।**

२. **सैर पर जाने के पूर्व कौन-कौन-सी तैयारियाँ करनी पड़ती हैं, बताओ ।**

३. **भारत के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की जानकारी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) अंबा और अर्पण कहाँ जाना चाहते थे ?

(ख) मम्मी,पापा, अंबा और अर्पण सभी पठानकोट कैसे पहुँचे ?

(ग) खज्जियार को स्विट्‌जरलैंड का खिताब किसने दिया था ?

(घ) 'खज्जी नाग मंदिर' के बारे में क्या कहा जाता है ?

(ङ) 'खज्जियार' पाठ में कौन-कौन-से दर्शनीय स्थलों के नाम आए हैं ?

५. **निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर कहानी लेखन करो :**

घना जंगल............. शेर का राज.......... भोजन के लिए प्राणियों को भेजने का आदेश............ जानवरों द्‌वारा प्रतिदिन एक प्राणी भेजने का निर्णय............. खरगोश की बारी............... कुएँ में अपना प्रतिबिंब देखना............... युक्ति सूझना............... मनगढ़ंत कहानी सुनाना............ शेर का आना.............. प्रतिबिंब को अपना प्रतिद्‌वंदी समझना........... शेर की मृत्यु........... ।

६. **नीचे दिए गए 'प्रभावशाली विचार विमर्श' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **तुम्हारा मित्र आज टिफिन लाना भूल गया है । ऐसी स्थिति में तुम क्या करना चाहोगे, बताओ ।**

● पढ़ो, समझो और करो :

१६. स्काउट-गाइड

क्रिसमस की छुट्टियाँ थीं । राजेश अपनी मौसी के घर आया था । मौसी का घर सड़क के किनारे था । मौसी का लड़का प्रथमेश आठवीं का छात्र था । वे दोनों आपस में अपने-अपने विद्यालय की बातें कर रहे थे कि अचानक गाड़ी के जोरदार ब्रेक लगने और चीख की आवाज सुनाई दी । देखते-ही-देखते लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई । प्रथमेश और राजेश भी दुर्घटना स्थल की ओर दौड़ पड़े । उन्होंने देखा कि एक लड़का सड़क पर खून से लथपथ पड़ा कराह रहा था । प्रथमेश आगे बढ़कर एक-दो लोगों की मदद से उसे उठाकर अपने घर ले आया । उसके घाव साफ किए । प्रथमोपचार करके उसे अस्पताल पहुँचाया । तुरंत लड़के के घरवालों को सूचना पहुँचाई । राजेश यह सब आश्चर्यचकित होकर देख रहा था । घर लौटते समय उसने उत्सुकता से पूछा, "भैया ! आपने इतनी अच्छी तरह से उस लड़के का उपचार किया । आपको खून देखकर डर नहीं लगा क्या ? आपने यह सब कहाँ सीखा ?" प्रथमेश बोला, "डर कैसा ? हमारे विद्यालय में स्काउट एवं गाइड का पथक चलता है । इस पथक में जरूरतमंदों की मदद करना, असहायों की सहायता करना, घायलों का प्रथमोपचार करना सिखाया जाता है ।"

राजेश की उत्सुकता बढ़ गई थी । बोला, "भैया मुझे भी इस पथक के बारे में बताइए न !" प्रथमेश बोला, "स्काउट और गाइड एक आंदोलन की तरह है । पाँचवीं कक्षा या १० वर्ष की उम्र से इसके पथकों की शुरुआत होती है । लड़कों के लिए स्काउट और लड़कियों के लिए गाइड के पथक होते हैं । हालाँकि कब और बुलबुल का प्रारंभ इससे पहले ही हो जाता है । यह एक प्रकार से वैश्विक शैक्षणिक आंदोलन है ।" राजेश बोला, "भैया मेरी उत्सुकता बढ़ती जा रही है । स्काउट एवं गाइड के बारे में और अधिक बताइए न !"

"इन पथकों के माध्यम से अच्छे संस्कार डालने और भविष्य में चरित्र संपन्न उत्तम नागरिक गढ़ने का प्रयत्न किया जाता है ।" प्रथमेश ने कहा ।

राजेश बोला, "मैं ठीक से समझा नहीं ।" प्रथमेश ने कहा, "इसमें खेल, गीत, कहानी-कथा,

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का एकल मुखर वाचन एवं सामूहिक मौन वाचन कराएँ । किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन करवाएँ । प्रथमोपचार पर चर्चा करें/कराएँ । स्काउट/गाइड के विद्यार्थियों का साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्न तैयार कराएँ ।

जीवनोपयोगी बातें अनेक आनंददायी माध्यमों से सिखाई जाती हैं । सेवा, परोपकार 'सादा जीवन-उच्च विचार' इसके मूल गुण हैं ।" इतना कहकर उसने राजेश की तरफ देखा । उसे लगा, राजेश की उत्सुकता अभी शांत नहीं हुई है । बोला,"स्काउट-गाइड विश्वसनीय, निष्ठावान, विनयशील, धैर्यवान होते हैं । वे अनुशासनप्रिय और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करने में मदद करते हैं और हाँ, जानते हो इस आंदोलन का ध्येय है- 'तैयार रहो' ।" राजेश बोला, "क्या मतलब भैया ?"

प्रथमेश ने कहा, "शरीर से मजबूत, मन से जागरूक व नीति से पवित्र रहकर दूसरों की मदद के लिए सदा तैयार रहने का प्रयत्न करना ही इसका उद्‌देश्य है ।" राजेश हँसते हुए बोला, "अच्छा ! इसीलिए आप दौड़कर मदद करने पहुँच गए ।" प्रथमेश अपनी धुन में बोलता जा रहा था, "इसका ध्वज गहरे नीले रंग का होता है जिसके मध्यभाग में पीले रंग में त्रिदल कमल एवं कमल के मध्यभाग में अशोक चक्र होता है । इस ध्वज के नीचे ईश्वर एवं स्वदेश के प्रति कर्तव्य करने, दूसरों के काम आने, स्काउट-गाइड के नियमों को आचरण में लाने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है ।"

राजेश ने कहा, "फिर तो इस झंडे को सलामी भी देते होंगे ।"

प्रथमेश ने स्वीकृति में सिर हिलाया और बोला, "दाएँ हाथ के बीच की तीन उंगलियों द्‌वारा सलामी देते हैं । 'भारत स्काउट-गाइड झंडा ऊँचा सदा रहेगा' तथा 'दया कर दान भक्ति का' प्रार्थना की जाती है ।"

राजेश बोल पड़ा, "वाह भैया ! अब तो मेरी इच्छा स्काउट बनने की हो रही है ।" प्रथमेश बोला, "सिर्फ स्काउट या गाइड बनना काफी नहीं है । इसके मानक चिह्नों को समझना, प्रत्येक दिन समाज में सबकी मदद करने के लिए रोज एक सुकृत्य अर्थात अच्छा काम भी करना होता है ।"

राजेश बोला, "भैया, मैं समझ गया कि सफल स्काउट-गाइड बनने के लिए हमेशा देश और समाज की मदद के लिए तैयार रहना चाहिए ।"

प्रथमेश बोला, "बिलकुल सही । अब समझ में आ गया तुम्हारे । अगली बार जब आऊँगा तो बहुत सारे सांकेतिक चिह्नों पर चर्चा करेंगे ।"

राजेश बोल उठा, "भैया ! अभी तो पेट में कुछ संकेत उठ रहे हैं । चलो खाना खाते हैं ।"

(दोनों हँस पड़े ।)

-ललिता गुलाटी

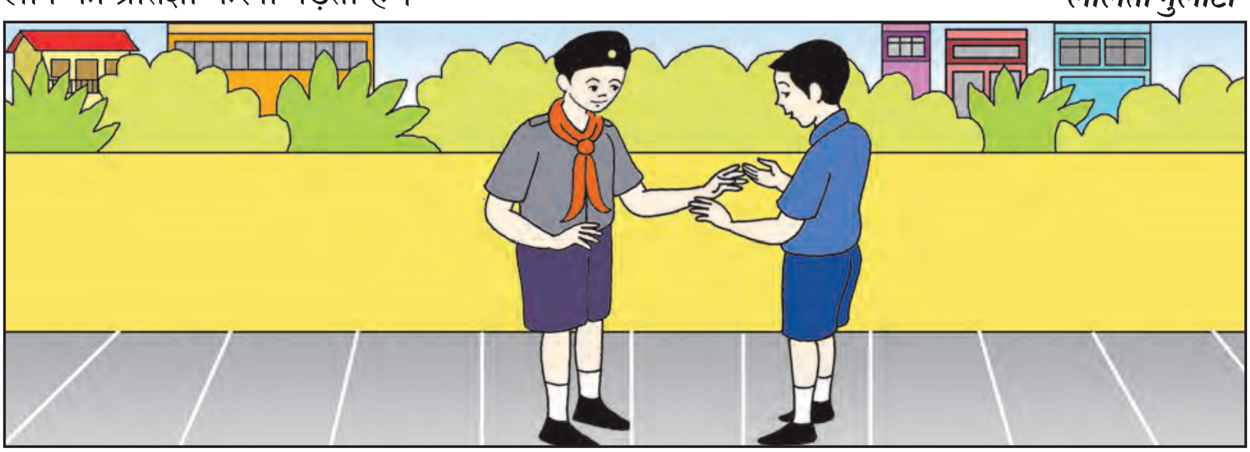

❑ स्काउट/गाइड की मुख्य बातों पर चर्चा करें । विद्‌यार्थियों को स्काउट/गाइड पथक में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करें । स्काउट/गाइड, पुलिस, पथ सुरक्षा दल के प्रमुख सांकेतिक चिह्नों पर चर्चा करें और इन चिह्नों को स्वाध्याय पुस्तिका में बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. रद्दी कागज से थैली बनाने की प्रक्रिया की जानकारी सुनो ।

२. प्रथमोपचार पर आठ से दस वाक्य बोलो ।

३. औषधीय गुणोंवाले वृक्षों के बारे में पढ़ो और ऐसे पाँच वृक्षों के चित्र और जानकारी अपनी कृति पुस्तिका में चिपकाओ ।

४. उत्तर लिखो :

(क) देखते ही देखते लोगों की भीड़ क्यों इकट्‌ठी हो गई ?

(ख) स्काउट एवं गाइड पथक में क्या-क्या सिखाया जाता है ?

(ग) स्काउट एवं गाइड पथक के मूल गुण कौन-कौन-से हैं ?

(घ) स्काउट एवं गाइड के ध्वज के नीचे कौन-सी प्रतिज्ञा करनी पड़ती है ?

(ङ) स्काउट या गाइड बनने के अतिरिक्त उन्हें और क्या करना होता है ?

५. निम्नलिखित लगभग समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों को पढ़ो समझो :

द्‌वीप = टापू	द्‌विप = हाथी	नित = हर दिन	नीत = लाया हुआ
सूची = विषयक्रम	सूचि = सूई	हल् = चिह्न	हल = खेत जोतने का औजार
बहू = पुत्रवधू	बहु = अधिक/बहुत	दिन = दिवस	दीन= गरीब
सुत = पुत्र	सूत = धागा	सुर = देवता	सूर = अंधा
तनु = दुबला-पतला	तनू = पुत्र	पानी = जल	पाणि = हाथ
मणि = रत्न	मणी = सर्प	शीत = ठंडा	शित= दुर्बल

६. नीचे दिए गए 'स्वास्थ्य' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :

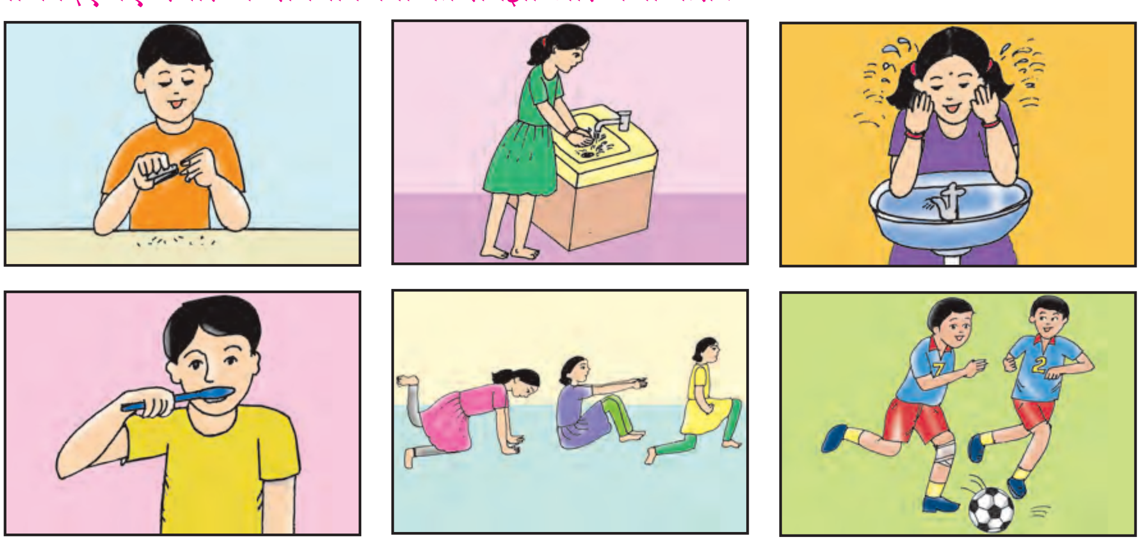

७. तुम्हारे पास चिक्की का एक पैकेट है । परिवार के किन सदस्यों को चिक्की देना चाहोगे और क्यों, बताओ ।

पुनरावर्तन–३

१. सीडी पर प्रयाणगीत सुनो ।

२. अब तक के अपने बचपन के बारे में बताओ ।

३. पत्रिका/समाचारपत्र से विज्ञान कथा पढ़ो ।

४. वक्तृत्व स्पर्धा में भाषण देने हेतु 'मेरी प्रिय पुस्तक' पर भाषण लिखो ।

५. कहावतों का पहला आधा हिस्सा गोल क्रमांक १ के खानों में तथा दूसरा आधा हिस्सा गोल क्रमांक २ के खानों में दिया है । दोनों गोलों से एक–एक हिस्सा लेकर अर्थपूर्ण कहावत तैयार करो और अपनी कॉपी में लिखो :

१.

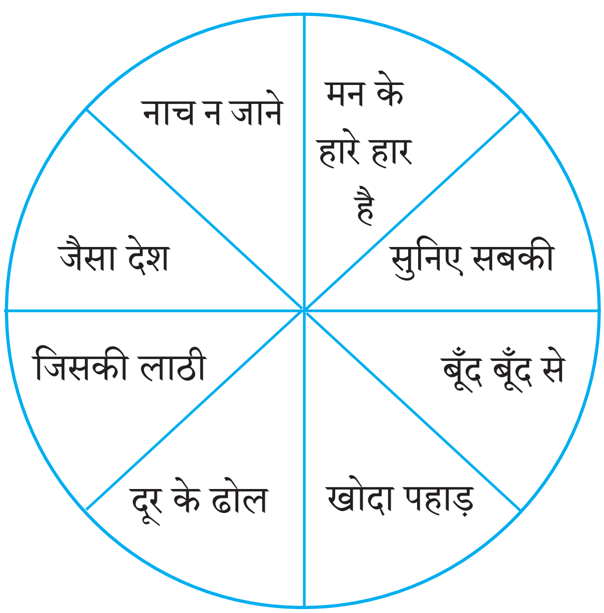

२.

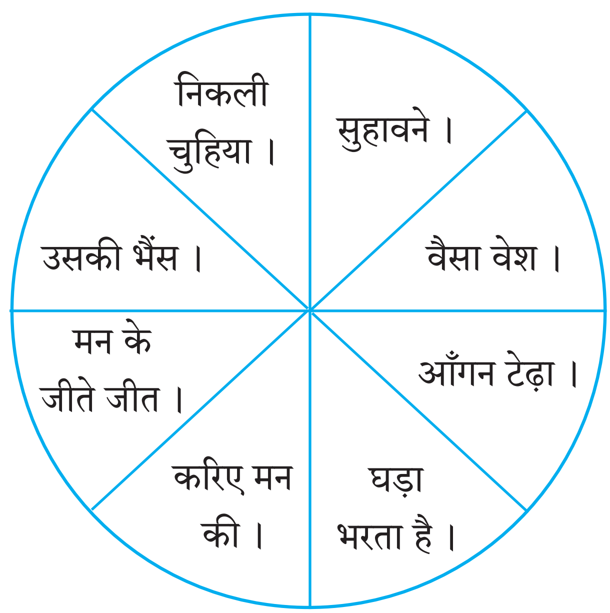

उपक्रम/प्रकल्प

विद्यार्थियों के कवि सम्मेलन में कविताएँ सुनो ।

तुमने अब तक कौन–कौन–से अच्छे काम किए हैं, बताओ ।

विद्‍यालय में लगे महान विभूतियों के चित्र देखो । उनके बारे में पुस्तकालय में जाकर पढ़ो ।

प्रत्येक पाठ में आए नए शब्द ढूँढ़ो और उन्हें वर्णमाला के क्रम से लिखो ।

पुनरावर्तन-४

१. किसी अंतरिक्ष यान के संदर्भ में जानकारी सुनो ।
२. अपने राज्य के किसी ऐतिहासिक स्थान संबंधी जानकारी बताओ ।
३. अपने राज्य के किसी एक अभयारण्य की जानकारी पढ़ो ।
४. अपने दादा-दादी जी/ नाना-नानी जी की जानकारी लिखो ।
५. नीचे 'अ' और 'ब' स्तंभ की चौखटों में मुहावरे तथा उनके अर्थ दिए हैं । 'अ' और 'ब' स्तंभ की उचित जोड़ियाँ मिलाओ । इन मुहावरों का सार्थक वाक्यों में प्रयोग करो :

'अ' स्तंभ	'ब' स्तंभ
(क) हाथ बँटाना ।	अत्यधिक मान-सम्मान देना ।
(ख) गुस्सा पी जाना ।	थोड़े में अधिक कहना ।
(ग) कोल्हू का बैल बनना ।	तेजी से वृद्धि होना ।
(घ) दिन दूना रात चौगुना	क्रोधित होना ।
(ङ) सर आँखों पर बिठाना ।	विवशता से अत्यधिक परिश्रम करते रहना ।
(च) गागर में सागर भरना ।	सहयोग देना ।
(छ) आपे से बाहर होना ।	बहुत परिश्रम करना ।
(ज) आँखें खुलना ।	गुस्सा आने पर चुप रह जाना ।
	डर जाना ।
	वास्तविकता का ज्ञान होना ।

उपक्रम/प्रकल्प

अपने मित्रों से चुटकुले सुनो और सुनाओ ।	मोगली तथा इस तरह की अन्य कहानियाँ सुनाओ ।	प्रार्थना गीत खोजकर पढ़ो और उनका संकलन करो ।	अब तक पढ़े/देखे सांकेतिक चिह्न बनाकर उनके बारे में लिखो ।

चित्रकथा

✻ चित्रवाचन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ :

१

२

३

४

५

६

❑ ऊपर दिए गए चित्रों का क्रमानुसार ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराएँ । चित्र में कौन-कौन-सी घटनाएँ घटी होंगी, सोचने के लिए कहें । चित्रों एवं घटनाओं के आधार पर कहानी लिखने के लिए प्रेरित करें । कहानी को उचित शीर्षक देने के लिए कहें ।

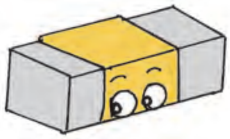

✻ शब्दार्थ ✻

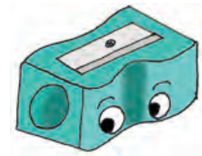

पहली इकाई

२. **पथ मेरा आलोकित कर दो :** आलोकित= प्रकाशित; नवल= नया, नवीन; रश्मि= किरण; उर= हृदय, तम= अँधेरा; विहग= पक्षी, निर्दिष्ट= तय किया हुआ; लक्ष्य= मंजिल ।

३. **असली गहने :** सुसज्जित= सज-धज; पुलकित= प्रसन्न; अधीरता= बेचैनी ।

६. **मेरा बचपन :** दीवान= मंत्री; सोहबत= संगत ।

८. **अपनापन :** दूभर= मुश्किल; बरही= जन्म के बाद बारहवें दिन का उत्सव; मशहूर= प्रसिद्‌ध; सुलह-सपाटी करवाना= समझौता करवाना ।

१२. **पंचपरमेश्वर :** खाला= मौसी; मिलकियत= संपत्ति; खातिरदारी= मान-सम्मान, आदर; ताहयात= जीवनभर; बदना= नियुक्त करना; धृष्टता= ढिठाई, निर्लज्जता ।

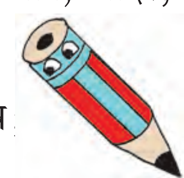

१३. **बूझो तो जानें :** साख= प्रतिष्ठा; भाती= अच्छा लगना; अदाएँ= हाव-भाव कुदरत= प्रकृति; नीर= पानी ।

१४. **महाराष्ट्र दिवस :** उत्थान= उन्नति; कर्मठ= मेहनती; व्याख्यान= भाषण ।

१५. **कूड़ा- करकट से बिजली :** अनुपात= तुलना, प्रमाण; किल्लत= कमी; सँजोना= सम्हालना ।

१६. **नाट्‌यकला :** आहार्य= ग्रहण किया हुआ; कायिक= शारीरिक; वाचिक= वाणी से ।

दूसरी इकाई

२. **रिश्ता-नाता :** भ्राता= भाई; वत्सल= दयालु, स्नेहवान; उलीचें= फैलाएँ, हाथ से पानी उछालकर फेंकना; जामाता= दामाद ।

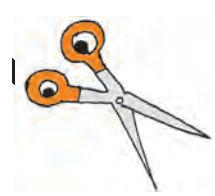

४. **क्या तुम जानते हो :** आविष्कार= किसी नई वस्तु/बात को ढूँढ़ निकालना ।

११. **गुनगुनाते चलो :** सौरभ= सुगंध; पतवार= नाव खेने का साधन, चप्पू ।

१२. **अद्‌भुत वीरांगना :** धाय= धात्री, दाई, दूसरे के बच्चे को पालनेवाली स्त्री; किंकर्तव्यविमूढ़= भौंचक रहना, जिसे कुछ न सूझे; षड्‌यंत्र= भीतरी चाल, गुप्त रूप से किसी के विरुद्‌ध किया गया कार्य; बुत बनना= मूर्ति के समान शांत और मौन होना ।

१४. **कला का सम्मान :** प्रशंसा= बड़ाई; झिझकना= संकोच करना ।

१५. **खज्जियार- भारत का स्विट्‌जरलैंड :** वादी= पहाड़ियों से घिरी समतल भूमि; नजारा= दृश्य; खिताब= उपाधि; हरीतिमा= हरियाली ।

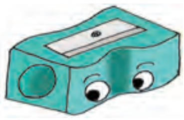

❋ मुहावरे ❋

कलेजा धक-धक करना= घबराहट होना; गला भर आना= रुलाई आ जाना, आवाज रुँध जाना; तिकड़म लगाना= युक्ति से काम करना; तू-तू-मैं-मैं करना= झगड़ा करना; नानी याद आना= होश ठिकाने आ जाना; नौ-दो-ग्यारह होना= भाग जाना; फूट-फूटकर रोना= अनियंत्रित होकर रोना; फूले नहीं समाना= बहुत खुश होना; रास्ते का काँटा बनना= बाधा उपस्थित करना; शेखी बघारना= बढ़ा-चढ़ाकर स्वयं की बड़ाई करना; सिट्टी-पिट्टी गुम होना= डर जाना; होश उड़ जाना= घबराना।

❋ कहावतें ❋

जहाँ चाह वहाँ राह = इच्छा होने पर कार्य संभव हो जाते हैं; दूध का दूध पानी का पानी = निष्पक्ष न्याय।

❋ स्वाध्याय के उत्तर ❋

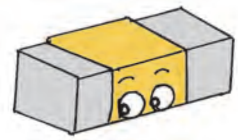

पुनरावर्तन-१, पृष्ठ ४१, प्र. ५ :

संज्ञा : सिपाही, राधा, व्यक्ति, लोग, गेहूँ, कपड़ा, चित्र, पत्र, आम, तेल, दही।

विशेषण : सुंदर, थोड़ा, कोई, वही, यही, बीस, तीन, पंद्रह, कई, नया, कुछ।

पुनरावर्तन-३, पृष्ठ ८४, प्र. ५ :

१. नाच न जाने आँगन टेढ़ा। २. मन के हारे हार है मन के जीते जीत। ३. सुनिए सबकी, करिए मन की। ४. बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। ५. खोदा पहाड़ निकली चुहिया। ६. दूर के ढोल सुहावने। ७. जिसकी लाठी उसकी भैंस। ८. जैसा देश वैसा वेश।

पुनरावर्तन-४, पृष्ठ ८५, प्र. ५ :

(क) सहयोग देना। (ख) गुस्सा आने पर चुप रह जाना। (ग) बहुत परिश्रम करना। (घ) तेजी से वृद्‌धि होना। (ङ) अत्यधिक मान-सम्मान देना। (च) थोड़े में अधिक कहना। (छ) क्रोधित होना। (ज) सही बात का पता चलना।

पृष्ठ क्र. ७३ का उत्तर = १. सीट २. हैंडल ३. ब्रेक्स ४. टायर ५. स्पोक ६. टायरट्यूब ७. पैडल ८. चेन ९. वॉल्व १०. गियर ११. ब्रेक लाइनर

❋❋❋

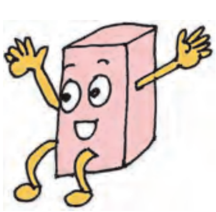

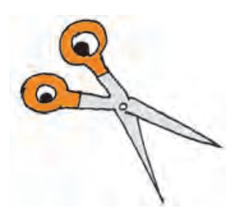

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

बालभारती इयत्ता ५ वी (हिंदी)

₹ 40.00